पिता-पुत्र



तुर्गनेव

पिता पुत्र

(उपन्यास)

लेखक:

तुर्गनेव

प्रभात प्रकाशन

प्रथम बार: १९५४
मूल्य चार रुपया

अनुवादक:
राजनाथ एम० ए०

प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन मथुरा।
मुद्रक: साधन प्रेस, मथुरा।

पिता पुत्र

पिता-पुत्र

१

"क्यों, प्योतर ? वे लोग अभी तक दिखाई नहीं दिए ?"

२० मई, सन् १८५९ ईसवी को, क नाम की बड़ी सड़क पर स्थित, एक छोटी सी देहाती सराय के दरवाजे की सीढ़ियों पर उतरते हुए, नंगे सिर, धूल धूसरित कोट और चारखाने की पतलून पहने लगभग चालीस वर्ष के एक संभ्रान्त व्यक्ति ने अपने नौकर से पूछा। प्योतर भरे गालों, सफेदी लिए हुए ठुड्डी और छोटी छोटी धुंधली आँखों वाला एक नौजवान था।

उसके भली प्रकार जमाए हुए धारीदार चमकीले बालों वाले सिर से लेकर, कानों में लटकते हुये आसमानी रंग के कुंडल आदि सभी वस्तुएँ उसके विनम्र व्यवहार का परिचय दे रही थीं और यह बता रही थीं कि वह आधुनिक फैशन और नई रोशनी का नवयुवक है। उसने निर्भयतापूर्वक सड़क की ओर दूर तक दृष्टि दौड़ाते हुए उत्तर दिया—

"नहीं हुजूर, अभी तो नहीं दिखाई दिए।"

"नहीं दिखाई दिए ?" मालिक ने फिर पूछा।

"नहीं हुजूर।" नौकर ने दुहराया।

उस व्यक्ति ने गहरी सांस ली और एक छोटी सी बेंच पर बैठ गया। जब तक कि वह पैर मोड़े हुए बैठा हुआ चिन्ता में निमग्न चारों ओर देख रहा है, तब तक अच्छा हो कि पाठकों को उसका परिचय दे दिया जाय।

उसका नाम निकोलाई पेट्रोविच किरसानोव था। इस सराय से लगभग पन्द्रह वर्स्ट* की दूरी पर उसकी एक दो सौ प्राणियों वाली

*एक वर्स्ट लगभग पौन मील के बराबर होता है।

अच्छी खासी बड़ी जायदाद थी। जब से उसने अपने किसानों को भूमिधर के अधिकार देकर, अपनी दो सौ देसिआतिनी* लम्बी चौड़ी जमीन को एक विशाल 'फार्म' का रूप दे दिया था, वह इसे 'दो सौ प्राणियों की जायदाद' कहना अधिक पसन्द करता था। उसका पिता सन् १८१२ ई० के युद्ध में सक्रिय भाग लेने वाला एक फौजी जनरल था जिसने अपना सारा जीवन अहर्निश सैनिक सेवा में व्यस्त रहते हुए व्यतीत किया था। वह उजड्ड, बिना पढ़ा लिखा परन्तु अच्छे स्व... का धनी था। पहले उसने एक 'ब्रिगेड' की कमान सम्हाली ... एक पूरे 'डिवीजन' की। उसकी नियुक्ति हमेशा सूबों में ही होती थी, जहाँ अपने विशिष्ट पद के कारण वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता था। अपने भाई पावेल की तरह, जिसके बारे में आगे चलकर बताया जायगा, निकोलाई पेट्रोविच भी दक्षिणी रूस में पैदा हुआ था। चौदह वर्ष की अवस्था तक उसने शेखीखोर परन्तु विनम्र व चापलूस सहायक अफसरों तथा अन्य सैनिकों से घिरे रह कर, सस्ते मास्टरों से घर पर ही शिक्षा पाई थी। उसकी माँ क्येलियाजिन परिवार की महिला थी। बचपन में उसे एगाथी कहते थे। जब वह जनरल की पत्नी हो गई तो उसे आगाफोक्लेया कुज्मिनश्ना किरसानोवा कहा जाने लगा था। वह उन उदार सैनिक स्त्रियों में से थी जो अपने पति सम्बन्धी और सरकारी मामलों की बागडोर अपने हाथ में रखती हैं। वह अलंकृत सुन्दर टोपी और सुन्दर रेशमी गाउन पहनती थी। गिर्जे में वह हमेशा सबसे आगे सलीब के पास मौजूद रहती थी। वह बातून थी और जोर से बोलती थी। वह सुबह अपने बच्चों को अपना हाथ चूमने देती और रात को उन्हें आशीर्वाद देती थी। इस प्रकार उसका समय आनन्द से व्यतीत हो रहा था। एक फौजी जनरल का पुत्र होने के कारण, निकोलाई पेट्रोवि... के लिए भी, जिसमें साहस की अत्यधिक कमी थी और जिसे इस कारण 'भीरु हृदय' कहा जाता था, अपने बड़े भाई पावेल की तरह सैनिक पेशा ही चुना गया। परन्तु जिस दिन सेना में उसके कमीशन

*देसिआतिनी लगभग तीन एकड़ या १४५२० वर्ग गज के बराबर होता है।

प्राप्त होने की खबर मिली उसी दिन उसकी एक टांग टूट गई और दो महीने तक बिस्तर में पड़े रहने के उपरान्त जीवन भर के लिए वह एक पैर से थोड़ा सा लंगड़ा हो गया। उसके पिता ने निराश होकर उसके लिए सिविल-सर्विस का मार्ग चुना। जैसे ही वह अठारह वर्ष का हुआ उसे सेन्ट पीटर्सबर्ग लाकर युनिवर्सिटी में दाखिल करा दिया गया। इसी समय के लगभग उसका भाई सन्तरियों की एक टुकड़ी का अफसर बना। दोनों भाई मामा इलिया कोल्याजिन की देखरेख में जो एक बड़ा सैनिक अफसर था, एक साथ रहने लगे। इतना प्रबन्ध करके निकोलाई का पिता अपने डिविजन में वापस आकर सपत्नीक रहने लगा। वहाँ से कभी कभी वह चार तह किए हुए बादामी कागज पर खत भेजा करता जिस पर नीचे एक क्लर्क की सी सुस्पष्ट लिखावट में बड़ी चमक-दमक के साथ टेढ़े मेढ़े अक्षरों में लिखा रहता:—"प्योतर किरसानोव, मेजर जनरल।" सन् १८३५ में निकोलाई पेट्रोविच को युनिवर्सिटी से सम्मान सहित ग्रेजुएट की डिग्री मिली। दुर्भाग्यवश उसी साल एक घटना के कारण जनरल किरसानोव को अपने पद से रिटायर कर दिया गया और वह अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए सेन्ट पीटर्सबर्ग चला गया। वह अभी तावरीशेस्की बाग के निकट एक मकान लेकर इंग्लिश क्लब का मेम्बर बना ही था कि एक दिन अचानक उसका देहान्त हो गया। उसकी मृत्यु के कुछ ही समय उपरान्त अगाफोक्लेया कुजिमनश्ना भी अपने पति से मिलने स्वर्ग चली गई क्योंकि राजधानी का एकाकी और शिथिल जीवन उसके अनुकूल सिद्ध नहीं हुआ। एकाकी जीवन में इस नीरसता का भार सहन करना उसके लिए दूभर हो उठा था। इसी समय अपने माता पिता के जीवन काल में ही उनकी आशा के विपरीत निकोलाई पेट्रोविच अपने पहले मकान मालिक प्रिपोलोवेंस्की की लड़की से प्रेम करने लगा था। प्रिपोलोवेन्स्की तत्कालीन रूसी सरकार का एक नागरिक पदाधिकारी था तथा वह प्रगतिशील विचारों की एक सुन्दर लड़की थी। वह 'साइन्स' नामक पत्रिका में छपे हुए गम्भीर लेखों को पढ़ा करती थी। माता पिता की मृत्यु की शोक-अवधि के समाप्त होते ही निकोलाई ने उससे शादी

करली और प्रान्तीय सरकार की मिनिस्टरी में, अपने पिता के प्रभाव से प्राप्त, नौकरी को छोड़ कर चल दिया। पहले उसने कुछ दिन फोरेस्ट्री इन्स्टीट्यूट (वन सम्बन्धी) के पास एक छोटे से बंगले में अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ काटे। उसके बाद यह युगल-जोड़ी कुछ समय तक एक छोटे से कस्बे में एक स्वच्छ सायबान और ठण्डे कमरे वाले मकान में जाकर रही। और अंत में देहात चले गए और वहीं स्थायी रूप से रहने लगे। यहीं कुछ समय बाद उनके आरकेडी नामक एक पुत्र पैदा हुआ। यहाँ इस दम्पति ने पूर्णतः सुख और शान्ति के साथ, बिना किसी दुर्घटना के अपना जीवन व्यतीत किया। दोनों एक दूसरे से कभी भी अलग नहीं होते थे। एक साथ पढ़ते, साथ ही प्यानो बजाते और स्वर में स्वर मिलाकर गाते। पत्नी मुर्गियों की देखभाल करती और बगीचे के फूलों को संवारती। पति कभी कभी शिकार के लिये जाता और जमींदारी के छोटे मोटे काम सम्हाला करता। इस प्रेमसिक्त, शान्त वातावरण में आरकेडी बड़ा होता गया। दस वर्ष सुखदायक स्वप्न के बीत गए। १८४७ में अचानक किरसानोव की पत्नी का देहान्त हो गया। इस चोट ने किरसानोव को तोड़ दिया। कुछ ही हफ्तों में उसके बाल सफेद हो गए। अपनी व्यथा को शान्त करने के लिए वह विदेश रवाना हुआ परन्तु इसी समय १८४८ का वर्ष* उसके इस प्रोग्राम में बाधा स्वरूप आ उपस्थित हुआ। मजबूर होकर उसे स्वदेश लौटना पड़ा और बहुत दिनों तक आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने के उपरांत उसने अपनी जमींदारी को सुधारने की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया। १८५५ में वह अपने पुत्र को सेन्ट पीटर्सबर्ग की युनिवर्सिटी में दाखिल कराने ले गया जहाँ वह पुत्र के साथ तीन साल तक रहा। वहाँ रहते हुए वह शायद ही कभी बाहर घूमने निकला हो। वह सदैव आरकेडी के छोटे दोस्तों के साथ आत्मीयता बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता था। पिछले जाड़ों में वह पुत्र के साथ रहने के लिए नहीं जा सका। इसलिए हम १८५९ के मई महीने में उसे वहाँ देख रहे हैं। इस समय तक उसके

*इस वर्ष फ्रांस में पुनः क्रान्ति हुई।

बाल बिल्कुल सफेद हो चुके हैं। शरीर मोटा हो गया है। कमर थोड़ी सी झुक गई है। वह यहाँ खड़ा हुआ अपने बेटे की प्रतीक्षा कर रहा है जिसने डिग्री प्राप्त की है, जैसे कि एक समय उसने भी प्राप्त की थी।

नौकर, मालिक की मर्यादा का ध्यान कर या शायद उसकी निगाह बचाने के लिए दरवाजे के बाहर चला गया और अपना पाइप सुलगा कर पीने लगा। निकोलाई पेट्रोविच, वहीं सिर झुकाए बैठा हुआ जीर्ण शीर्ण सीढ़ियों को घूरता रहा। एक मुर्गी का बड़ा चितकबरा बच्चा, गर्व के साथ अपने पैरों को पटपटाता हुआ सायबान की सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। एक गन्दी और तुनुकमिजाज बिल्ली घात लगाए उसे क्रूर दृष्टि से घूर रही थी। धूप बहुत तेज थी। गलियारे के धूमिल साए से ताजा राई की रोटी की गन्ध आ रही थी। निकोलाई पेट्रोविच गम्भीर विचार में डूब गया। "मेरा बेटा · एक ग्रेजुएट···आरकाशा···" यही विचार और शब्द उसके दिमाग में बार बार आ रहे थे। उसने इन विचारों से छुटकारा पाने के लिए अपनी विचार-धारा को दूसरी ओर मोड़ने का प्रयत्न किया लेकिन घूम फिरकर पुनः वे ही विचार उसके दिमाग में चक्कर काटने लगते। अन्ततः उसने अपनी स्वर्गीय पत्नी के विषय में सोचा····"वह यह दिन देखने के लिए जीवित नहीं रही।" वह भारी मन से फुसफुसाया।···एक मोटा ताजा कबूतर सड़क पर उतरा और कुए के पास भरे हुए एक गड्ढे में पानी पीने के लिए बढ़ा। निकोलाई पेट्रोविच तन्मय होकर इस दृश्य को देख रहा था कि उसी समय उसके कानों में पास आते हुए पहियों की आवाज आई। "ऐसा लगता है कि वे लोग आ रहे हैं।" नौकर ने दरवाजे से भीतर आते हुए कहा। निकोलाई पेट्रोविच उछल कर खड़ा हो गया और आँखें फाड़ फाड़ कर सड़क की ओर देखने लगा। आगे पीछे जुते हुए तीन घोड़ों से खींची जाने वाली एक गाड़ी दिखाई दी। उसे युनिवर्सिटी की नीले फीते वाली टोपी और एक चिर परिचित प्रिय मुख की झलक दीख पड़ी...।

"आरकाशा ! आरकाशा !!" किरसानोव चिल्लाया और हाथ हिलाता हुआ गाड़ी की ओर दौड़ने लगा''कुछ ही क्षण उपरान्त उसके होंठ उस नौजवान ग्रेजुएट के दाढ़ी मूछ रहित, धूल से भरे और धूप से मुरझाए हुए चेहरे पर चिपके हुए थे।

२

"पहले मुझे अपने को साफ तो कर लेने दीजिए, पिताजी !" आरकेडी ने कहा। यात्रा की थकान से उसकी आवाज कुछ भारी हो गई थी। परन्तु उसमें बच्चों की आवाज का सा सुरीलापन और ताजगी थी, जैसे ही उसने अपने पिता के प्रेम का प्रत्युत्तर देते हुए कहा—"मैं आपको धूल से भर दूँगा।"

"ठीक है, ठीक है" निकोलाई पेट्रोविच ने विभोर होकर स्नेह-सिक्त भाव से मुस्कराते हुए अपने तथा अपने बेटे के कॉलरों को हाथ से झाड़ते हुए कहा। "मुझे जरा अपने को देखने तो दो" पीछे हटते हुए उसने कहा। फिर वह तेजी से सराय की ओर बढ़ा और बराबर कहता रहा—"इधर से, इधर होकर, घोड़े शीघ्र ही तैयार हो जायंगे।"

निकोलाई पेट्रोविच अपने पुत्र से भी अधिक उत्तेजित हो रहा था। वह कुछ व्यग्र और घबड़ाया हुआ सा दिखाई दे रहा था। आरकेडी ने उसे टोकते हुए कहा—

"पिताजी ! मैं आपका अपने एक अभिन्न मित्र से परिचय कराना चाहता हूँ— बजारोव से। वही जिसके बारे में मैं अक्सर आपको लिखा करता था। इन्होंने बड़ी कृपा कर कुछ दिनों के लिए हमारा आतिथ्य ग्रहण करना स्वीकार किया है।"

निकोलाई पेट्रोविच बड़ी तेजी से मुड़ा और यात्रा का फुंदनेदार कोट पहने हुये एक लम्बे व्यक्ति की ओर बढ़ा जो अभी अभी गाड़ी से नीचे उतरा था। उसने बड़ी आत्मीयतापूर्वक उसका बिना दस्तानों वाला लाल हाथ अपने हाथों में पकड़ कर दबाया। परन्तु जितनी शीघ्रता

से निकोलाई पेट्रोविच ने मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया था उतनी ही शीघ्रता से बजारोव ने अपना हाथ नहीं बढ़ाया।

"मुझे वास्तव में बड़ी खुशी हुई" वह बोला—"मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ कि आपने हमारे यहाँ आने की कृपा की। मुझे आशा है··· मैं आपका नाम और वंश पूछ सकता हूँ।"

"इवजिनी वैसिलिच।" बजारोव ने मन्द परन्तु पौरुषपूर्ण भारी आवाज में उत्तर दिया और अपने कोट का कालर मोड़ कर निकोलाई पेट्रोविच के सामने अपना सम्पूर्ण चेहरा प्रकट कर दिया। वह लम्बे और पतले कद का युवक था। उसका ललाट विस्तृत, नाक जड़ की तरफ कुछ कुछ चपटी तथा आगे की ओर ऊँची उठी हुई, आँखें बड़ी बड़ी और भूरी, मूछें नीचे की तरफ झुकी हुईं और खुरदरी थीं। चेहरे पर शान्त और गम्भीर मुस्कराहट थी जो उसके दृढ़ आत्मविश्वास और विद्वत्ता की परिचायक थी।

"मैं आशा करता हूँ, मेरे प्यारे इवजिनी वैसीलिच, कि आपको हमारा साथ नीरस नहीं प्रतीत होगा" निकोलाई पेट्रोविच ने कहा।

बजारोव के पतले होठ कुछ हिले परन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया। केवल अपनी टोपी ऊपर उठा दी। उसके भूरे बाल जो लम्बे और घने थे, उसके सिर की विशालता को छिपाने में असमर्थ थे।

"तुम्हारी क्या राय है आरकेडी," निकोलाई पेट्रोविच ने अपने बेटे की ओर मुखातिब होकर कहना जारी रखा—"क्या अभी घोड़े जुतवा दिए जांय या तुम कुछ विश्राम करना चाहते हो?"

"हम घर पर चल कर ही आराम करेंगे, पिताजी! घोड़े जुतवा दीजिए।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा" उसके पिता ने सहमति प्रकट करते हुए नौकर से कहा—"ए प्योतर, सुन रहे हो, भले आदमी, जरा तेजी से काम लो। जल्दी करो।"

चतुर और अभ्यस्त तथा आधुनिक शिष्टाचार से परिचित नौकर ने अपने नए मालिक का हाथ नहीं चूमा। केवल दूर से झुक कर सलाम

कर लिया और एक बार फिर दरवाजे के बाहर गायब हो गया।

"मैं तो अपनी टमटम में आया था पर तुम्हारी बग्घी के लिए तीन डाक के घोड़ों का प्रबन्ध हो जायगा" निकोलाई पेट्रोविच ने व्यग्रतापूर्वक कहा। इसी बीच में सराय के मालिक की बीबी एक लोहे के बर्तन में पानी ले आई थी जिसमें से आरकेडी ने पेट भर कर पिया और बजारोव ने अपना पाइप सुलगाया। निकोलाई पेट्रोविच बग्घी के कोचवान के पास पहुँचा जो घोड़ों को खोल रहा था और देखकर बोला—

"यह तो सिर्फ दो सीटों वाली बग्घी है। मैं नहीं जानता तुम्हारे मित्र महोदय कैसे ···"

"वह बग्घी में चलेगा" आरकेडी ने बीच में ही धीमी आवाज में टोकते हुए कहा—"आपको इसके साथ तकल्लुफ करने की जरूरत नहीं है। वह बहुत अच्छा आदमी है--बिल्कुल सीधा सच्चा···आप खुद ही देखेंगे।"

निकोलाई पेट्रोविच का कोचवान घोड़े ले आया।

"ए दढ़ियल, तुम अपनी गाड़ी आगे बढ़ाओ!" बजारोव ने टमटम के कोचवान से कहा।

"सुनो, मित्या!" पास खड़े हुए उसके साथी ने कहा जो भेड़ की खाल के बने हुए कोट की जेब में हाथ घुसेड़े हुए था "तुमने सुना इन्होंने तुमसे क्या कहा -दढ़ियल- तुम बिल्कुल ऐसे ही हो।"

मित्या ने सिर्फ सिर हिला दिया और मचलते हुए घोड़ों की लगाम खींची।

"भले आदमियो, जरा तेजी से चलो, मुर्दापन छोड़ो," निकोलाई पेट्रोविच चिल्लाया "तुम्हें इनाम मिलेगा!"

कुछ ही मिनटों में घोड़े जोत दिए गए। बाप और बेटा बग्घी में बैठे। प्योतर ऊपर बक्स पर जा बैठा। बजारोव टमटम में चढ़ा और चमड़े की गद्दी में आराम से उठंग कर बैठ गया। दोनों गाड़ियाँ चल पड़ीं।

२

"अच्छा, तो तुमने डिग्री प्राप्त कर ली और अन्ततः घर वापस आ गए।" निकोलाई पेट्रोविच ने बारबार आरकेडी के कन्धों और घुटनों को थपथपाते हुए कहा–"आखिरकार तुम आ गए।"

"चाचा का क्या हाल है ? हैं तो खैरियत से न ?" आरकेडी ने पूछा। उसके मन में उल्लास-बच्चे का सा पवित्र उल्लास भर रहा था परन्तु वह इस भावुक वार्तालाप की धारा को सांसारिक ठोस वास्तविकता की ओर मोड़ने को उत्सुक था।

"वे ठीक हैं। वे मेरे साथ तुमसे मिलने के लिए आना चाहते थे परन्तु किसी वजह से उन्होंने अपना इरादा बदल दिया।"

"क्या तुम्हें बहुत देर तक इन्तजार करना पड़ा ?" आरकेडी ने पूछा।

"ओह ! लगभग पाँच घण्टे तक।"

"प्यारे पिताजी !"

आरकेडी ने भावातिरेक से अपने पिता की ओर घूम कर अत्यंत उल्लास से उसका गाल चूम लिया। निकोलाई पेट्रोविच के मुख पर स्निग्ध मुस्कान छा गई।

"मैंने तुम्हारे लिए एक बहुत सुन्दर घोड़ा लिया है।" उसने कहना शुरू किया–"तुम अभी घर चल कर उसे देखना। और तुम्हारे कमरे की दीवालों पर नया कागज चढ़ाया गया है।"

"बजारोव के लिए भी कोई कमरा है ?"

"हम उसके लिए भी एक कमरे का इन्तजाम कर देंगे। तुम चिंता मत करो।"

"उसके प्रति अच्छा व्यवहार करना, पिताजी ! मैं आपको बता नहीं सकता कि मेरे लिए उसकी मित्रता का कितना अधिक मूल्य है।"

"क्या तुम उसे बहुत दिनों से जानते हो ?"

"नहीं, बहुत ज्यादा दिनों से तो नहीं।"

"आह, नहीं तो मैं सोच रहा था कि पिछले जाड़ों में तो मैंने उसे नहीं देखा था। वह किस विषय में अधिक रुचि रखता है?"

"उसका प्रधान विषय प्रकृति-विज्ञान है। परन्तु उसे प्रत्येक विषय का ज्ञान है। वह अगले वर्ष डाक्टरेट की डिग्री लेना चाहता है।"

"ओह! तो वह चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन कर रहा है।" निकोलाई पेट्रोविच ने अपनी राय जाहिर की और खामोश हो गया। "प्योतर" उसने हाथ बाहर निकाल कर इशारा करते हुए कहा—"ये अपने किसान हैं न?"

प्योतर ने उधर देखा जिधर उसका मालिक इशारा कर रहा था। बहुत से छकड़े, जिनमें बिना लगाम के घोड़े जुते हुए थे, तेजी से एक सकरी पगडंडी पर चले जा रहे थे। हरेक छकड़े पर एक, या अधिक से अधिक दो किसान अपने भेड़ के चमड़े वाले कोटों को खोले हुए बैठे थे।

"हां, हुजूर! ये अपने ही किसान हैं।" प्योतर ने जवाब दिया।

"ये लोग किधर जा रहे हैं—शहर को?"

"मेरा भी ऐसा ही ख्याल है। बहुत मुमकिन है वे शराबखाने जा रहे हों," उसने अन्तिम वाक्य घृणा-व्यंजक भाव से कहा और अपनी बात की पुष्टि के लिए मुड़ कर कोचवान की ओर देखा। परन्तु कोचवान मूर्तिवत बैठा रहा। वह पुराने रूढ़िवादी विचारों का व्यक्ति था। आधुनिक विचारों के प्रति उसे कोई सहानुभूति नहीं थी।

"इस वर्ष इन किसानों ने मुझे बहुत तंग कर रखा है," निकोलाई पेट्रोविच अपने बेटे की ओर मुड़ कर कहता गया—"वे लोग अपना लगान ही अदा नहीं करते। इन लोगों के साथ क्या कार्यवाही की जाय; समझ में नहीं आता?"

"आप अपने किराए के मजदूरों से सन्तुष्ट हैं?"

"हाँ।" निकोलाई पेट्रोविच बड़बड़ाया—"मुसीबत यह है कि इन लोगों को उभाड़ा जा रहा है। अभी तक इन लोगों से ढंग से काम करना भी नहीं आता। वे खेती के सामान को खराब कर देते हैं।

हालाँकि वे जुताई का काम इतना बुरा नहीं करते। मेरा ख्याल है कि अन्त में सब ठीक हो जायगा। परन्तु अभी तो खेती में तुम्हारी रुचि है नहीं, क्यों? है?"

"यह बहुत बुरी बात है कि आपने अभी तक यहाँ कोई सायबान भी नहीं बनवाया।" आरकेडी ने पिछले प्रश्न को उड़ाते हुए पूछा।

"मैंने बरामदे की उत्तर दिशा में ऊपर एक बड़ा चँदोवा तनवा दिया है," निकोलाई पेट्रोविच ने कहा—"अब हम खुले में बैठ कर भोजन कर सकते हैं।"

"पर इससे तो मकान एक बंगले की तरह अधिक लगने लगा होगा? ···खैर, यह कोई बात नहीं है। अहा, यहाँ हवा तो बहुत अच्छी चलती है! इसकी गन्ध कितनी सुन्दर है। वास्तव में, मुझे यकीन नहीं होता कि संसार में और किसी भी स्थान पर इतनी सुगन्धित वायु चलती होगी। और आसमान भी······"

बोलते बोलते आरकेडी सहसा चुप हो गया और पीछे की ओर एक छिपी निगाह डालकर खामोश हो गया।

"दरअसल," निकोलाई पेट्रोविच बोला," तुम यहाँ पैदा हुए थे। यहाँ की हरेक चीज सुन्दर लगना तुम्हारे लिए स्वाभाविक है······"

"सच, पिताजी, इस बात से कोई भी फर्क नहीं पड़ता कि आदमी का जन्म कहाँ हुआ है।"

"फिर भी······"

"नहीं, इससे क़तई कोई फर्क नहीं पड़ता।"

निकोलाई पेट्रोविच ने तिरछी निगाहों से पुत्र के मुख की ओर देखा और फिर आधे वर्स्ट तक गाड़ी के आगे चले जाने तक उन दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई।

"मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने तुम्हें लिखा था या नहीं," निकोलाई पेट्रोविच ने कहना प्रारम्भ किया—"कि तुम्हारी बुढ़िया धाय इगोरोवना चल बसी।"

"क्या ? बेचारी बुढ़िया ! लेकिन प्रोकोफिच तो जिन्दा है ? है न ?"

"हाँ, और उसमें कोई भी अन्तर नहीं आया है। उसकी वही पुरानी बकने भकने की आदत बदस्तूर कायम है। वास्तव में, तुम्हें मैरिनो के वातावरण में विशेष अन्तर नहीं मिलेगा।"

"और तुम्हारा कारिन्दा भी वही पुराना है ?"

"हाँ, केवल मैंने यही एक परिवर्तन किया है। मैंने किसी भी स्वतन्त्र काश्तकार को अपनी नौकरी में न रखने का निश्चय कर लिया है। वे लोग जिन्हें मैं अपने घरेलू काम के लिए रखता था उन पर भी कोई जिम्मेदारी का काम नहीं डाल सकता।" (आरकेडी ने प्योतर की ओर इशारा किया) "हर रूप में स्वतन्त्र। इसको ऐसी बातें सुनाने में कोई हर्ज नहीं।" निकोलाई पेट्रोविच ने धीमी आवाज में कहा। "लेकिन फिर भी वह एक नौकर है। मेरा नया कारिन्दा एक शहर का आदमी है। ऐसा मालूम होता है कि वह अपना काम भली प्रकार जानता है। मैं उसे २५० रूबल सालाना दे रहा हूँ। लेकिन···" उसने अपने माथे और भौंह को रगड़ते हुए आगे कहा, जो सदैव उसकी अधीरता को प्रगट करने वाले लक्षण थे—"मैंने तुमसे अभी कहा कि मैरिनो में तुम्हें कोई परिवर्तन नहीं मिलेगा······पर यह बात सर्वांशतः सत्य नहीं है। मुझे तुमको पहले ही सावधान कर देना चाहिये, हालाँकि······"

वह कुछ देर के लिए हिचका फिर उसने फ्रांसीसी भाषा में कहना प्रारम्भ किया—

"सम्भव है एक कठोर नीतिज्ञ व्यक्ति मेरी इस बात को असंगत समझे; लेकिन, पहले तो यह बात गुप्त नहीं रखी जा सकती, और दूसरे, तुम जानते हो कि इस विषय में हमेशा मेरे विचार अपने व्यक्तिगत और स्वतंत्र रहे हैं कि पिता और पुत्र के पारस्परिक सम्बन्ध कैसे रहने चाहिए। फिर भी, तुमको पूरा अधिकार है कि तुम मेरी बातों से अपनी पूर्ण असहमति प्रकट कर सको। मेरी इस अवस्था में, तुम जानते हो······ संक्षेप में, यह···लड़की, जिसके विषय में बहुत सम्भव है तुम पहले ही सुन चुके होगे······"

"फेनिच्का ?" आरकेडी ने लापरवाही से पूछा।

निकोलाई पेट्रोविच का चेहरा लाल हो गया।

"महरबानी करके, उसका नाम जोर से मत लो···अच्छा, हाँ–वह अब मेरे साथ रह रही है। मैंने उसे घर में रख लिया है······उसमें दो छोटे कमरे थे। खैर, वह सब बदला जा सकता है।"

"भगवान के लिए! पिताजी, ऐसा क्यों करना पड़ेगा ?"

"तुम्हारा मित्र हम लोगों के साथ ठहरेगा···यह जरा भद्दा सा लगता है······"

"जहाँ तक कि बजारोव का सम्बन्ध है, महरबानी करके उसके लिए आप परेशान मत होइए। वह इन सब बातों से ऊपर है।"

"फिर भी तुम्हारे लिए क्या इन्तजाम किया जाय," निकोलाई पेट्रोविच कहता गया—"वह छोटा बगल का हिस्सा तो ठीक जगह नहीं है···वह तो सबसे बुरा हिस्सा है।"

"ओह, पिताजी," आरकेडी ने विरोध करते हुए कहा–"कोई भी आदमी यह समझेगा कि आप माफी मांग रहे हैं। आपको अपनी इस बात के लिये लज्जित होना चाहिये।"

"हाँ, वास्तव में मुझे लज्जित होना चाहिए।" निकोलाई पेट्रोविच ने जवाब दिया और उसका चेहरा और अधिक लाल हो उठा।

"छोड़िए भी इन बातों को,पिताजी, आप कैसी बातें कर रहे हैं।" आरकेडी ने कहा और पिता के प्रति एक विशेष समादर और स्नेह से मुस्करा उठा—"किस बात के लिए माफी मांग रहे हैं।" उसने सोचा और उसके हृदय में अपने इस कोमल-हृदय पिता के लिए अत्यधिक कोमलता के भाव, जिसमें अपने प्रति एक छिपी हुई उच्चता का भाव भी भरा हुआ था, प्रकट हुए। "क्या बेवकूफी है।" उसने अनिच्छापूर्वक अपनी बढ़ी हुई अवस्था और स्वच्छन्दता का सहारा-सा लेते हुए दुहराया।

निकोलाई पेट्रोविच ने अपनी उंगलियों की सन्धि में से अपने पुत्र की ओर छिपी निगाह से देखा और अपने माथे को उंगलियों से

बिगड़ने लगा। उसके हृदय पर मर्मान्तिक चोट पहुँची। परन्तु उसने शीघ्र ही अपने को सम्हाल लिया।

"यहाँ से हमारे खेत प्रारम्भ हो जाते हैं।" उसने लम्बी खामोशी के बाद कहा।

"और यह सामने का जंगल भी, मैं समझता हूँ, अपना ही है?" आरकेडी ने पूछा।

"हाँ, लेकिन मैंने इसे बेच दिया है। इस वर्ष यह काट डाला जायगा।"

"आपने उसे बेच क्यों डाला?"

"मुझे पैसों की जरूरत थी, इसके अलावा इस जमीन को किसानों को दे दिया जायगा।"

"जो आपको लगान भी नहीं देंगे, उन्हें?"

"यह उनका अपना दृष्टिकोण है, फिर भी, वे कभी न कभी तो अवश्य ही देंगे।"

"यह जंगल बेचने का काम बहुत बुरा हुआ" आरकेडी ने कहा और अपने चारों ओर देखने लगा।

देहात के जिस भाग में होकर ये लोग सफर कर रहे थे उसे दर्शनीय नहीं कहा जा सकता। क्षितिज तक खेतों की एक लम्बी कतार चली गई थी। कहीं नीचे होने के कारण वे नजरों से ओझल हो जाते और आगे चल कर पुनः ऊपर उठे हुए दिखाई देने लगते। कहीं कहीं बीच में जंगली वृक्षों की पंक्तियाँ और छोटे छोटे छिछले नालों के किनारे उगी हुई झाड़ियों के समूह दिखाई दे रहे थे। इन झाड़ियों को देख कर कैथेराइन महान के दिनों की पैमायश के नक्शे याद आ जाते थे। साथ ही वे लोग टेढ़े मेढ़े और कटे फटे किनारों वाले नालों, टूटी हुई दीवालों वाले तालाबों, नीची फूस की छतों वाली बिखरी हुई झोपड़ियों, जिनके छप्पर टूटे हुए और झरोखेदार थे और जिनमें अंधेरा छाया रहता था, और छोटे छोटे गन्दे खलिहानों जिनकी दीवालें सरपत से बनी हुई थीं, उखड़े हुए फर्शों वाले खुले हुए दरवाजों, कुछ गिरजाघरों जो ईंटों के

बने हुए थे तथा जिनका पलस्तर उखड़ रहा था तथा कुछ कब्रगाहें जिनके सलीब प्रत्येक क्षण टूट पड़ने को तैयार थे, इन दृश्यों को देखते हुए आगे बढ़े। आरकेडी का हृदय अन्दर ही अन्दर बैठा जा रहा था। उनके दुर्भाग्य से उन्हें मार्ग में जो किसान मिले उनके बदन पर चीथड़ों के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। उनका रूप दीन भिखारी के समान था। वृक्षों के तनों पर से छाल उखाड़ ली गई थी तथा उनकी शाखाएं तोड़ डाली गई थीं। सड़क के बगल में खड़े हुए ये वृक्ष नंगे भूखे भिखारियों के समान प्रतीत हो रहे थे। दुबली पतली, हड्डियों का ढाँचा मात्र गाएँ गड्ढों के किनारे उगी हुई घास को ऐसी आतुरता से चर रही थीं मानो उन्हें कभी चारा न मिला हो। ये पशु ऐसे दिखाई देते थे मानो उन्होंने अपने को अभी किसी पशु-भक्षी राक्षस के पंजे से मुक्त किया हो। बसन्त के उस मनोरम वातावरण में इन कृश-काय पशुओं का यह दृश्य ऐसा लगता था मानो कभी न समाप्त होने वाला हेमन्त ऋतु अपने बर्फीले तूफानों, पाला और बरफ के बीच में पीले भूत जैसा अपना निशान लिए खड़ा हो······।"नहीं" आरकेडी ने सोचा—"यह उपजाऊ क्षेत्र नहीं है। इसे देख कर कोई भी यह नहीं कह सकता कि यहाँ समृद्धि, सम्पन्नता और व्यापार का साम्राज्य होगा। यह दशा ठीक नहीं। इस क्षेत्र की दशा बदलनी पड़ेगी। सुधार आवश्यक है···परन्तु यह कार्य किया कैसे जाय ? इसका प्रारम्भ कैसे करना चाहिए !"

इस प्रकार आरकेडी गम्भीर विचारों में डूब गया···और जब वह इन विचारों में डूबा हुआ था, बाहर बसन्त अपने पूर्ण यौवन से विकसित हो रहा था। उसके चारों ओर बसन्त की स्वर्णिम हरीतिमा छा रही थी—वृक्ष, झाड़ियाँ, घास प्रत्येक वस्तु बसन्त की मादक वायु से स्पन्दित होकर झूम रही थी। चतुर्दिक लवा पक्षी बहते हुए छोटे छोटे झरनों के जल को अपने मधुर संगीत से गुंजार रहे थे। टिटहरियाँ नीचे विस्तृत मैदानों पर उड़ते हुए टीस भरा स्वर अलाप रही थीं या ऊँची पहाड़ियों पर चुपचाप उड़ रही थीं। छोटे छोटे हरे अनाज के बासन्ती पौधों के बीच काले कौवे गर्व से सिर ऊँचा कर चहल कदमी कर रहे

थे। सफेद राई के पौधों के बीच वे कभी गायब हो जाते। जब तब सफेद कोनिया लहरों के ऊपर उनके उठे हुए सिर दिखाई पड़ते। आरकेडी विभोर होकर देर तक इस दृश्य को देखता रहा। इस दृश्य का उसके मन पर इतना मादक प्रभाव पड़ा कि धीरे धीरे उसके मन में उठे हुए गम्भीर और बोझिल विचार धुंधले पड़ते गए और अन्त में लुप्त हो गए। उसने अपना कोट उतार कर एक तरफ डाल दिया और पिता की ओर ऐसी बाल सुलभ सरलता से देखने लगा कि उसके पिता ने स्नेह-विभूत होकर पुनः उसे अपने हृदय से लगा लिया।

"अब हमें अधिक दूर नहीं चलना है," निकोलाई पेट्रोविच ने कहा—"जैसे ही हम इस पहाड़ी को पार करेंगे हमें अपना घर दिखाई देने लगेगा। हम लोग साथ साथ सुन्दर जीवन बितांएगे, आरकेडी! तुम खेती में मेरी मदद करना अगर तुम्हें यह कार्य नीरस न लगे तो। हम मित्रों की तरह रहेंगे, एक दूसरे को पूरी तरह समझने की कोशिश करेंगे, क्यों, ठीक है, न?"

"अवश्य," आरकेडी ने कहा—"लेकिन आज का दिन कितना सुहावना है।"

"हाँ, मेरे लाड़ले, तुम्हारे स्वागत में बसन्त अपने पूर्ण वैभव से भर उठा है। फिर भी, मैं पुश्किन से सहमत हूँ, तुम्हें उसकी वह कविता याद है—

"ओ बसन्त, ओ प्रेम की बेला बसन्त, तुम्हारा आगमन मेरे लिए कितना दुखद है। क्या···।"

"आरकेडी," टमटम से बजारोव की आवाज आई–"जरा दियासलाई तो भेज दो। अपना पाइप जलाने को मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

निकोलाई पेट्रोविच ने तुरन्त अपना कविता-पाठ बन्द कर दिया। आरकेडी ने, जो सहानुभूति रहित आश्चर्य के साथ उसकी कविता सुन [illegible] था, अपनी जेब से चाँदी की दियासलाई निकाली और प्योतर के [illegible]जारोव के पास भेज दी।

"तुम्हें चुरुट चाहिए ?" बजारोव ने फिर चिल्लाकर पूछा।

"हाँ, भेज दो ?" आरकेडी ने जवाब दिया।

प्योतर दियासलाई और एक बड़ा काला चुरुट लेकर वापस आया जिसे आरकेडी ने तुरन्त जला लिया और ऐसा गाढ़ा, घना और तीखा धुँआ छोड़ने लगा कि निकोलाई पेट्रोविच ने, जिसने जीवन में कभी तम्बाखू नहीं पी थी, चुपचाप अपना मुँह एक तरफ को कर लिया जिससे उसके बेटे की भावनाओं को ठेस न पहुँचे।

पन्द्रह मिनट बाद दोनों गाड़ियाँ एक नए काठ के बने हुये मकान की सीढ़ियों के पास आकर खड़ी हो गईं, जो भूरे रङ्ग से रङ्गा हुआ था और जिसकी छत पर लाल रङ्ग की लोहे की चादरें पड़ी हुई थीं। इसी मकान का नाम मैरिनो था जिसे 'न्यू हैमलेट' या किसानों के शब्दों में 'निर्जन फार्म' कहा जाता था।

ड्योढ़ी में मालिकों का स्वागत करने के लिए घरेलू दासों की भीड़ इकट्ठी नहीं थी। स्वागत करने वालों में केवल एक बारह वर्ष की लड़की दिखाई दी जिसके पीछे प्योतर की शक्ल से मिलता जुलता एक लड़का था जो भूरी वर्दी पहने हुए था जिसमें गिलट के बटन लगे हुए थे। यह पावेल पेट्रोविच किरसानोव का नौकर था। उसने चुपचाप गाड़ी का दरवाजा और टमटम का पर्दा खोला। अपने बेटे और बजारोव के साथ निकोलाई पेट्रोविच ने एक अंधेरे और खाली बड़े कमरे में प्रवेश किया, जिसके दरवाजे में होकर उन्होंने एक नवयुवती के चेहरे की झलक देखी और उसके बाद एक ड्राइङ्ग रूम में पहुँचे जो आधुनिकतम ढङ्ग से सजाया गया था।

"अच्छा, अब हम घर आ गए," अपनी टोपी उतारते और बालों पर हाथ फेरते हुए निकोलाई पेट्रोविच ने कहा,—"अब सबसे महत्वपूर्ण काम यह है कि पहले हम लोग खाना खा लें और फिर आराम करें।"

"खाने का विचार तो कुछ बुरा नहीं है" बजारोव ने अंगड़ाई लेकर एक सोफे पर आराम से बैठते हुए कहा।

"यह ठीक है, खाना, हाँ, खाना खा लेना चाहिए", कह कर निकोलाई पेट्रोविच ने बिना किसी प्रकट कारण के अपना पैर पटका, "आह, प्रोकोफिच है, इसी की जरूरत थी।"

कमरे में एक साठ वर्ष के वृद्ध ने प्रवेश किया—सफेद बाल, दुबला पतला, सांवला शरीर, पीतल के बटन और गहरे लाल रङ्ग के कालर वाला भूरा कोट पहने और गले में गुलाबी मफलर डाले। यह प्रोकोफिच की साज सज्जा और रूपरेखा थी। वह दाँतों में हंसा, और आगे बढ़ कर आरकेडी का हाथ चूमा और मेहमान को आदर पूर्वक झुक कर सलाम करने के उपरान्त दरवाजे की तरफ पीछे लौटा फिर दोनों हाथ बांध कर खड़ा हो गया।

"अच्छा, प्रोकोफिच, यह लड़का आ गया," निकोलाई पेट्रोविच ने कहना प्रारम्भ किया—"अन्ततः आ गया··· ऊँह? तुम्हें यह कैसा लग रहा है?"

"छोटे मालिक बहुत अच्छे लग रहे हैं, हुजूर," उस वृद्ध ने कहा और फिर मुस्कराया। इस मुस्कराहट को छिपाने के लिए उसने अपनी घनी भौंहें तान कर पूछा—"क्या खाने की मेज तैयार करूँ, सरकार?"

"हाँ, हाँ, ठीक है, तैयार करो। परन्तु इवजिनी वेसीलिच, इससे पहले तुम अपने कमरे में जाना पसन्द करोगे?"

"नहीं, धन्यवाद, इसकी कोई जरूरत नहीं। केवल नौकरों से कह कर मेरा बड़ा सूटकेस लाने के लिये और इस लबादे को टांगने के लिए कह दीजिए," अपना सफरी कोट उतारते हुए उसने कहा।

"बहुत अच्छा, प्रोकोफिच, इन महाशय का कोट ले जाओ (प्रोकोफिच ने सकपकाते हुए बजारोव का लम्बा कोट अपने दोनों हाथों में ले लिया और दबे पाँव कमरे से बाहर निकल गया।)"और आरकेडी तुम? क्या तुम ऊपर अपने कमरे में जाना चाहते हो?"

"हाँ, मैं पहले जरा हाथ मुँह धोना चाहता हूँ", आरकेडी ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा, परन्तु उसी समय औसत कद का एक व्यक्ति, काला अंग्रेजी सूट, पेटेन्ट चमड़े का जूता पहने और फेशनेबुल

मफलर लगाए, कमरे में आया । यह पावेल पेट्रोविच किरसानोव था । उसकी आयु लगभग ४५ वर्ष की होगी । उसके भली प्रकार जमाए हुए सफेद बाल, नई कच्ची चाँदी के समान कुछ कुछ कालापन लिये हुए चमक रहे थे । उसका चेहरा भारी परन्तु झुर्री रहित था । मुखाकृति सुडौल और सुन्दर थी मानो उसे हलकी सुन्दर छेनी से गढ़ा गया हो । उसका चेहरा असाधारण रूप से सुन्दर था । विशेष रूप से उसकी काली, चमकीली, बादाम के से आकार की निर्मल एवं स्वच्छ आँखें बहुत ही आकर्षक थीं । आरकेडी के चाचा की सम्पूर्ण रूप रेखा से इस अवस्था में भी, युवावस्था की मृदुता और इस लोक से परे किसी अन्य लोक में विचरने की आकांक्षा के भाव झलकते थे जो साधारणतया बीस वर्ष की अवस्था के बाद लुप्त हो जाया करते हैं ।

पावेल पेट्रोविच ने अपनी पतलून की जेबों से अपने हाथ बाहर निकाले-अत्यन्त सुन्दर सुडौल हाथ जिनके नाखून लम्बे गुलाबी और नुकीले थे । ये हाथ उसके सफेद कफ के साथ और भी सुन्दर लग रहे थे । ऐसे हाथ उसने अपने भतीजे की ओर बढ़ाए । यूरोपियन ढंग से हाथ मिलाने के उपरान्त उसने रूसी ढंग से उसे चूमा, अथवा यों कहें कि उसने अपनी सुगन्धित मूछों से तीन बार आरकेडी के गालों को सहलाया और कहा—"स्वागत" ।

निकोलाई पेट्रोविच ने बजारोव से उसका परिचय कराया । पावेल पेट्रोविच ने अपने लचीले शरीर को थोड़ा सा आगे झुका कर, फीकी मुस्कराहट के साथ उसका अभिनन्दन किया, किन्तु अपना हाथ उसकी ओर न बढ़ा कर पुनः जेब में रख लिया ।

"मैं यह सोचने लगा था कि अब तुम आज नहीं आओगे," उसने मधुर स्वर से, शिष्टतापूर्वक अपने शरीर को तनिक हिलाते हुए, अपने कन्धे उचका कर अपने सुन्दर स्वच्छ दाँतों का प्रदर्शन करते हुए कहा—"क्या रास्ते में कोई घटना हो गई थी ?"

"नहीं, कुछ भी नहीं हुआ," आरकेडी ने जवाब दिया-"हम लोगों को सिर्फ कुछ देर तक रुकना पड़ा था, बस । परन्तु अब हम लोगों

को भेड़ियों की भी भयंकर भूख लग रही है। प्रोकोफिच से कहो कि जल्दी करें, पिताजी, मैं अभी आया।"

"एक मिनट ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चल रहा हूँ," अचानक सोफे से खड़े होते हुए बजारोव बोला। दोनों नवयुवक साथ साथ बाहर चले गए।

"यह कौन है, आखिर ?" पावेल पेट्रोविच ने अपने भाई से पूछा।

"आरकेडी का दोस्त, और उसके कथनानुसार बड़ा ही तेज आदमी है।

"वह यहीं हम लोगों के साथ ठहरेगा ?"

"हाँ।"

"क्या कहा, यह रीछ जैसा व्यक्ति ?"

"क्यों, हाँ।"

पावेल पेट्रोविच अपनी उंगलियाँ मेज पर बजाने लगा।

"मैं समझता हूँ आरकेडी पर भी कुछ रंग चढ़ गया है," उसने कहा, "मुझे खुशी है कि वह वापस आ गया।"

भोजन के समय अनेक विषयों पर उखड़ी बातें हुईं। विशेष रूप से बजारोव बोला कम परन्तु उसने खाया अधिक। निकोलाई पेट्रोविच ने अपने कृषक-जीवन की अनेक घटनाएँ सुनाईं, सरकारी योजनाओं की चर्चा की, कमेटियों, प्रतिनिधि मंडलों, देश में मशीनों की उपयोगिता आदि अनेक विषयों पर बातें कीं। पावेल पेट्रोविच भोजन-गृह में धीरे-धीरे इधर से उधर चहल-कदमी करता रहा। (वह रात को कभी भोजन नहीं करता था) कभी कभी लाल शराब से भरे हुए गिलास में से एकाध घूंट भर लेता था और बातचीत के दौरान में कभी कभी और वह भी बहुत ही कम, "आह! आहा! हुँ!" आदि शब्दों का उच्चारण कर दिया करता था। आरकेडी ने सेन्ट पीटर्सबर्ग के ताजे समाचार सुनाए परन्तु वह इस बात से थोड़ी सी बेचैनी का अनुभव कर रहा था कि जिस स्थान पर वह अब एक नवयुवक की हैसियत से बातें कर रहा है जहाँ पहले

उसे एक बच्चा होने के कारण कोई महत्व नहीं दिया जाता था । ऐसी भावनाएं प्रत्येक नवयुवक के हृदय में ऐसी परिस्थितियों में सदैव उत्पन्न होती हैं। वह धीरे-धीरे रुक-रुक कर बोल रहा था । 'पापा' शब्द के उच्चारण को बचा रहा था। फिर भी एक बार उसने 'पिता' शब्द का उच्चारण किया परन्तु इस शब्द का उच्चारण करते समय वह स्पष्ट रूप से न बोल कर केवल फुसफसाया। अपने को अधिक शान्त बनाने की इच्छा से उसने भोजन के साथ आवश्यकता से अधिक शराब पी। प्रोकोफिच निरन्तर उसी पर अपनी निगाहें जमाए रहा। इस पूरे समय तक प्रोकोफिच का मुँह चलता रहा और वह अस्पष्ट स्वर से कुछ बुदबुदाता रहा । भोजन समाप्त होते ही सब लोग अपने अपने कमरों में चले गए।

"तुम्हारे चाचा तो अद्भुत व्यक्ति हैं।" बजारोव ने ड्रेसिंग गाऊन पहने हुए आरकेडी के बिस्तर के पास बैठ कर एक छोटा सा पाइप पीते हुए कहा—"कहाँ यह देहाती वातावरण और कहाँ यह सज धज । और फिर उनकी उंगलियों के नाखूनों के विषय में कहना ही क्या है । उन्हें तो नुमायश में रखा जा सकता है।"

"दरअसल, तुम उन्हें जानते नहीं," आरकेडी ने जवाब दिया—"अपनी जवानी में वे समाज के अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति माने जाते थे। मैं किसी दिन उनका किस्सा सुनाऊँगा। वे बहुत ही, असाधारण रूप से सुन्दर थे। स्त्रियाँ उनके पीछे पागल रहती थीं।"

"ओह, तो यह बात है। यह सब बीते दिनों की स्मृतियाँ हैं। परन्तु यहाँ तो कोई ऐसा नहीं जो उनके सौन्दर्य से मुग्ध हो। यह और भी दयनीय स्थिति है। उनके उस सुन्दर कॉलर ने जो तख्ती की तरह कड़ा और सीधा है तथा उनकी घुटी हुई चिकनी दाढ़ी ने तो मुझे अभिभूत सा कर रखा था। क्या तुम्हारी दृष्टि में यह सब हास्यास्पद नहीं प्रतीत होता, आरकेडी निकोलिच ?"

"हाँ, हो सकता है ! पर वास्तव में वे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं ?"

"वे पुरानी चालढाल के व्यक्ति हैं। परन्तु तुम्हारे पिता बड़े मजेदार आदमी हैं। वे कविता पढ़ने की अपेक्षा खेती बाड़ी का काम अधिक

अच्छा कर सकते हैं। मेरा ख्याल है कि खेती के बारे में वे बहुत कम जानते हैं परन्तु उनका हृदय शुद्ध है।"

"मेरे पिता स्वर्ण-हृदय पुरुष हैं।"

"तुमने गौर किया था—वे कुछ परेशान से नजर आ रहे थे।"

आरकेडी ने सहमति सूचक संकेत किया जैसे वह स्वयं तो परेशान ही नहीं हुआ था।

"सचमुच अद्भुत हैं!" बजारोव बोला—"ये पुराने मन-मौजी तबियत के रईस लोग। वे अपने स्नायुओं पर इतना अधिक जोर देते हैं कि उत्तेजना की स्थिति तक पहुँच जाते हैं—और फिर–स्वभावतः उनका सन्तुलन बिगड़ जाता है। जो कुछ भी हो, खैर, अब रात भर के लिए विदा। मेरे कमरे में नहाने के समय कपड़े टांगने का एक अंग्रेजी स्टैन्ड है परन्तु दरवाजे में ताला नहीं लगता। फिर भी इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देना चाहिए—मेरा मतलब अंग्रेजी 'बाथ स्टैन्ड' से है, ये प्रगति के सूचक हैं।"

बजारोव चला गया और आरकेडी एक सुखानुभूति में निमग्न हो गया। पर अपने आनन्ददायक घर में, अपने चिर परिचित बिस्तर पर, स्नेहसिक्त हाथों द्वारा सजाए गए ओढ़ने के नीचे सोना कितना मधुर लगता है। आरकेडी को यगोरोव्ना की याद हो आई। उसने गहरी सांस लेकर उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की······उसने अपने लिए कोई प्रार्थना नहीं की।

आरकेडी और बजारोव, दोनों ही जल्दी सो गए परन्तु उस मकान में ऐसे दूसरे व्यक्ति भी थे जो एक मिनट के लिए भी नहीं सोए। पुत्र के घर आने ने निकोलाई पेट्रोविच को व्यग्र बना रखा था। वह बिस्तर पर लेट तो गया परन्तु उसने मोमबत्ती नहीं बुझाई और अपने सिर को अपने हाथों पर रख कर लेटा हुआ बहुत देर तक सोचता रहा। उसका भाई आधी रात तक अपने अध्ययन-कक्ष में, अंगीठी के सामने, जिसमें दहकते हुए कोयले मन्द पड़ गए थे, एक आराम कुर्सी पर बैठा रहा। उसने अपनी पोशाक नहीं बदली थी। केवल उसके पैरों में पेटेन्ट चमड़े

के जूते का स्थान लाल रंग के चीनी स्लीपरों ने ले लिया था। उसके हाथों में 'गैलिग्नेनी का मैसेंजर' नामक पत्रिका का ताजा अंक था, परन्तु वह उसे पढ़ नहीं रहा था। वह टकटकी बांधे अंगीठी को देख रहा था जिसमें रह रह कर एक नीली लौ चमक उठती थी। भगवान जानता है कि उसके विचार कहाँ मंडरा रहे थे परन्तु वे केवल भूत काल की स्मृतियों से ही सम्बन्धित नहीं मालूम पड़ते थे। उसके चेहरे पर एकाग्रतापूर्ण उदासी छाई हुई थी जो उस अवस्था में नहीं देखी जाती जब मनुष्य केवल अपनी भूतकालीन स्मृतियों में तल्लीन रहता है। और मकान के पिछले भाग में स्थित एक छोटे से कमरे में नीली जाकेट पहने और बालों पर सफेद रूमाल बांधे एक नवयुवती बैठी हुई थी जिसका नाम फेनिच्का था। वह कभी कुछ सुनने लगती, कभी ऊँघती और कभी खुले दरवाजे की ओर देखती जिसमें होकर एक बच्चे का छोटा सा खटोला दिखाई पड़ता था और उसमें सोते हुए बच्चे की नियमित सांसों का आना जाना सुनाई पड़ रहा था।

५

दूसरे दिन सुबह बजारोव सबसे पहले सोकर उठा और बाहर चला गया। "हूँ" अपने चतुर्दिक वातावरण का निरीक्षण करते हुए उसने सोचा—"यह स्थान दर्शनीय नहीं है।" जब निकोलाई पेट्रोविच ने अपने किसानों के खेतों की हदबन्दी की थी तो उसने अपने लिए एक नया मकान बनाने के लिए चार देसिआतिनी चौरस जमीन अलग छोड़ दी थी। वहाँ उसने अपना मकान और नौकरों के क्वार्टर बना लिए थे। साथ ही एक बाग लगवाया था, एक तालाब और दो कुए खुदवाए थे लेकिन बाग के पौधे पनप नहीं सके। तालाब में पानी बहुत कम था और कुए खारी पानी के निकले। केवल बकायन का एक कुञ्ज और बबूल के कुछ वृक्ष इधर-उधर खड़े हुए थे। यहाँ अक्सर बैठ कर चाय पी जाती या खाना खाया जाता था। बजारोव को बाग का निरीक्षण करने, पशु-शाला और अस्तबल का मुआयना करने में अधिक समय नहीं लगा। वहीं

उसने दो छोटे लड़कों से मित्रता कर ली और उन्हें अपने साथ लेकर, मकान से लगभग एक मील दूर स्थित एक दलदल में मेंढ़क पकड़ने चल दिया।

"साहब, आप मेंढ़कों का क्या करेंगे?" इनमें से एक लड़के ने पूछा।

"बताऊँगा" बजारोव बोला। उसमें निम्न वर्ग को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता थी यद्यपि वह ऐसे लोगों के साथ कभी भी छल का बर्ताव नहीं करता था परन्तु उनके प्रति उसका व्यवहार रूखा रहता था। "मैं मेंढ़क को चीर कर यह देखता हूँ कि उसके शरीर में क्या है। और जैसे कि हम और तुम सभी मेंढ़कों के समान हैं, अन्तर केवल इतना ही है कि हम दो पैरों पर चलते हैं, इस तरह मैं इस बात का भी पता लगा लूँगा कि हमारे शरीरों के भीतर क्या क्रिया हो रही है।"

"आप इस बात को किसलिये जानना चाहते हैं?"

"जिससे कि मैं उस समय कोई गलती न कर बैठूँ जब तुम बीमार पड़ो और मुझे तुम्हारा इलाज करना पड़े।"

"क्यों, क्या तुम डाक्टर हो?"

"हाँ।"

"वास्का, तुम सुन रहे हो। यह महाशय कह रहे हैं कि हम और तुम मेंढ़कों के समान हैं। कैसी विचित्र बात है।"

"मुझे मेंढ़कों से डर लगता है" वास्का ने कहा जो नंगे पैर और सुनहले बालों वाला सात वर्ष का बालक था जिसने उठे हुए कालर वाला भूरा कोट पहन रखा था।

"तुम उनसे डरते क्यों हो? वे काटते नहीं!"

"अच्छा दार्शनिको, चलो पानी में घुसो।" बजारोव ने आज्ञा दी।

इसी बीच निकोलाई पेट्रोविच भी उठ बैठा था और उठ कर आरकेडी को देखने गया जो उठ कर कपड़े पहन चुका था। बाप बेटे दोनों ओसारे के नीचे चबूतरे पर आये। बकायन के कुञ्ज में जङ्गले के लिये सेमोवार* पहले से ही उबल रहा था। एक छोटी लड़की आई—वही

*एक प्रकार का चाय बनाने का बर्तन।

जो उनके आने पर पहले उन्हें मिली थी। वह सुरीली आवाज में बोली—

"फेदोस्या निकोलेव्ना की तबियत ठीक नहीं है। वह आने में असमर्थ है। उसने मुझसे यह पुछवाया है कि आप लोग अपनी चाय स्वयं बना लेंगे या वह दान्याशा को भेजें।"

"नहीं, ठीक है, मैं खुद बना लूँगा," निकोलाई पेट्रोविच ने जल्दी से कहा—"आरकेडी,तुम अपनी चाय में क्या डालोगे-मलाई या नीबू?"

"मलाई", आरकेडी ने जवाब दिया और कुछ देर खामोश रह कर प्रश्नवाचक स्वर में कहा—"पिता जी?" निकोलाई पेट्रोविच ने व्यग्रतापूर्वक पुत्र की ओर देखा।

"क्या कह रहे हो?"

आरकेडी ने अपनी आँखें नीची कर लीं।

"क्षमा कीजिये, पिताजी, अगर मेरा प्रश्न आपको असंगत लगे," उसने कहना आरम्भ किया—"परन्तु गत रात्रि की आपकी खरी बातें मुझसे भी स्पष्टवादिता की अपेक्षा रखती हैं······आप नाराज तो नहीं होंगे, क्यों?"

"कहो, तुम क्या कहना चाहते हो?"

"आपकी बातें सुन कर मुझे पूछने का साहस हो रहा है······क्या इसी कारण फेन······क्या मेरी इस स्थान पर उपस्थिति के कारण ही वह यहाँ चाय बनाने के लिये नहीं आई हैं?"

निकोलाई पेट्रोविच ने धीरे से अपना मुख एक तरफ किया।

"शायद," उसने तुरन्त उत्तर दिया,—"वह सोचती है······ वह शर्माती है।"

"आरकेडी ने शीघ्रतापूर्वक पिता के चहरे की ओर देखा।

"उन्हें शर्माना तो नहीं चाहिये। "पहली बात तो यह है कि इस विषय में आप मेरे विचार जानते ही हैं (आरकेडी ने रस लेते हुए उपर्युक्त वाक्य कहा)—"और, दूसरी बात यह है कि, मैं किसी भी कारण से आपकी आदतों और रहन-सहन के मामलों में दखल नहीं दूँगा। इसके अतिरिक्त मुझे यकीन है कि आपका चुनाव कभी भी

असंगत नहीं हो सकता। अगर आपने उन्हें अपने साथ इस मकान में रहने की इजाजत दी है तो वह इसके योग्य अवश्य ही होंगी। किसी भी दशा में बेटा पिता के कार्यों की असंगतता और संगतता का जज नहीं बन सकता और विशेष रूप से मैं जिसके पिता ने पुत्र की आजादी में कभी भी हस्तक्षेप नहीं किया है।"

आरम्भ में आरकेडी का स्वर कुछ लड़खड़ा रहा था। वह समझ रहा था कि वह कोई बहुत उदारता की बात कर रहा है और साथ ही उसने यह अनुभव किया कि वह अपने पिता को कोई धार्मिक उपदेश दे रहा है। किसी भी व्यक्ति पर उसके अपने स्वर का बहुत प्रभाव पड़ता है। इसी कारण आरकेडी ने अन्तिम शब्द काफी दृढ़ता और गम्भीरता पूर्वक कहे।

"धन्यवाद, आरकेडी," निकोलाई पेट्रोविच ने दबी हुई आवाज में कहा और एक बार पुनः उसकी उँगलियाँ अपनी भौंह और माथे पर दौड़ने लगीं। "तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है। वास्तव में, यदि लड़की अयोग्य होती······यह मेरी कोई मूर्खतापूर्ण सनक नहीं है। इस सम्बन्ध में मेरा तुमसे बात करना बड़ा भद्दा सा लगता है, लेकिन तुम जानते हो, वह तुम्हारे सामने शर्माती है खास तौर से तुम्हारे घर आने के पहले ही दिन।"

"अगर ऐसी बात है तो मैं खुद उनके पास जाऊँगा।" आरकेडी ने एक नये उच्चता के गर्वपूर्ण भाव से भर कर जोर से कहा और उछल कर खड़ा हो गया—"मैं उन्हें भली प्रकार समझा दूँगा कि उन्हें मुझसे शर्माने की कोई जरूरत नहीं।"

निकोलाई पेट्रोविच भी खड़ा हो गया।

"आरकेडी" उसने कहना शुरू किया, "महरबानी करके मत जाओ···दरअसल···वहाँ···मुझे तुमको बता देना चाहिए था कि···"

पर उसकी बात पर ध्यान दिए बिना ही आरकेडी लम्बा बना। क्षण-भर तो निकोलाई पेट्रोविच उसकी ओर देखता रहा और फिर परेशान होकर कुर्सी पर गिर सा पड़ा। उसका हृदय धड़क रहा था।

क्या वह उस समय यह सोच रहा था कि अपने बेटे के साथ उसके भावी सम्बन्ध कैसे विलक्षण होंगे ? क्या उसने यह अनुभव किया कि उसके व्यक्तिगत मामलों से दूर रह कर आरकेडी उसके प्रति अधिक सम्मान का प्रदर्शन करेगा ? क्या उसने स्वयं अपनी इस अत्यधिक निर्बलता के लिए धिक्कारा ? यह सब कहना कठिन है। वह इन सब भावनाओं का अनुभव कर रहा था परन्तु केवल भावावेश के रूप में ही और उसकी ये भावनाएं अत्यन्त धुंधली थीं। हृदय की धड़कन बढ़ जाने पर भी अभी तक उसके चेहरे पर लज्जा के भाव थे।

शीघ्रतापूर्वक आने वाले पैरों की आहट सुनाई पड़ी और आरकेडी पुनः उसी स्थान पर आ पहुँचा।

"हम दोनों ने आपस में परिचय प्राप्त कर लिया, पिताजी," उसने कोमल और सच्ची विजय के भाव चेहरे पर लाते हुए कहा जो कि वास्तव में सच्चे थे। "फेदोस्या निकोलायाव्ना की तबीयत सचमुच ही आज ठीक नहीं है। वह थोड़ी देर बाद बाहर आयेगी। परन्तु आपने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि मेरा एक भाई भी है ? मैं उसे गत रात्रि को ही चूम लेता जैसा कि मैंने अभी किया है।

निकोलाई पेट्रोविच कुछ कहना चाहता था, उठ कर उसे अपनी बाहों में भर लेना चाहता था। आरकेडी दौड़ कर उसकी गर्दन से चिपट गया।

"हलो ! फिर प्रेमालिंगन हो रहा है।" उन्होंने अपने पीछे पावेल पेट्रोविच का स्वर सुना।

इस समय उसके आगमन से पिता और पुत्र दोनों को ही राहत मिली। कुछ ऐसी सुख-प्रद भाववेग की अवस्थाएं होती हैं जिनसे प्रत्येक व्यक्ति शीघ्र ही मुक्त होना चाहता है।

"क्या इससे तुम्हें आश्चर्य हो रहा है," निकोलाई पेट्रोविच ने प्रसन्नता से भर कर ऊँचे स्वर में कहा— "मैं युगों से आरकेडी के घर आने का स्वप्न देख रहा था···जब से वह घर आया है मैं जी भर कर उसे देख भी नहीं पाया हूँ।"

"मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ," पावेल पेट्रोविच ने उत्तर दिया—"बल्कि मैं तो खुद उसका आलिंगन करना चाहता हूँ।"

आरकेडी अपने चाचा के पास गया और उसने पुनः अपने गालों पर उसकी सुगन्धित मूछों का स्पर्श अनुभव किया। पावेल पेट्रोविच मेज के किनारे बैठ गया। वह अंग्रेजी फैशन का सुबह पहनने वाला सूट पहने हुए था और उसके सिर पर एक छोटी तुर्की टोपी सुशोभित थी। उसकी तुर्की टोपी और लापरवाही से गले में बाँधा हुआ मफलर देहाती जीवन की स्वच्छन्दता का प्रदर्शन कर रहे थे। परन्तु उसकी कमीज का कड़ा कालर, जो इस समय रङ्गीन था, जो दिन के इस समय पहनने की उपयुक्त वस्तु थी उसकी स्वच्छतापूर्वक बनी हुई ठोड़ी पर रुच रहा था।

"तुम्हारा नया दोस्त कहाँ है?" उसने आरकेडी से पूछा।

"वह बाहर चला गया है। वह आमतौर से सुबह जल्दी उठता है। खास बात यह है कि उसकी तरफ ध्यान देने की जरूरत ही नहीं है। वह तकल्लुफपसन्द नहीं है।"

"हाँ, यह तो स्पष्ट है," कह कर पावेल पेट्रोविच ने धीरे-धीरे रोटी पर मक्खन लगाना प्रारम्भ किया और फिर पूछा,—"वह यहाँ बहुत दिनों तक ठहरेगा?"

"यह तो परिस्थितियों पर निर्भर है। वह यहाँ अपने पिता के पास जाते हुए मार्ग में ठहर गया है।"

"और उसका बाप कहाँ रहता है?"

"यहाँ से अस्सी वर्स्ट की दूरी पर इसी अपने सूबे में। वहाँ उसकी छोटी सी जमींदारी है। वह पहले फौज में डाक्टर था।"

"ओह! और मैं तब से बराबर यह सोच रहा था कि मैंने यह नाम बजारोव कहाँ सुना है। निकोलाई, अगर मैं गल्ती नहीं कर रहा हूँ तो मेरा ऐसा ख्याल है कि मेरे पिता के डिवीजन में बजारोव नामक एक डाक्टर था, था न?"

"मेरा ख्याल है-था।"

"ठीक, बिल्कुल ठीक! तो वह डाक्टर उसका बाप है। हूँ।" पावेल पेट्रोविच ने अपनी मूँछें मरोड़ीं। "अच्छा, और यह मिस्टर बजारोव महाशय स्वयं क्या हैं?" उसने धीरे से पूछा।

"बजारोव क्या है?" आरकेडी ने मुस्कराते हुए दुहराया-"चाचा क्या आप सचमुच यह जानना चाहते हैं कि वह क्या है?"

महरबानी करके बताओ न, बेटे।"

"वह निहिलिष्ट है।"

"क्या है?" निकोलाई पेट्रोविच ने पूछा जब कि पावेल पेट्रोविच इतना स्तम्भित हुआ कि उसके हाथ में मक्खन लगी हुई छुरी ऊपर हवा में उठी की उठी रह गई।

"वह एक निहिलिष्ट है!" आरकेडी ने दुहराया।

"एक निहिलिष्ट," निकोलाई पेट्रोविच ने स्पष्ट उच्चारण करते हुए कहा—"यह शब्द तो लैटिन भाषा के 'निहिल' या 'नीयंग' से निकला है-जहाँ तक कि मेरा अनुमान है। क्या इसका मतलब एक ऐसा व्यक्ति है जो······जो किसी भी सिद्धान्त में विश्वास नहीं करता?"

"इस प्रकार कहो कि-जो किसी का भी सम्मान नहीं करता," पुनः मक्खन लगाते हुए पावेल पेट्रोविच ने अपना मत जाहिर किया।

"···जो प्रत्येक वस्तु को आलोचनात्मक दृष्टि से देखता है।" आरकेडी बोला।

"पर ये दोनों क्या एक ही बात नहीं हैं?" पावेल पेट्रोविच ने पूछा।

"नहीं, इनमें अन्तर है। निहिलिष्ट एक ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी भी मत को ब्रह्म-वाक्य नहीं मानता। वह किसी भी सिद्धान्त को केवल विश्वास के ही कारण स्वीकार नहीं करता, भले ही वह सिद्धान्त अत्यन्त पवित्र और उच्च क्यों न हो।"

"अच्छा, फिर भी क्या यह अच्छी बात है?" पावेल पेट्रोविच ने प्रश्न किया।

"यह तो व्यक्ति की रुचि पर निर्भर करता है, चाचा। यह कुछ आदमियों के लिए अच्छा तथा कुछ के लिए बहुत बुरा हो सकता है।"

"अच्छा यह बात है। तो मेरे ख्याल में यह हम लोगों की परम्परा में तो नहीं है। हम पुरानी विचारधारा के व्यक्ति—हमारा विश्वास है कि बिना सिद्धान्तों के (उसने इसका उच्चारण फ्रांसीसी भाषा के लहजे के अनुसार बहुत कोमलता पूर्वक किया जबकि आरकेडी शब्दों को दबाकर और पहले अक्षर पर विशेष बल देकर बोलता था) ऐसे सिद्धान्त जिनका आधार विश्वास, जैसा कि तुम लोग कहते हो—कोई भी न तो एक कदम आगे बढ़ सकता है और न एक क्षण जीवित रह सकता है। सारा जीवन तुम्हारे सामने ही व्यतीत हो। भगवान् तुम्हें अच्छी तन्दुरुस्ती और जनरल का ओहदा दे परन्तु हम तो केवल देखकर प्रसन्न होने में ही सन्तुष्ट हैं।...तुम उन्हें क्या कहते हो?"

"निहिलिष्ट," आरकेडी ने एक एक अक्षर का स्पष्ट उच्चारण करते हुए कहा।

"हाँ, हमारे समय में हीगलिस्टों का बोलबाला था और अब निहिलिस्टों का है। हम देखेंगे कि तुम नितान्त शून्य और अस्तित्व हीन आधार में किस तरह जीवन बिता सकोगे। अब जरा घन्टी बजाना निकोलाई, मेरा कोको पीने का समय हो गया है।"

निकोलाई पेट्रोविच ने घन्टी बजाई और पुकारा —"दान्याशा"। परन्तु दान्याशा के स्थान पर फेनिच्का स्वयं बरामदे में आई। वह लगभग २३ वर्ष की युवती थी। उसका शरीर कोमल और गोरा था, बाल और आँखें काली थीं। बच्चों के से गहरे लाल होंठ और नाजुक छोटे छोटे हाथ थे। वह एक स्वच्छ छपे हुए कपड़े की पोशाक पहने थी। एक नया नीला रुमाल उसके गोल कन्धों पर बंधा हुआ था। वह कोको से भरा हुआ एक प्याला लिए आई थी। उसे पावेल पेट्रोविच के सामने मेज पर रख कर लाज से संकुचित होकर एक तरफ खड़ी हो गई। उस समय उसके सुन्दर मुख पर तीव्र रक्त प्रवाह के कारण

लालिमा छा रही थी। वह आँखें झुकाए, मेज के सहारे उङ्गलियों पर बल देकर कुछ झुकी हुई खड़ी थी। वह अपने वहाँ आने पर लज्जित थी फिर भी उसकी आकृति से यह प्रतीत हो रहा था कि जैसे वह यहाँ आना अपना अधिकार समझती है।

पावेल पेट्रोविच ने भवें चढ़ा कर देखा और निकोलाई पेट्रोविच घबरा सा गया।

"नमस्ते, फेनिच्का," वह धीरे से फुसफुसाया।

"नमस्ते, महाशय," उसने स्पष्ट परन्तु शान्त स्वर में उत्तर दिया और आरकेडी की ओर बगल में आँखें फेर कर देखा। आरकेडी प्रत्युत्तर में मित्र भाव से मुस्करा दिया। फेनिच्का चल दी। चलते समय उसके पैर विशेष ढङ्ग से लड़खड़ा से रहे थे परन्तु फिर भी उस चाल में सौन्दर्य था।

कुछ क्षणों तक वहाँ, शान्ति का सम्राज्य रहा। पावेल पेट्रोविच धीरे धीरे अपना कोको पीने लगा और अचानक उसने सिर उठा कर देखा।

"यह मिस्टर निहिलिष्ट आ रहे हैं," पावेल सहसा बोल उठा।

वास्तव में, बजारोव लम्बे-लम्बे डग बढ़ाता हुआ, और फूलों की क्यारियों को लांघता हुआ बाग में होकर चला आ रहा था। उसकी जाकेट और पाजामा कीचड़ से सन रहे थे। उसके पुराने ढंग के गोल हैट में दल दल में उगे हुए पौधों के कांटेदार फूल गोलाकार रूप में लगे हुए थे। उसके सीधे हाथ में एक छोटा सा थैला था जिसमें कोई जिन्दा चीज उछल कूद मचा रही थी। वह शीघ्रतापूर्वक बरामदे के सामने आया और कुछ झुक कर बोला—

"नमस्ते महाशयो, दुख है कि मुझे चाय के लिए देर हो गई; मैं अभी आया। पहले इन कैदियों को हिफाजत से रख आऊँ।"

"इसमें क्या है, जोंकें," पावेल पेट्रोविच ने पूछा।

"नहीं, मेंढ़क हैं।"

"तुम उन्हें खाते हो या पालते हो?"

"मैं इन पर अपने परीक्षण करता हूँ," बजारोव ने लापरवाही से कहा और मकान की ओर चला गया।

"वह उनकी चीर फाड़ करेगा," पावेल पेट्रोविच बोला-"वह सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करता परन्तु मेंढकों में विश्वास करता है।"

आरकेडी ने करुणापूर्वक अपने चाचा की ओर देखा और निकोलाई पेट्रोविच ने चुपचाप अपने कन्धे उचकाए। पावेल पेट्रोविच ने अनुभव किया कि उसका मजाक व्यर्थ गया। उसने तुरन्त वार्तालाप का विषय बदल कर खेती बाड़ी और नए कारिन्दा की ओर मोड़ दिया जो अभी उनके पास यह शिकायत लेकर आया था कि फोमा, जो एक किराए का मजदूर है, बहुत ही बदमाश आदमी है और पूरी तरह काबू से बाहर हो रहा है। "वह ईसप की तरह बातें करता है," उसने और बहुत सी बातों के साथ कहा—"उसने चारों ओर बुरी शोहरत पा रखी है। उसका अन्त बहुत बुरा होगा। आप मेरी बात का विश्वास करें, उसका अन्त बहुत बुरा होगा।"

६

बजारोव घर से वापस आया और मेज पर बैठ कर जल्दी जल्दी अपनी चाय पीने लगा। दोनों भाई चुपचाप उसकी ओर देखते रहे। आरकेडी की निगाहें बारम्बार चाचा से पिता की ओर और पिता से चाचा की ओर चुपचाप दौड़ती रहीं।

"क्या तुम दूर तक गए थे?" निकोलाई पेट्रोविच ने बजारोव से पूछा।

"यहाँ थोड़ी दूर पर पेड़ों के झुंड के पास एक दलदल है। मैंने पाँच चाहा पक्षी पकड़े हैं। तुम उन्हें हलाल कर सकते हो, आरकेडी।"

"तुम शिकार खेलने नहीं जाते?"

"नहीं।"

"तुम पदार्थ-विज्ञान (फिजिक्स) का अध्ययन कर रहे हो, ऐसा मेरा ख्याल है," पावेल पेट्रोविच ने अपनी बारी आने पर पूछा।

"हाँ, पदार्थ-विज्ञान; साधारणतः प्रकृति-विज्ञान।"

"सुनते हैं जर्मनों ने इस क्षेत्र में बहुत प्रगति की है।"

"हाँ, इस विषय में जर्मन लोग हमारे गुरु हैं," बजारोव ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

पावेल पेट्रोविच ने 'जर्मन' शब्द के स्थान पर, व्यंग प्रदर्शित करने के लिए 'ड्वेन स्लेन्दर' शब्द का प्रयोग किया था परन्तु उसकी तरफ किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।

"क्या जर्मनों के बारे में तुम्हारे विचार इतने उच्च हैं।" पावेल पेट्रोविच ने सधे हुए नम्र शब्दों में पूछा। वह भीतर ही भीतर चिड़-चिड़ाहट का अनुभव कर रहा था। बजारोव की लापरवाही से उसकी आभिजात्य वर्गीय प्रवृत्ति बजारोव के खिलाफ भड़क उठी थी। एक सैनिक डाक्टर का लड़का, यह बजारोव, लज्जित होने के स्थान पर, पूरी अक्खड़ता और असभ्यतापूर्ण ढङ्ग से उत्तर दे रहा था। उसके बोलने के ढङ्ग में रुखाई और बदतमीजी की झलक थी।

"उनके वैज्ञानिक अत्यन्त व्यवहारिक होते हैं।"

"होते होंगे, खैर, मेरा ख्याल है कि रूसी वैज्ञानिकों के विषय में तुम्हारे विचार इतनी चापलूसी और खुशामद से भरे हुए नहीं हैं, हैं क्या?"

"मेरा भी यही ख्याल है।"

"इससे आपकी प्रशंसनीय शालीनता का प्रदर्शन होता है", पावेल पेट्रोविच ने उत्तर दिया और उसने सीधा खड़ा होकर सिर पीछे को झुकाया। "परन्तु आरकेडी निकोलाइच अभी हम लोगों को बता रहा था कि तुम किसी भी विद्वान को अपने विषय का पूर्ण अधिकारी नहीं मानते। तुम उनका विश्वास नहीं करते?"

"मैं उनको क्यों मान्यता दूँ? और मैं विश्वास किस बात का करूँ? जब कभी कोई अक्लमन्दी की बात करता है मैं स्वीकार कर लेता हूँ—बस इतना ही।"

"क्या सभी जर्मन बुद्धिमानी की बात करते हैं?" पावेल पेट्रोविच

थड़थड़ाया और उसके चेहरे पर मनोविकार शून्य विरक्ति के भाव झलक उठे। ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसके विचार शून्य में भटक रहे हैं।

"नहीं, सभी नहीं।" बजारोव ने जम्हाई को दबाते हुए कहा। यह स्पष्ट था कि वह इस बेकार के विवाद को आगे नहीं बढ़ाना चाहता था।

पावेल पेट्रोविच ने आरकेडी की ओर इस प्रकार देखा मानो कह रहा हो—"तुम्हारे ये मित्र महोदय तो बड़े विनम्र व्यक्ति हैं।"

"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है," पावेल पेट्रोविच बिना किसी हिचकिचाहट के आगे कहता गया—"मैं जर्मनों को घृणा करने का दोषी अवश्य हूँ। मैं रूसी जर्मनों के विषय में तो कुछ नहीं कहता। हम उस तरह के व्यापारियों को खूब जानते हैं लेकिन मैं जर्मनी में रहने वाले जर्मनों को सहन नहीं कर सकता। वे पुराने जमाने के लोग अच्छे थे—उनसे कोई भी प्रेरणा ले सकता है। उस समय उन लोगों में शिलर, गेटे आदि प्रसिद्ध विद्वान थे, तुम जानते हो, मेरा भाई, उदाहरण के लिए, उनके विषय में बहुत अच्छे विचार रखता है···परन्तु आजकल तो वे सब रसायन-शास्त्री और भौतिकवादी बन गए हैं..."

"एक अच्छा रसायन-शास्त्री किसी भी कवि से बीस गुना अच्छा होता है," बजारोव बोल उठा। "अच्छा, ऐसी बात है," भौंह को जरा सा ऊपर उठाते हुए पावेल पेट्रोविच ने अपना मत प्रकट किया। उसकी इस हरकत से ऐसा प्रकट हुआ मानो वह ऊँघ रहा हो। "तो मेरा ऐसा ख्याल है कि तुम कला में विश्वास नहीं करते?"

"धन कमाने की और मस्त पड़े रहने की कला!" बजारोव ने व्यङ्गपूर्वक कहा।

"अच्छा, साहब, आप मजाक कर रहे हैं। तो आप प्रत्येक वस्तु को अस्वीकार करते हैं, है न ऐसी बात? ठीक है, क्या इसका यह मतलब है कि आप केवल एकमात्र विज्ञान में ही विश्वास रखते हैं?"

"मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि मैं किसी भी चीज में विश्वास नहीं रखता, और विज्ञान है क्या? आपका अभिप्राय साधारण

विज्ञान से है ? जैसे कि व्यापार और अन्य रोजगार कई प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार विज्ञान के भी अनेक विभाग हैं। लेकिन साधारण रूप से विज्ञान का कोई पृथक अस्तित्व नहीं है।"

"बिल्कुल ठीक, महाशय, परन्तु दूसरी परम्पराओं और विश्वासों के विषय में, जिन्हें मानव समाज ने स्वीकार कर लिया है, आपकी क्या राय है ? इनके विषय में भी क्या आपका वही नकारात्मक दृष्टिकोण है ?"

"यह कैसा प्रश्न ? क्या यहाँ कोई सैद्धान्तिक-परीक्षा ली जा रही है ?" बजारोव ने प्रश्न किया। पावेल पेट्रोविच का चेहरा जरा पीला पड़ गया...निकोलाई पेट्रोविच ने हस्तक्षेप करना उचित समझा।

"मेरे प्यारे इवजिनी वैसीलिच, हम लोग फिर कभी अच्छी तरह इस विषय पर विचार विमर्श करेंगे। हम लोग तुम्हारे विचार जानने का प्रयत्न करेंगे और अपने विचारों से तुम्हें अवगत कराएँगे। जहाँ तक मेरा संबन्ध है, यह जान कर मुझे खुशी हुई है कि तुम प्रकृति-विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो। मैंने सुना है कि लीबिग* ने भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए कई आश्चर्यजनक आविष्कार किए हैं। तुम खेती बाड़ी के मामले में मेरी सहायता कर सकते हो। तुम मुझे इस सम्बन्ध में कुछ उपयोगी सुझाव देने में समर्थ हो सकोगे, ऐसा मेरा विश्वास है।"

"मैं आपकी सेवा के लिए प्रस्तुत हूँ, निकोलाई पेट्रोविच, लेकिन लीबिग की बात तो बहुत दूर की बात है। किसी भी व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ना प्रारंभ करने से पूर्व वह वर्णमाला का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करे, जब कि अभी तक हमने अपने विषय का प्रारम्भिक ज्ञान भी नहीं प्राप्त कर पाया है।"

"अच्छा, तुम वास्तव में एक निहिलिष्ट ही हो, मैं यह देख चुका" निकोलाई पेट्रोविच ने सोचा।

---

*जेस्टर फ्रीट वान लीबिग (१८०३–१८७३) एक प्रसिद्ध जर्मन रसायन-शास्त्री था।

"फिर भी मैं उम्मीद करता हूँ कि जब कभी जरूरत आ अटके मैं तुम्हें इस विषय के लिए कष्ट दे सकूँगा।" उसने जोर से बोलते हुए कहा—"और, भाई, मेरा ख्याल है कि अपने कारिन्दा से बात करने का समय हो चुका है।"

पावेल पेट्रोविच अपनी कुर्सी छोड़ कर उठ खड़ा हुआ।

"हाँ," उसने विशेष रूप से बिना किसी की ओर देखते हुए कहा—"सचमुच पाँच वर्ष तक इस देहाती वातावरण में हम लोगों की तरह जीवन बिताना बहुत बुरा हुआ। इससे हमारे मानसिक उत्कर्ष का ह्रास हुआ है क्योंकि हम अपने युग के उच्च कोटि के विद्वानों के विचारों से पूर्णतः अनभिज्ञ रहे हैं। व्यक्ति इस बात की चेतना प्राप्त होने के पूर्व ही जड़ मूर्ख बन जाता है। यहाँ बैठे हुए तुम उस ज्ञान को सुरक्षित रखने में प्रयत्नशील हो जो तुम्हें सिखाया गया था, जब कि देखो-यह सब व्यर्थ सिद्ध हो जाता है और तुम्हें बताया जाता है कि बुद्धिमान पुरुष ऐसी मामूली बातों पर अपना समय बर्बाद नहीं करते और यह कि हम समय की गति से बहुत पिछड़ गए हैं। परन्तु किया क्या जाय? फिर भी ऐसा लगता है कि नई पीढ़ी के लोग हमसे अधिक चतुर हैं।"

पावेल पेट्रोविच धीरे से अपनी एड़ी पर घूमा और बाहर चला गया। निकोलाई पेट्रोविच ने भी उसका अनुसरण किया।

"क्या वे हमेशा इसी तरह की बातें करते हैं," जैसे ही दोनों भाइयों के बाहर जाने के बाद दरवाजा बन्द हुआ बजारोव ने शान्त होकर पूछा।

"देखो, इवजिनी, तुमने उनके साथ बहुत ही कठोर व्यवहार किया है। तुम जानते हो, तुमने उनका अपमान किया है।" आरकेडी ने कहा।

"मेरा सत्यानाश हो अगर में इन देहाती दहकानी अमीरों की चापलूसी करूँ। यह उनके अहंकार और कृत्रिमता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है-केवल अहंकार, छल और दिखावा। अगर उनकी प्रकृति ऐसी है तो वे सेन्ट पीटर्सबर्ग जाकर क्यों नहीं रहते···अच्छा, इनके बारे

में बहुत कुछ जान लिया। इतना काफी है। आज मुझे एक अद्भुत जल-जन्तु मिला है। उसका नाम है 'डाइटिसकस मार्जिनेटस'। यह जीव बहुत कम मिलता है, तुम जानते हो? तुम्हें दिखाऊँगा।"

"मैंने तुमसे इनका इतिहास बताने का वायदा किया था न?" आरकेडी ने कहना शुरू किया।

"किसका इतिहास इस जल-जन्तु का?"

"मजाक छोड़ो, इवजिनी। अपने चाचा का इतिहास। तुम देखोगे कि वे उस तरह के आदमी नहीं हैं जैसा कि तुम सोचते हो। वे उपहास के पात्र न होकर करुणा के पात्र हैं।"

"मैं इससे इन्कार तो नहीं कर रहा, लेकिन तुम इस बात पर इतना जोर क्यों दे रहे हो?"

"नहीं, हमें हमेशा न्याय का व्यवहार करना चाहिये, इवजिनी?"

"मैं तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझा।"

"नहीं, सुनो तो सही।"

और आरकेडी ने बजारोव को अपने चाचा का इतिहास सुनाया जो पाठकों को अगले अध्याय में पढ़ने को मिलेगा।

७

अपने छोटे भाई निकोलाई पेट्रोविच की भांति पावेल पेट्रोविच किरसानोव ने प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त की थी और उसके बाद अनुचरों की सेना* में भर्ती हुआ था। वह बचपन से ही अत्यधिक सुन्दर था। उसमें आत्म-विश्वास और विनोदप्रियता की आदत जन्मजात थी। वह किसी को भी प्रसन्न करने में समर्थ था। जैसे ही उसे सैनिक कमीशन मिला उसने समाज में विचरण करना प्रारम्भ कर दिया। उसकी हर बात पर लोग ध्यान देते थे और वह अपनी हर प्रकार की उचित-अनुचित इच्छा को पूरा कर लेता था। यहाँ तक कि उसकी मूर्खता-पूर्ण बातें और बनावटी व्यवहार भी उसके व्यक्तित्व को चमकाने में

*उस समय सामन्तों के लड़के महाराज की सेना में अनुचर नियुक्त होते थे।

सहायक थीं। स्त्रियाँ उसे देख कर उन्मत्त हो जाती थीं। पुरुष उसे दम्भी कहते और उससे कुढ़ते। जैसा कि पहले बताया जा चुका है वह अपने भाई के साथ उसी मकान में रहता था। अपने भाई के प्रति उसके मन में सच्चा और अटूट स्नेह था यद्यपि इन दोनों में कोई समानता न थी। निकोलाई पेट्रोविच एक पैर से हल्का सा लंगड़ाता था। उसका मुखमंडल छोटा, दयालुतापूर्ण परन्तु कुछ-कुछ उदासी से भरा हुआ था। आँखें काली और छोटी थीं। बाल मुलायम और घने थे। वह आराम की जिन्दगी बिताने का शौकीन था परन्तु साथ ही वह पड़ा-पड़ा पढ़ता रहता और सभा-सुसाइटियों से यथा सम्भव दूर रहता। पावेल पेट्रोविच ने कभी भी घर पर रह कर सन्ध्या का समय व्यतीत नहीं किया। वह अपने साहस और शारीरिक स्फूर्ति के लिए प्रसिद्ध था (उसने उस समय के नौजवानों में कसरत का शौक पैदा कर दिया था।) पढ़ाई के मामले में उसने पाँच या छः से अधिक फ्रेंच भाषा की पुस्तकें नहीं पढ़ी थीं। अट्ठाईस वर्ष की अवस्था में उसने 'कप्तान' का पद प्राप्त कर लिया था। उसका भविष्य बहुत उज्जवल दिखाई पड़ रहा था। अचानक एकाएक सारी बातें पलट गईं।

उस समय सेन्ट पीटर्सबर्ग के समाज में एक स्त्री थी-रा'''नाम की एक राजकुमारी जो यदा-कदा दिखाई दे जाती थी जिसे आज भी बहुत से व्यक्ति याद करते हैं। उसकी शादी एक ऊँचे घराने के, इज्जतदार, सुन्दर किन्तु कुछ-कुछ बेवकूफ पति के साथ हुई थी। उसके कोई सन्तान नहीं थी। उसकी यह आदत थी कि अचानक, बिना किसी पूर्व निश्चित योजना के वह विदेश चल देती और कभी अप्रत्याशित रूप से पुनः रूस में आ धमकती। इस प्रकार वह एक प्रकार का अद्भुत जीवन व्यतीत कर रही थी। सर्वसाधारण में वह एक दुश्चरित्र स्त्री समझी जाती थी जो सदैव भोग-विलास में आकंठ निमग्न रहती थी। नृत्यों में वह तब तक नाचती रहती जब तक कि थक कर चूर-चूर न हो जाती। नवयुवकों के साथ हंसी मजाक करती जिन्हें वह रात के भोजन से पूर्व अपने कक्ष में बुला कर उनका मनोरंजन करती जब कि रात को

वह रोती और प्रार्थना करती। शान्ति पाने में असमर्थ होकर कभी कभी वह अत्यन्त व्यग्रतापूर्वक सुबह तक अपने कमरे में इधर से उधर घूमती, वेदना से पीड़ित होकर हाथ मलती या कोई धार्मिक पुस्तक लिये बिल्कुल निराश और पीली पड़ कर बैठी रहती। किन्तु दिन निकलते ही वह एक बार पुनः फैशन की मूर्ति बन जाती, इधर-उधर मिलने जाती, चहकती, गप्पें लड़ाती और विक्षेप डालने वाली प्रत्येक बात में निर्भय होकर कूद पड़ती। उसकी देह लता अत्यन्त भव्य थी। उसके सुनहले घने केश लहरदार सुनहरी गोटे के समान घुटनों से नीचे तक लहराते रहते थे, लेकिन कोई भी उसे सुन्दर नहीं कह सकता था। उसके चेहरे पर सब से अधिक आकर्षक वस्तु उसके नेत्र थे और उसके ये नेत्र, जो भूरे और अपेक्षाकृत छोटे थे, भी इतने आकर्षक नहीं थे, जितनी कि उसकी चितवन अत्यधिक चंचल और गहरी थी जिसमें सबके प्रति शैतान की सी उपेक्षा और दृढ़ता थी। साथ ही जिसमें घोर निराशा भरी हुई थी। संक्षेप में उसकी चितवन गूढ़ पहेली से परिपूर्ण थी उन नेत्रों में एक अद्भुत चमक थी। यह चमक उस समय भी विद्यमान रहती थी जब वह व्यर्थ की गप्पें लड़ाने में व्यस्त रहती थी। वह अत्यन्त आकर्षक पोशाक पहनती थी। पावेल पेट्रोविच से उसकी मुलाकात एक नृत्य में हुई थी। यहाँ उसने उसके साथ एक विशेष प्रकार का नृत्य नाचा जिसे नाचते समय उस स्त्री ने एक भी शब्द ऐसा नहीं बोला जो उसकी बुद्धिमत्ता का परिचय देता। उसी समय वह उसके प्रेम में बुरी तरह पागल हो गया। प्रत्येक मामले में विजय प्राप्त करने का अभ्यस्त होने के कारण यहाँ भी उसने विजय प्राप्त की परन्तु उसकी तृष्णा की तृप्ति न हो सकी। इसके विपरीत वह और भी दृढ़ता और अतृप्ति के साथ उसके प्रेम में डूब गया जिसमें उसके पूर्ण आत्म-समर्पण के क्षणों में भी कोई ऐसी बात अविकल रूप से गुप्त रह गई जिस पर पावेल पेट्रोविच प्रारम्भ से ही अधिकार पाने में असमर्थ रहा था। उसके हृदय में क्या रहस्य छिपा हुआ था उसे ईश्वर के अतिरिक्त और कोई भी जानने में असमर्थ था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी दैवी शक्ति

के वशीभूत थी जिसका रहस्य स्वयं उसके लिये भी अगम्य था। यह दैवी शक्ति उसे मन माने खेल खिला रही थी जिसकी आज्ञाओं के सम्मुख वह अपने को पूर्णरूप से अशक्त पाती थी। उसके व्यवहार में असंगतताओं की भरमार थी। केवल उसके वे पत्र ही उसके पति के हृदय में अपने अधिकारों के प्रति सन्देह जागृत कर सकते थे जो उसने एक ऐसे व्यक्ति को लिखे थे जो उससे पूर्णतया अपरिचित था। उस समय उसकी प्रेम लीलाओं पर शोक के बादल छा रहे थे। वह जिस व्यक्ति को प्रेम करती थी उसके साथ उसने कभी भी हँसी मजाक नहीं किया था। वह परेशान सी होकर केवल बैठी-बैठी उसकी ओर देखा करती और उसकी बातें सुना करती थी। कभी-कभी और वह भी अकस्मात यह परेशानी भयंकर भय में बदल जाती थी। उसका चेहरा वहशी और मुरदे के समान भयंकर हो उठता। उस समय वह स्वयं को अपने शयन-कक्ष में बन्द कर लेती और उसकी नौकरानी ताले के छेद से कान लगा कर निरन्तर उसकी सुबकियों की धीमी आवाज सुना करती। अक्सर पावेल पेट्रोविच ऐसी मुलाकातों के उपरान्त अपने घर को लौटता तो उसका हृदय ऐसी कड़वाहट और व्यग्रता से भर उठता जो असफलताओं के समय उत्पन्न होती है। "मैं इससे अधिक और क्या चाहता हूँ ?" वह स्वयं से प्रश्न करता जब कि उसका हृदय वेदना से क्लान्त बना रहता था। उसने उसे एक बार एक अंगूठी भेंट की जिसके पत्थर पर स्फिंक्स* का चित्र खुदा हुआ था।

"यह क्या है ?" उसने पूछा था—"स्फिंक्स है ?"

"हाँ", उसने उत्तर दिया था, "और यह स्फिंक्स तुम हो।"

"मैं ?" उसने पूछा और पावेल पेट्रोविच की तरफ अपनी उसी दुर्बोध दृष्टि से देखा। "यह बहुत अधिक चापलूसी का प्रदर्शन है, समझे !" उसने अस्पष्ट व्यंग्य के स्वर में कहा जब कि उसकी दृष्टि में वही अद्भुत चमक थी।

*ग्रीक पौराणिक गाथाओं में वर्णित एक ऐसा प्राणी जिसका धड़ सिंह का और सिर स्त्री का माना जाता है।

राजकुमारी रा—द्वारा प्रेम किए जाने पर भी पावेल पेट्रोविच बड़ा दुखी रहता था लेकिन जब पावेल के प्रति राजकुमारी के प्रेम की उष्णता मन्द हो गई—और जो बहुत शीघ्र मन्द हुई—वह लगभग पागल सा हो गया। वह प्रेम और ईर्ष्या से उद्भ्रान्त बन गया। ईर्ष्याकुल होकर उसने उसे परेशान करना प्रारम्भ कर दिया। वह उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गया। वह जहाँ कहीं जाती पावेल पेट्रोविच उसके पीछे लग जाता। अन्त में वह इसके अत्यन्त आग्रहपूर्ण सन्देशों से उकता कर विदेश चली गई। पावेल पेट्रोविच ने भी अपने पद से त्याग पत्र दे दिया यद्यपि ऐसा न करने के लिए उसके मित्रों और बड़े अफसरों ने उसे बहुत समझाया। त्याग-पत्र देकर वह भी राजकुमारी के पीछे चल पड़ा। वह विदेश में चार साल तक रहा। कभी उसका पीछा करता और कभी जानबूझ कर उसे दृष्टि से ओझल हो जाने देता। वह अपनी इस हरकत पर स्वयं लज्जित होता रहता था। अपनी आत्म-हीनता पर उसे घृणा होती। लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। उसकी मूर्ति-उसकी वह छलपूर्ण, मोहनी और लुभावनी मूर्ति उसके हृदय में बड़ी गहरी जड़ें जमा चुकी थी। बेडेन नामक नगर में भाग्य ने उन्हें पुनः एक दूसरे से मिला दिया। उस समय की राजकुमारी की उन्मत्तता को देखकर पावेल को ऐसा लगा जैसे उसने उसे इतनी गहराई और आवेश के साथ कभी भी प्यार नहीं किया था। परन्तु मुश्किल से एक महीना भी नहीं बीतने पाया था कि यह सब समाप्त हो गया। प्रेम की वह ज्योति अग्निशिखा की भांति अंतिम चमक दिखा कर सदैव के लिए बुझ गई। इस बात को जानते हुए भी कि उन्हें अलग होना ही पड़ेगा, पावेल कम से कम अपनी मित्रता को सुरक्षित रखना चाहता था, जैसे कि मानो ऐसी स्त्री से मित्रता रखना कोई सम्भव बात है। बेडेन से वह चुपचाप खिसक गई और उसके पश्चात् दृढ़तापूर्वक उसकी उपेक्षा करती रही। किरसानोव रूस लौट आया और पूर्ववत् जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करने लगा परन्तु अपना पुराना स्थान प्राप्त करने में असमर्थ रहा। वह उद्भ्रान्त व्यक्ति के समान जगह जगह मारा मारा फिरता रहा। वह अब भी सभा-सुसाईटियों में

भाग लेता था और अपनी सांसारिक व्यक्तियों जैसी पुरानी भोग-विलास की आदतों का प्रदर्शन करता रहता था। इसी दौरान में उसे कुछ नारियों को पुनः विजय करने का गर्व प्राप्त हुआ। इतना होने पर भी अब उसके मन में अपने लिए या दूसरों के लिए कोई विशेष आशा नहीं रही थी। इसीलिए उसने अपनी स्थिति को सुधारने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वह धीरे धीरे वृद्ध होने लगा। उसके बाल सफेद हो गए। शाम को अविवाहित मित्रों के साथ क्लब के उदासीनतापूर्ण और चिड़चिड़ाहट से भरे हुए वातावरण में अपना समय बर्बाद करना उसके जीवन का एक अनिवार्य अङ्ग बन गया। यह बहुत बुरे लक्षण थे। विवाह को छोड़ कर इस समय उसके मन में और कोई भी बात नहीं उठती थी। इस प्रकार नीरस, निर्जन, तीव्र-अत्यधिक तीव्र गति से दस वर्ष का समय निकल गया। समय जितनी जल्दी रूस में बीत जाता है उतनी जल्दी दुनियाँ के किसी भी हिस्से में नहीं बीतता। लोगों का कहना है कि जेल में यह और भी जल्दी बीत जाता है। एक दिन क्लब में डिनर खाते समय पावेल पेट्रोविच ने राजकुमारी रा-की मृत्यु का समाचार सुना। उन्माद की अवस्था में पेरिस में उसकी मृत्यु हुई थी। वह मेज से उठ खड़ा हुआ और बहुत देर तक कमरे में इधर से उधर घूमता रहा। घूमते हुए कभी वह ताश खेलने वालों के पास जा खड़ा होता और वहाँ पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा का खड़ा रह जाता। वह अपने अभ्यस्त समय से पूर्व घर नहीं पहुँच सका। कुछ समय उपरान्त उसे एक पार्सल मिला जिसमें वह अंगूठी थी जो उसने राजकुमारी को भेंट की थी। राजकुमारी ने उस अंगूठी पर 'क्रास' का चिह्न बना दिया था और लोगों से उसे बताने के लिए कहा था कि उस पहेली का उत्तर 'क्रास' है।

यह घटना सन् १८४८ के आरम्भ में घटी थी, बिल्कुल उसी समय जब निकोलाई पेट्रोविच अपनी पत्नी की मृत्यु के उपरान्त सेन्ट पीटर्सबर्ग आया था। जब से निकोलाई पेट्रोविच देहात में जाकर रहने लगा था तब से पावेल पेट्रोविच से उसकी मुलाकात नहीं हो पाई थी। निकोलाई पेट्रोविच की शादी उन्हीं दिनों हुई थी जब पावेल पेट्रोविच

और उस राजकुमारी का परस्पर परिचय हुआ था। विदेश में भटकने के बाद वह अपने भाई के पास इस आशा से गाँव गया था कि वहाँ से सुखपूर्ण पारिवारिक वातावरण में कुछ महीने रहे, परन्तु वह वहाँ एक सप्ताह से अधिक नहीं रह सका। दोनों भाइयों की स्थिति में बहुत अंतर पड़ गया था। १८४८ में यह अंतर नगण्य सा था। निकोलाई पेट्रोविच की पत्नी का देहान्त हो चुका था और पावेल पेट्रोविच पुरानी याद को भूल चुका था। राजकुमारी की मृत्यु के बाद उसने उसकी स्मृति को भुलाने का भरसक प्रयत्न किया था। परन्तु जब कि निकोलाई पेट्रोविच अपने पूर्व जीवन पर सन्तोष प्रकट करता था, उसका पुत्र उसकी आँखों के आगे पल कर बड़ा हो रहा था, इसके विपरीत पावेल एकाकी अविवाहित व्यक्ति था। उसका जीवन धुंधले अवसान की ओर बढ़ रहा था जहाँ आशा का स्थान पश्चाताप और पश्चाताप का स्थान आशा ग्रहण करती रहती है। जब जवानी बीत चुकी होती है और वृद्धावस्था के आने में अभी देर होती है।

जीवन का यह भाग किसी भी अन्य व्यक्ति से पावेल पेट्रोविच के लिए अधिक दुखदाई था क्योंकि अपने भूतकाल के साथ वह अपना सर्वस्व खो चुका था।

"मैं तुम्हें 'मैरिनो' चलने के लिए आमन्त्रित नहीं करूँगा," एक बार निकोलाई पेट्रोविच ने उससे कहा था (उसने अपनी पत्नी के सम्मान में अपनी जायदाद का उक्त नाम रखा था); "जब मेरी प्यारी पत्नी जीवित थी तभी तुम्हें वहाँ का जीवन अत्यन्त नीरस लगता था और अब, मुझे भय है, वहाँ की उदासी तुम्हें मृत्यु के समान भयानक लगेगी।"

"मैं उस समय बेवकूफ और व्याकुल था," पावेल पेट्रोविच ने उत्तर दिया था; "अब मैं बुद्धिमान नहीं तो कम से कम पहले से अधिक गम्भीर हो गया हूँ। अब, इसके विपरीत, अगर तुम्हें कोई अड़चन न हो तो मैं तुम्हारे साथ रहना पसन्द करूँगा।"

उधर में निकोलाई पेट्रोविच ने उसे आलिंगन पाश में बांध लिया था। उक्त वार्तालाप के लगभग डेढ़ वर्ष उपरान्त पावेल पेट्रोविच ने अपने उस विचार को कार्य रूप में परिणत किया। परन्तु जब एक बार वह आकर देहात में बस गया तो फिर कभी बाहर नहीं गया। उन तीनु जाड़ों में भी वह बाहर नहीं गया जब निकोलाई पेट्रोविच सेन्ट पीटर्सबर्ग जाकर अपने पुत्र के साथ रहा था। उसने अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। वह अधिकतर अंग्रेजी पुस्तकें पढ़ा करता था। वास्तव में उसका सम्पूर्ण जीवन अँग्रेजी ढंग पर निर्मित हुआ था। वह अपने पड़ोसियों से बहुत कम मिलता जुलता था और केवल चुनावों के समय ही बाहर निकलता था। वहाँ भी वह प्रायः खामोश रहा करता था। वह तभी बोलता था जब उसे दूसरे प्राचीन विचारधारा के जमींदारों को अपने नरम दल के विचार सुना कर परेशान और उत्तेजित करना होता था। फिर भी वह नई पीढ़ी के युवकों से सदैव दूर रहता था। दोनों ही दल उसे घमन्डी समझते थे लेकिन दोनों ही उसकी सुरुचिपूर्ण, अमीरी, सांस्कृतिक चाल-ढाल के कारण उसका सम्मान करते थे। इस सम्मान के अन्य कारणों में उसकी प्रेम के क्षेत्र में प्राप्त की हुई प्रसिद्धि, उसका पहनने ओढ़ने का सुन्दर ढङ्ग; सबसे बढ़िया होटलों के सबसे अच्छे कमरों में ठहरने की आदत; उसका खाना खाने का सुरुचिपूर्ण ढङ्ग और इस बात के कारण कि उसने एक बार लुई फिलिप की मेज पर एक साथ बैठ कर विलिंगटन के साथ खाना खाया था; हमेशा अपने साथ असली चाँदी का एक कपड़ों का सूटकेश और एक छोटा सा नहाने का टब रखना; दुष्प्राप्य इत्रों को पसीने की तरह व्यवहार करना; ताश के एक खेल का प्रसिद्ध खिलाड़ी होना-यद्यपि इसमें वह सदैव हारता ही था, आदि कारण थे। और सबसे अन्तिम कारण, जिसकी वजह से वे उसका सम्मान करते थे, उसकी पवित्र सतर्कता थी। स्त्रियाँ उसे आकर्षक परन्तु दुखी प्राणी समझती थीं परन्तु वह उनके साथ कभी भी मिलता जुलता नहीं था।

"समझे भाई इवजिनी," आरकेडी ने कहानी समाप्त करते हुए कहा—"अब तुम्हें मालूम हुआ कि मेरे चाचा के साथ तुमने कितना

अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है। यह कहना तो व्यर्थ ही है कि उन्होंने कितनी बार मेरे पिता की मुसीबतों से रक्षा की है, उन्हें अपना सब धन दे दिया—शायद तुम यह नहीं जानते कि अभी जायदाद का बँटवारा नहीं हुआ है—फिर भी वह हमेशा हरेक की मदद करने को तैयार रहते हैं और हमेशा किसानों का ही पक्ष लेते हैं। जब वह किसानों से बात करते हैं तो मुँह बना कर बोलते हैं और बात करते समय यूडीकोलोन सूँघते रहते हैं......"

"बिल्कुल ठीक-अपनी चेतना बनाए रखने के लिए वे ऐसा करते हैं," बजारोव ने बीच में टोका।

"सम्भव है, परन्तु उनका हृदय अच्छा है। वे मूर्ख नहीं हैं। उन्होंने मुझे सदैव अच्छी सलाह दी है...विशेष रूप से . ...विशेषकर स्त्रियों के सम्बन्ध में।"

"आह! खुदा फजीहत, दीगरा नसीहत। हम इन बातों को खूब समझते हैं।"

"थोड़े में इतना ही कहना है कि," आरकेडी कहता रहा-"कि वह बहुत दुखी हैं, सच मानो, उनको नफरत करना बहुत शर्म की बात है।"

"परन्तु उनसे नफरत कौन करता है, भाई?" बजारोव ने विरोध करते हुए कहा-"मेरा तो यह कहना है कि जिस आदमी ने एक औरत के प्रेम के पीछे अपनी पूरी जिन्दगी बर्बाद कर दी और उसमें हार खाकर अब टूट गया है-इस तरह का आदमी आदमी नहीं है। उसे पुरुष नहीं कहना चाहिए। तुम कहते हो कि वह दुखी है: इस बात को तुम अधिक जानते होगे, परन्तु अभी तक उन्होंने अपनी मूर्खताएँ पूरी तरह से नहीं छोड़ पाई हैं। मुझे पूरा यकीन है कि वह वास्तव में इस बात के प्रति पूर्ण विश्वस्त हैं कि वह तेज आदमी हैं क्योंकि वह 'गैलिग्नानी' जैसी रद्दी चीज पढ़ते हैं और कभी कभी एक आध किसान का पक्ष लेकर उसे कोड़ों से पिटने से बचा लेते हैं।"

"लेकिन भाई उस शिक्षा का तो ख्याल करो जो उन्हें दी गई थी और उस युग का भी जिसमें वे रहे हैं," आरकेडी ने अपनी राय जाहिर की।

"शिक्षा," बजारोव बोला—"हरेक आदमी का फर्ज है कि वह अपने आप को स्वयं ही शिक्षा दे—जैसे कि, मिसाल के तौर पर मुझे ही ले लो···और जहाँ तक युग विशेष का प्रश्न है, मैं उस पर निर्भर क्यों रहूँ ? अच्छा तो यह हो कि युग हम पर निर्भर रहे--हम उसका निर्माण करें। नहीं, प्रिय मित्र, यह सब भ्रष्टता और ओछापन है। और, मैं जानना चाहूँगा कि स्त्री-पुरुष के कुछ रहस्यपूर्ण सम्बन्धों का निर्माण किस तरह होता है। हम जैसे शरीर-शास्त्र-वेत्ता इन सम्बन्धों को खूब अच्छी तरह समझते हैं। उदाहरण के लिये तुम आँख की रचना को ही ले लो। कहाँ है वह दुर्बोध दृष्टि जिसके विषय में तुम बातें करते हो। यह सब रूमानी भावनाएं हैं, कमजोर, सड़ी हुई और बनावट से परिपूर्ण। अब अच्छा हो कि चल कर उस जल-जन्तु का निरीक्षण किया जाय।"

और दोनों बजारोव के कमरे को चले गए जिसमें पहले से ही चीर-फाड़ और उससे सम्बन्धित दवाइयों तथा सस्ती तम्बाकू की गन्ध भर रही थी।

८

पावेल पेट्रोविच के लिए अपने भाई और नए कारिन्दे की बातचीत के समय वहाँ अधिक देर तक ठहरना मुश्किल हो गया। कारिन्दा लम्बे कद, मधुर और स्पष्ट आवाज तथा धूर्ततापूर्ण आँखों वाला व्यक्ति था जो अपने मालिक की प्रत्येक बात पर कह उठा—"क्यों, निश्चय ही, श्रीमान, बिल्कुल सच बात है, मालिक!" और सभी किसानों को चोर और शराबी सिद्ध करने का प्रयत्न करता था। जमींदारी का फार्म जिसे नवीन प्रणाली के अनुसार पुनः व्यवस्थित किया गया था, बिना तेल लगे हुए बैलगाड़ी के पहिए के समान और कच्ची लकड़ी के बने हुए फर्नीचर के समान लड़खड़ा रहा था। निकोलाई पेट्रोविच इस बात से निराश नहीं हुआ था, लेकिन कभी-कभी वह गहरी सांसें भरता और

चिन्तित हो उठता। उसने यह महसूस किया कि बिना पैसे के इस काम को आगे चलाना कठिन है परन्तु उसका पूरा धन समाप्त हो चुका था। आरकेडी ने सच बात कही थी। पावेल पेट्रोविच अनेक बार अपने भाई की सहायता कर चुका था। जब जब उसने अपने भाई को घबड़ाते और किंकर्त्तव्यविमूढ़ होते देखा, उसकी मदद की। ऐसे समय पावेल पेट्रोविच धीरे से खिड़की के पास जाता और अपनी जेबों में हाथ डाल कर बड़-बड़ाता—"सब पैसे की माया है", और उसे कुछ धन दे देता। परन्तु उस दिन उसके पास कुछ भी नहीं था इसलिए उसने वहाँ से हट जाना ही उचित समझा। व्यवसायिक चिन्ताओं ने उसका जीवन दूभर बना रखा था। साथ ही उसे निरन्तर यह शंका होने लगी थी कि निकोलाई पेट्रोविच अपने उत्साह और प्रयत्न के बावजूद भी परिस्थिति को उचित रूप से सम्हालने में असमर्थ है यद्यपि वह स्वयं कभी भी इस बात को नहीं बता सका कि गल्ती कहाँ पर हो रही है। "मेरे भाई को पूरा व्यवहारिक ज्ञान नहीं है," वह अपने आप से कहता, "उसे धोखा दिया जा रहा है।" दूसरी तरफ निकोलाई पेट्रोविच अपने भाई की सूक्ष्म दृष्टि का कायल था और प्रत्येक मामले में उसकी सलाह लेता था। "मैं कोमल और निर्बल इच्छा शक्ति का व्यक्ति हूँ। मैंने अपना सारा जीवन यों ही बेकार बर्बाद कर दिया है।" वह कहता—"जब कि तुम बहुत से व्यक्तियों के सम्पर्क में आ चुके हो और उन्हें अच्छी तरह जानते हो। तुम्हारी दृष्टि बहुत पैनी और तीव्र है।" पावेल पेट्रोविच जबाब में धीरे से मुड़ कर चल देता परन्तु उसने कभी भी अपने भाई की बुद्धि की भर्त्सना नहीं की।

"कौन है? अन्दर आओ," फेनिच्का की आवाज सुनाई दी।

"मैं हूँ," दरवाजा खोलते हुए पावेल पेट्रोविच ने कहा।

फेनिच्का उस कुर्सी पर से उछल कर खड़ी हो गई जिस पर वह अपने बच्चे को लिये बैठी हुई थी। उसने फुर्ती से बच्चे को एक लड़की की गोद में दे दिया जो उसे तुरन्त कमरे से बाहर ले गई और शीघ्रता पूर्वक अपने रूमाल को ठीक किया।

"दुःख है, अगर मैंने कोई व्याघात डाला हो," बिना उसकी ओर देखे हुए पावेल पेट्रोविच ने कहना प्रारम्भ किया, "मैं सिर्फ तुमसे पूछना चाहता था......मेरा ऐसा ख्याल है कि आज कोई आदमी शहर जा रहा है......क्या तुम उसके द्वारा मेरे लिये थोड़ी सी हरी चाय की पत्तियाँ मंगा दोगी, महरबानी होगी।"

"जा रहा है, साहब," फेनिच्का ने जबाब दिया; "आपको कितनी चाहिये ?"

"ओह, आधा पौंड काफी होगी। मैं देख रहा हूँ कि यहाँ तो तुमने बहुत तब्दीली कर रखी है," उसने आगे कहा और चारों तरफ एक तेज निगाह डाली जिसमें फेनिच्का का मुख मण्डल भी शामिल था।

"आह, आपका मतलब इन पर्दों से है; ये मुझे निकोलाई पेट्रोविच ने दिये थे। लेकिन ये तो बहुत दिनों से टंगे हुए हैं।"

"ठीक है; और मैं भी तो इस कमरे में आज बहुत दिनों बाद आया हूँ। अब तो यहाँ बहुत अच्छा लगता है।"

"जी हाँ, इसके लिये निकोलाई पेट्रोविच को धन्यवाद है," फेनिच्का धीरे से बोली।

"क्या तुम अपने पहले कमरे की अपेक्षा यहाँ अधिक आराम से हो ?" पावेल पेट्रोविच ने बिना मुस्कराहट के, नम्रतापूर्वक पूछा।

"जी हाँ।"

"अब तुम्हारे पुराने कमरे में कौन रहता है ?"

"धोबिन।"

"आह।"

पावेल पेट्रोविच खामोश हो गया। "वह अब जा रहा है," फेनिच्का ने सोचा; परन्तु वह नहीं गया। वह उसके सामने इस तरह खड़ी रही मानो उसके पैर उसी जगह जमीन से चिपक गये हों। घबड़ाहट के मारे वह अपनी उंगलियाँ उमेठने लगी।

"तुमने बच्चे को बाहर क्यों भेज दिया," अन्त में पावेल पेट्रोविच बोला—"मुझे बच्चे अच्छे लगते हैं। जरा उसे मुझे दिखा तो दो।

फेनिच्का घबड़ाहट और प्रसन्नता के मारे लाल हो उठी। वह पावेल पेट्रोविच से डरती थी। वह उससे बहुत कम और वह भी कभी ही बोलता था।

"दुन्याशा," वह चिल्लाई, "मित्या को यहाँ भीतर ले आओ (वह घर के किसी भी व्यक्ति के प्रति 'तू' सम्बोधन का व्यवहार कभी भी नहीं करती थी)। नहीं, एक मिनट ठहरो, पहले उसे कपड़े पहना लो।"

फेनिच्का दरवाजे की ओर बढ़ी।

"कोई बात नहीं है," पावेल पेट्रोविच बोला।

"जरा ठहरिये," फेनिच्का ने उत्तर दिया और गायब हो गई।

अकेला रह जाने पर पावेल पेट्रोविच ने गौर से कमरे का निरीक्षण किया। वह छोटा, नीची छत वाला कमरा स्वच्छ और आरामदेह था। फर्श के तख्तों से ताजी पालिश की गन्ध आ रही थी। वीणा के आकार की पीठ वाली कुर्सियाँ दीवाल के सहारे सजी हुई थीं। उन्हें स्वर्गीय जनरल ने पोलेण्ड के युद्ध के समय खरीदा था। एक कोने में मलमल के चंदोवे के नीचे एक पलङ्ग बिछा हुआ था। उसके पास ही एक बड़ा सन्दूक रखा था जिस पर लोहे की पत्तियाँ जड़ी हुई थीं। सामने के दूसरे कोने में सन्त निकोलस जैसी एक मूर्त्ति के सामने, जो विशाल और काली थी, एक छोटा सा दीपक जल रहा था। चीनी मिट्टी का एक छोटा सा अंडा उस मूर्त्ति के मुखमण्डल के चारों ओर फैले हुए प्रभा-मण्डल के ऊपर एक लाल फीते से बँधा हुआ मूर्त्ति की छाती तक लटक रहा था। खिड़की के दासे पर चमकते हुए हरे इमृतबान रखे हुए थे जिनमें पिछले वर्ष डाले हुए मुरब्बे भरे हुए थे, जिनकी सावधानी पूर्वक लगाई हुई कागज की डाटों पर फेनिच्का की सुन्दर लिखावट में लिखा हुआ था—'गूजबेरी'। निकोलाइ पेट्रोविच को वह मुरब्बा विशेष रूप से प्रिय था। छत से एक लम्बी रस्सी के सहारे एक पिंजरा लटका हुआ था जिसमें कतरी हुई पूँछ वाला 'सिस्किन' नामक पक्षी बन्द था। वह बारबार चहचहा और उछल कूद मचा रहा था जिससे वह पिंजरा इधर से उधर हिल रहा था। उसमें उसके खाने के लिए रखे हुए अनाज के

दाने पट-पट की आवाज के साथ नीचे फर्श पर गिर रहे थे। खिड़कियों के बीच, दीवाल पर दराजों वाली एक अलमारी के ऊपर निकोलाई पेट्रोविच के कुछ भद्दे पोजों वाले पुराने चित्र लटके हुए थे जिन्हें एक सफरी फोटोग्राफर ने उतारा था। इन्हीं के बगल में खुद फेनिच्का का एक चित्र था जो बहुत ही भद्दा था क्योंकि उसमें चित्र की काली चौखट के अन्दर एक अस्पष्ट सी नेत्रहीन मुखाकृति कातर भाव प्रकट करती हुई देख रही थी। चित्र का शेष भाग पूर्णतः अस्पष्ट था। फेनिच्का की तस्वीर के ऊपर जनरल परमोलोव एक सरकेशियन लबादा डाले हुए, दूर दिखाई देते हुए काकेशस पहाड़ की ओर घूर कर देख रहा था। उसकी भौंह के ऊपर जूते के आकार वाला एक रेशमी पिन-कुशन लटक रहा था।

पाँच मिनट बीत गए। दूसरे कमरे से कपड़ों की सरसराहट और फुसफुस बात करने की ध्वनि सुनाई दी। पावेल पेट्रोविच ने आलमारी में से बहुत स्तैमाल की हुई एक पुस्तक निकाली। यह मासाल्स्की का 'रोयल स्त्रेलत्सी' नामक ग्रन्थ था। उसने उसके अनेक पृष्ठ पलट डाले। ···दरवाजा खुला और फेनिच्का मित्या को गोद में लिए हुए अन्दर आई। उसने बच्चे को एक लाल कमीज पहना दी थी जिसके कालर पर कलाबत्तू का काम हो रहा था। उसका मुँह साफ और बाल कढ़े हुए थे। वह जोर जोर से सांस लेता हुआ, जैसे कि सभी स्वस्थ बालकों का स्वभाव होता है, अपने नन्हें हाथ पैरों को फेंक रहा था। उस साफ सुन्दर कमीज का भी उस पर प्रभाव पड़ा था। उसके सम्पूर्ण नन्हें से गुदकारे शरीर पर प्रसन्नता नाच रही थी। फेनिच्का ने अपने बालों को संवार कर रूमाल बदल लिया था परन्तु यदि वह यह सब न करती तब भी कोई हर्ज नहीं था। क्योंकि संसार में एक सुन्दरी माता की गोद में एक स्वस्थ बालक से बढ़कर अन्य कोई भी वस्तु सुन्दर नहीं हो सकती।

"कैसा प्यारा गोल मटोल बच्चा है ?" पावेल पेट्रोविच ने प्रसन्न होते हुए कहा और अपनी उँगलियों के लम्बे नाखूनों से मित्या की गोल

ठोड़ी गुदगुदा दी। बच्चे ने सिस्किन पक्षी की ओर देखा और किलकारी मारी।

"ये चाचा हैं," फेनिच्का उसके ऊपर झुक कर उसे थोड़ा सा हिलाती हुई बोली। इसी बीच दुन्याशा ने खिड़की के ताखे पर, चुपचाप जला कर एक धूपदानी रख दी जिसके पास एक तांबे का सिक्का पड़ा हुआ था।

"यह कितने दिन का है ?" पावेल पेट्रोविच ने पूछा।

"छः महीने का, सातवाँ चल रहा है, इस ग्यारह तारीख को सात का हो जायगा।"

"क्या आठ का नहीं होगा, फेदोस्या निकोलेव्ना ?" दुन्याशा ने डरते हुए कहा।

"नहीं, सात का, मुझे ठीक तरह याद है।" बच्चा फिर कुलबुलाया, माँ की छाती पर निगाहें जमाईं और सहसा अपनी पाँचों नन्हीं उँगलियों से उसकी नाक और मुँह को ढक लिया।

"शैतान, बदमाश," फेनिच्का ने बिना अपना मुँह हटाए हुए कहा।

"यह बिल्कुल मेरे भाई को पड़ा है," पावेल पेट्रोविच ने कहा।

"तो और किसको पड़ता ?" फेनिच्का ने सोचा।

"हाँ," पावेल ने मानो अपने आप से कहा—"बिल्कुल समानता है।"

उसने उदास दृष्टि से फेनिच्का की ओर गौर से देखा।

"ये चाचा हैं," उसने इस बार बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाते हुए कहा।

"आह ! पावेल ! तो तुम यहाँ हो," अचानक निकोलाई पेट्रोविच की आवाज आई।

पावेल पेट्रोविच घूर कर देखता हुआ उसकी ओर घूमा किन्तु भाई ने अपने चेहरे पर प्रसन्नता और कृतज्ञता के भाव ऐसी सहृदयता के साथ व्यक्त किए कि पावेल उत्तर में बरबस मुस्करा उठा।

"बड़ा सुन्दर बच्चा है यह तुम्हारा," वह बोला और अपनी घड़ी की ओर देखा,—"मैं अपने लिए थोड़ी सी चाय मंगाने के लिए कहने आया था।"

और लापरवाही का सा भाव दिखाते हुए, पावेल पेट्रोविच तुरन्त कमरे से बाहर चला गया।

"क्या वह अपने आप आया था?" निकोलाई पेट्रोविच ने फेनिच्का से पूछा।

"हाँ, उन्होंने दरवाजा खटखटाया और भीतर आ गए।"

"ठीक, क्या आरकेडी तुमसे दुबारा मिलने के लिए आया था?"

"नहीं। अच्छा हो कि मैं अपने पुराने कमरे में चली जाऊँ, निकोलाई।"

"किस लिए?"

"मैं सोच रही थी कि इस समय यही ठीक रहेगा।"

"नहीं······नहीं" निकोलाई पेट्रोविच ने जरा हकलाते हुए कहा और उँगलियों से अपना माथा खुजलाया। "हमें इस बारे में पहले ही सोच लेना चाहिए था······हलो पकौड़े," उसने सहसा प्रफुल्लित होकर कहा और बच्चे के पास जाकर उसका गाल चूम लिया। इसके पश्चात् थोड़ा सा झुक कर उसने फेनिच्का के हाथ को चूमा जो मक्खन की तरह सफेद बच्चे की लाल कमीज पर रखा था।

"निकोलाई पेट्रोविच क्या कर रहे हो?" उसने सकुचाते हुए कहा और अपनी आँखें नीची कर पुनः धीरे-धीरे ऊपर उठा लीं···जब उसने नीची नजरों से चञ्चल और मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट से निकोलाई की ओर देखा तो उसके नेत्रों के भाव अत्यन्त मधुर और आकर्षक लगे।

निकोलाई पेट्रोविच और फेनिच्का की मुलाकात निम्नलिखित परिस्थितियों में हुई थी। एक दिन, लगभग तीन साल पहले, निकोलाई को सुदूर देहात में स्थित एक सराय में रात काटनी पड़ी। कमरे की और कपड़ों की सफाई से वह बहुत प्रभावित हुआ "इसकी मालकिन अवश्य

कोई जर्मन महिला होनी चाहिए," उसने सोचा; परन्तु निकली एक रूसी स्त्री--लगभग ५० वर्ष की अवस्था, स्वच्छ पोशाक, आकर्षक चतुर मुखमंडल और गम्भीर स्वर। चाय पीते समय निकोलाई ने उससे बातें कीं। उसने निकोलाई की पसन्द को समझ लिया। उसी समय निकोलाई पेट्रोविच अपने नए मकान में आया था। वह किसानों को उस स्थान पर नहीं रखना चाहता था इसलिए वह कुछ नौकरों की तलाश में था। उधर सराय की मालकिन ने यात्रियों की कमी और मंहगाई का रोना रोया। निकोलाई ने उससे अपनी घर-गृहस्थी का काम सम्हालने का प्रस्ताव रखा। वह राजी हो गई। उसका मालिक बहुत दिन पहले, फेनिच्का नामक एक लड़की को छोड़कर चल बसा था। लगभग एक पखवारे में ही एरीना सविश्ना (यह फेनिच्का की माँ का नाम था।) मेरीनो आ गई और मकान के छोटे भाग में रहने लगी। निकोलाई पेट्रोविच की पसन्द अच्छी निकली। थोड़े ही समय में एरीना ने सब चीजें करीने से सजा दीं। फेनिच्का जो उस समय सत्रह साल की थी, बहुत कम दिखाई पड़ती थी। कोई उसके विषय में चर्चा भी नहीं करता था। वह चुपचाप एकाकी जीवन बिता रही थी। केवल रविवार को निकोलाई पेट्रोविच को गिरजे के किसी कोने में उसके सुन्दर चेहरे की कोमल रूपरेखा की एक झलक दिखाई पड़ती थी। इस तरह एक वर्ष से कुछ अधिक समय व्यतीत हो गया।

एक दिन एरीना उसके अध्ययन कक्ष में आई और सदैव के समान उसके सम्मान में थोड़ा सा झुक कर कहा कि उसकी लड़की की आँख में स्टोव की चिनगारी गिर पड़ी है। क्या वह उसकी सहायता कर सकता है। अधिकांश समय घर बैठ कर बिताने वाले व्यक्तियों के समान निकोलाई पेट्रोविच ने भी घरेलू डाक्टरी का अभ्यास कर लिया था। उसने होम्योपैथिक दवाइयों का एक बक्स भी ले लिया था। उसने मरीज को तुरन्त अपने पास लाने की आज्ञा दी। यह बताए जाने पर कि मालिक ने उसे अपने पास बुलाया है, फेनिच्का भय से कांप उठी परन्तु उसे माँ के साथ वहाँ जाना ही पड़ा। निकोलाई पेट्रोविच उसे

खिड़की के पास ले गया और दोनों हाथों से उसका सिर थाम लिया। उसकी जली हुई आँख का भली भांति निरीक्षण करने के उपरान्त उसने धोने की एक दवाई तजवीज की और स्वयं ही उसे बनाया भी और अपने रूमाल में से एक लम्बा टुकड़ा फाड़ कर उसे आँख धोने की तरकीब समझा दी। फेनिच्का ने उसकी बातें ध्यान से सुनी और मुड़ कर जाने लगी। "बेवकूफ लड़की, मालिक का हाथ चूम" एरीना ने कहा। निकोलाई पेट्रोविच ने अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया और स्वयं अचकचा कर उसने फेनिच्का के झुके हुए मस्तक को चूम लिया। कुछ ही दिनों में फेनिच्का की आँख ठीक हो गई परन्तु निकोलाई पेट्रोविच के ऊपर उसका जो गहरा प्रभाव पड़ा था वह शीघ्र दूर न हो सका। उसके नेत्रों के सम्मुख सदैव वही पवित्र, कोमल और भयातुरता से ऊपर उठा हुआ मुख घूमता रहता। वह उसके कोमल केशों का स्पर्श अब भी अपनी हथेलियों पर अनुभव करता था। उसे लगता जैसे उसके सम्मुख किसी के निष्कपट खुले हुए दोनों होंठ खुले हुए हैं जिनके भीतर मोती की सी स्वच्छ दन्त-पंक्ति चमक रही है। उसने फेनिच्का को गिरजे में और गौर से देखना प्रारम्भ कर दिया और उससे बातचीत करने की भी कोशिश की। पहले तो वह बहुत शर्माई और एक शाम को जब उसने निकोलाई को एक राई के खेत की मेंड़ पर होकर आते हुए देखा, वह खेत में घुस कर अनाज के ऊँचे घने पौधों के बीच में जिनके साथ अन्य अनेक प्रकार के पौधे उगे हुए थे, छिप गई जिससे उसका सामना न हो सके। राई की सुनहली बालों के बीच निकोलाई ने उसके सिर की झलक देख ली जो किसी छोटे से जंगली जानवर के समान उझक-उझक कर उसकी तरफ देख रहा था। उसने उसे नम्रतापूर्वक पुकारा—

"गुड ईवनिंग फेनिच्का! तुम जानती हो मैं काटता नहीं हूँ।"

"गुड ईवनिंग" वह धीरे से बोली परन्तु अपने छिपने की जगह से बाहर नहीं निकली।

धीरे धीरे वह उससे हिल गई परन्तु अब भी उसकी उपस्थिति में शर्माती थी। अचानक उसकी माँ एरीना हैजे से चल बसी। अब वह

क्या करती ? उसने अपनी माँ से संयमशीलता, परिष्कृति, सहज-व्यवहारिक बुद्धि और सुरुचि उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त किए थे परन्तु वह इतनी कम उम्र, इतनी एकाकी थी और निकोलाई पेट्रोविच इतना सहृदय और इतना नम्र था······इससे आगे की कथा कहना बेकार है······।

"तो मेरा भाई वास्तव में तुमसे मिलने के लिए यहाँ आया था ?" निकोलाई पेट्रोविच ने उससे पूछा, "सिर्फ खटखटाया और भीतर चला आया ?"

"जी हाँ।"

"अच्छा, यह ठीक है। लाओ मैं जरा मित्या के साथ खेल लूँ।"

और निकोलाई पेट्रोविच बच्चे को हाथ में लेकर छत की तरफ जोर जोर से उछालने लगा। इससे बच्चा ज्यादा खुश हुआ, परन्तु उसकी माँ बहुत बेचैन हो उठी। हर बार जब उसे ऊपर फेंका जाता फेनिच्का के हाथ अपने आप उसकी तरफ बढ़ जाते।

× × ×

और पावेल पेट्रोविच अपने सुसज्जित अध्ययन-कक्ष में लौट आया जिसकी दीवालों पर सुन्दर भूरे कागज मढ़े हुए थे और एक पारसी रङ्गीन कालीन की पृष्ठ भूमि पर अनेक प्रकार के हथियार टंगे हुए थे। उसमें अखरोट की लकड़ी का बना हुआ फर्नीचर, जिस पर गहरे हरे रङ्ग की मोटी मखमल मढ़ी हुई थी, आबनूस की लकड़ी की बनी पुरानी किताबें रखने की अलमारी, एक सुन्दर मेज पर सजी हुई कांसे की मूर्त्तियाँ और एक सुन्दर आरामदेह अंगीठी थी। वह सोफे पर जाकर पड़ गया और अपने हाथों को सिर के पीछे रखकर चुपचाप लेटा हुआ निराशा पूर्ण दृष्टि से छत की ओर देखता रहा। या तो वह अपने चेहरे पर आए हुए भावों को दीवालों से भी छिपाने का प्रयत्न कर रहा था या न मालूम क्या बात थी जिससे वह उठ बैठा, खिड़की के भारी पर्दों को खींचा और पुनः सोफे पर गिर पड़ा।

६

उसी दिन बजारोव का भी फेनिच्का से परिचय हो गया। वह बाग में आरकेडी के साथ टहलता हुआ यह बता रहा था कि किस कारण से कुछ वृक्ष, विशेषकर ओक के छोटे पौधे अच्छी तरह क्यों नहीं पनपे हैं?

"इस स्थान पर तुम्हें कुछ श्वेत चिनार तथा देवदार के और कुछ नीबू के पेड़ लगा कर उनमें चिकनी मिट्टी लगानी चाहिए। वहाँ वह बेल अच्छी पनपी है," उसने आगे कहा—"क्योंकि बबूल और बकायन हर प्रकार की जमीन पर पनप जाते हैं। उनकी अधिक देखभाल करने की जरूरत नहीं पड़ती। मेरा ख्याल है, यहाँ कोई है।"

उस लता कुञ्ज में फेनिच्का बैठी हुई थी। उसके साथ दुन्याशा और मित्या भी थे। बजारोव ठिठका। आरकेडी ने फेनिच्का को देख कर सिर हिलाया जैसे किसी पुराने परिचित के प्रति किया जाता है।

"वह कौन है?" जब वे आगे निकल गए तो बजारोव ने आरकेडी से पूछा—"कितनी सुन्दर लड़की है।"

"कौन?"

"बिल्कुल स्पष्ट बात है, वहाँ एक ही तो सुन्दर लड़की है।"

आरकेडी ने बिना हिचक के संक्षेप में उसे बता दिया कि फेनिच्का कौन है।

"आहा," बजारोव बोला—"तुम्हारे पिता की रुचि बहुत अच्छी है। मैं उन्हें पसन्द करता हूँ। उनकी रुचि का प्रमाण वहाँ है। जो कुछ भी हो, हम लोगों का परिचय हो ही जाना चाहिए", उसने कहा और लता कुञ्ज की ओर लौटा।

"इवजिनी", आरकेडी ने घबड़ा कर उसे पुकारा—"भगवान के लिए तुम ऐसा मत करो।"

"चिंता की कोई बात नहीं है", बजारोव बोला—"हम लोग बेवकूफ नहीं हैं—हम शहरी हैं।"

फेनिच्का के पास आकर उसने अपनी टोपी उतार ली।

"मुझे आत्म-परिचय देने की आज्ञा दीजिए", उसने नम्रता पूर्वक झुकते हुए कहा—"मैं आरकेडी का दोस्त हूँ और किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता।"

फेनिच्का बेंच पर से उठ खड़ी हुई और चुपचाप उसकी ओर देखने लगी।

"कितना सुन्दर बच्चा है!" बजारोव कहता गया—"घबड़ाओ मत, मेरी नजर नहीं लगेगी। उसके गाल इतने लाल क्यों हो रहे हैं? क्या दाँत निकल रहे हैं?"

"जी हाँ", फेनिच्का धीरे से बोली—"चार दाँत अब तक निकल चुके हैं, और अब फिर उसके मसूड़े सूज रहे हैं।"

"जरा मुझे देखने दीजिए······डरिए मत, मैं डाक्टर हूँ।"

बजारोव ने बच्चे को अपनी गोदी में ले लिया। यह देख कर फेनिच्का और दुन्याशा दोनों को ही अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि बच्चा उसकी गोदी में जाने से जरा भी न तो हिचकिचाया और न डरा ही।

"ठीक है, ठीक है, कोई बात नहीं है। इसके बहुत सुन्दर दाँत निकलेंगे। अगर कुछ गड़बड़ी हो तो मुझे बता दीजिएगा। आपकी तबियत तो ठीक है?"

"बिल्कुल स्वस्थ हूँ, ईश्वर को धन्यवाद है।"

"ईश्वर को धन्यवाद है-यही सबसे बड़ी चीज है। और तुम्हारे क्या हाल हैं?" दुन्याशा की ओर मुड़कर उसने पूछा। दुन्याशा, जो घर के भीतर बड़ी सीधी बनी रहती थी परन्तु बाहर बड़ी शैतान बन जाती थी, उत्तर में केवल दाँत निपोर कर रह गई।

"बहुत सुन्दर! अच्छा अब अपने इस प्यारे नटखट को वापस लीजिए।"

फेनिच्का ने बच्चे को गोदी में ले लिया।

"आपकी गोद में यह कितना शान्त था", वह धीरे से बुदबुदाई।

"सभी बच्चे मेरे पास शान्त रहते हैं", बजारोव ने उत्तर दिया—"एक छोटी सी चिड़िया ने मुझे यह रहस्य बताया था।"

"बच्चे इस बात को पहचान लेते हैं कि कौन उन्हें प्यार करता है", दुन्याशा ने अपनी राय जाहिर की।

"बिल्कुल यही बात है", फेनिच्का ने उसका समर्थन करते हुए कहा—"अब, देखिए, मित्या कुछ लोगों के पास तो किसी भी दशा में जाने को प्रस्तुत नहीं होता।"

"यह मेरे पास आएगा ?" आरकेडी ने पूछा। वह कुछ देर तक तो दूर खड़ा रहा था और अब उन लोगों के पास आ गया था।

उसने बच्चे को लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाए परन्तु मित्या ने पीछे को फिर कर जोर की चीख मारी। इससे फेनिच्का बहुत परेशान हो उठी।

"अच्छा फिर कभी–जब यह मुझ से हिल जायगा," आरकेडी कोमल स्वर में बोला और दोनों दोस्त वहाँ से चल दिए।

"इसका क्या नाम बताया था तुमने ?" बजारोव ने पूछा।

"फेनिच्का ······ फेदोस्या," आरकेडी ने जवाब दिया।

"और इसकी अल्ल क्या है ? उसका जानना भी आवश्यक होता है ?"

"निकोलेव्ना।"

"खूब। मुझे उसकी यह बात सबसे अच्छी लगी कि वह घबड़ाती नहीं है। सम्भव है कुछ लोग इसके लिए उसे दोषी ठहरा सकते हैं। क्या वाहियात बात है। वह क्यों घबड़ाए ? वह माँ है—फिर उसके लिए लज्जा करना कैसे उचित समझा जा सकता है ?"

"मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ," आरकेडी बोला—"लेकिन मेरे पिता, तुम जानते हो······"

"उनका विचार भी ठीक है," बजारोव ने टोकते हुए कहा।

"नहीं, मैं इस बात को नहीं मानता।"

"एक और उत्तराधिकारी का होना तुम्हें पसन्द नहीं है ?"

"मेरे ऊपर इस प्रकार का लांछन लगाते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ?" आरकेडी ने गुस्से से उबलते हुए कहा—"यह कारण नहीं है जिससे मैं अपने पिता के काम को गलत बता रहा हूँ। मेरा कहना तो यह है कि उन्हें फेनिच्का से विवाह कर लेना चाहिए था।"

"ओह !" बजारोव शान्त होकर बोला—"हम लोग कितने उदार हैं। तुम अब भी विवाह के विषय में सोचते हो। मुझे तुमसे ऐसी आशा नहीं थी।"

दोनों मित्र कुछ कदम चुपचाप चलते रहे।

"मैंने तुम्हारे पिता की जमींदारी की व्यवस्था समझ ली है", बजारोव ने कहना प्रारम्भ किया—"ढोर बहुत कमजोर हैं, घोड़े बिल्कुल हड्डियों के ढाँचे जैसे लगते हैं, मकान किसी समय अच्छी दशा में रहे होंगे और नौकर सभी लोफर हैं। जहाँ तक कारिन्दे का प्रश्न है वह या तो बदमाश है या मूर्ख; मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि वह इन दोनों में से क्या है ?"

"इवजिनी वैसीलिच, आज तुम्हें छिद्रान्वेषण की सूझ रही है।"

"और तुम्हारे वे भोले भाले से किसान तुम्हारे पिता को धोखा देंगे—यह निश्चित है। तुम्हें वह कहावत मालूम है कि–"रूसी किसान खुदा की भी कमर तोड़ देगा।"

"अब मैं भी अपने चाचा की इस राय से सहमत होता जा रहा हूँ–" आरकेडी बोला–"कि रूसियों के प्रति तुम्हारी धारणा बहुत गन्दी है।"

"इसमें भी कोई सन्देह है ? रूसियों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे स्वयं अपने को बहुत अच्छा समझते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि दो और दो मिल कर चार होते हैं। बाकी सब बेकार की बातें हैं।"

"तो क्या प्रकृति भी व्यर्थ है।" आरकेडी ने सान्ध्यकालीन सूर्य के हल्के प्रकाश में स्नात सुदूर विस्तृत रङ्ग-बिरंगे खेतों की ओर उत्फुल्ल दृष्टि डालते हुए पूछा।

"हाँ, प्रकृति भी व्यर्थ है—उस रूप में जिसमें कि तुम उसे समझते हो। प्रकृति एक उपासना का स्थान न होकर एक कारखाने के समान है और मनुष्य उसमें काम करने वाला मजदूर है।"

इसी समय दोनों मित्रों के कानों में मकान के भीतर से आती हुई बेला की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ी। कोई भावुक परन्तु अनभ्यस्त व्यक्ति बेले पर शुबर्ट-कृत 'एरवार्टंग' नामक कविता बजा रहा था। उसकी मधुर स्वर-लहरियाँ वायु मण्डल में मधु-मय माधुर्य भर रही थीं।

"यह कौन बजा रहा है," बजारोव ने आश्चर्य चकित होकर पूछा।

"मेरे पिता।"

"क्या तुम्हारे पिता बेला बजाते हैं?"

"हाँ।"

"क्यों, उनकी क्या उम्र है?"

"चवालीस।"

बजारोव एकाएक खिलखिला कर हँस पड़ा।

"इसमें हँसने की कौन सी बात है?"

"माफ करना भाई! एक आदमी जो चवालीस वर्ष का हो चुका है, जो एक कुटुम्ब का स्वामी है और देहात में रहता है, बेला बजा रहा है।"

बजारोव अब भी हँस रहा था। परन्तु आरकेडी, भले ही वह अपने मित्र का अत्यधिक सम्मान करता हो, जरा सा भी नहीं मुस्कराया।

१०

दो सप्ताह के लगभग समय गुजर गया। मैरीनो का जीवन अपनी पूर्व गति से चलता रहा, कोई विशेष घटना नहीं हुई। आरकेडी आराम-तलबी का जीवन बिताता था और बजारोव अपने काम में व्यस्त था। उस घर के सब प्राणी उससे, उसकी आदतों से, तीखे और असभ्य वार्तालाप करने के ढङ्ग से परिचित हो चुके थे। उसके प्रति फेनिच्का का व्यवहार केवल इस सीमा तक ही पहुँचा था कि जब एक रात मित्या के पेट में ऐंठन हुई तो उसने बजारोव को बुलवा भेजा। बजारोव ने आकर

अपने सहज स्वभाव के अनुसार कभी जम्हाई लेते, कभी हँस कर बोलते हुए उसके पास दो घण्टे बिना दिए और बच्चे को ठीक कर दिया। पावेल पेट्रोविच पूर्ण रूप से उसे घृणा करता था। उसकी दृष्टि में बजारोव एक मिथ्याभिमानी, उद्धत, दुष्ट और नीच व्यक्ति था। उसे यह सन्देह था कि बजारोव उसका सम्मान नहीं करता, कि वह उससे घृणा करता है—उससे, पावेल किरसानोव से! निकोलाई पेट्रोविच इस 'निहिलिस्ट' युवक से कुछ-कुछ भयभीत रहता था। उसे यह सन्देह था कि आरकेडी पर उसके प्रभाव का क्या परिणाम निकलेगा। फिर भी वह मन लगा कर उसकी बातें सुनता और उसके शारीरिक और रसायनिक प्रयोगों के समय उपस्थित रह कर उनमें रुचि लेता। बजारोव अपने साथ एक खुर्दबीन लाया था जिस पर घण्टों काम करता रहता था। वहाँ के नौकर उसे चाहने लगे थे यद्यपि उसे उन लोगों को परेशान करने में आनन्द आता था। वे उसे अपने ही वर्ग का व्यक्ति समझते थे न कि उच्च वर्ग का। दुन्याशा उसे देख कर मुस्करा देती और जब कभी उसके पास होकर निकलती तो उसकी तरफ एक मतलब भरी निगाह डाल जाती। प्योतर जैसा निहायत झूठा और मूर्ख व्यक्ति, जो हमेशा अपनी भौंहों में गांठें दिए रहता, जिसके गुणों में केवल विनम्र व्यवहार, अ आ इ ई कर के पढ़ना, प्रायः अपने कोट को कपड़े के ब्रुश से साफ करना आदि थे वह भी जब कभी बजारोव को देख पाता तो प्रसन्नता से खिल उठता था। फार्म पर रहने वाले बच्चे इस 'डाक्टर' के पीछे झुण्ड बाँधे घूमते रहते जैसे पिल्ले पीछे-पीछे घूमा करते हों। अकेला बुड्ढा प्रोकोफिच उसे पसन्द नहीं करता था। मेज पर उसके लिए खाना परोसता तो मुँह फुला लेता था और उसे 'दुरात्मा' और 'शठ' कहा करता था। वह उसके गल-मुच्छों की उपमा ब्रुस में जड़े हुए सुअर के बालों से करता था। अपनी समझ में प्रोकोफिच अभिजात्य वर्गीय था। इस दृष्टि से वह अपने को पावेल पेट्रोविच से रञ्च मात्र भी कम नहीं समझता था।

वर्ष का सबसे सुहावना समय आ गया—जून का प्रारम्भ। मौसम बहुत ही सुहावना था। परन्तु साथ ही पुनः हैजा फैलने का डर

था परन्तु वहाँ के निवासी इसके अभ्यस्त हो चुके थे। हमेशा की तरह बजारोव बहुत तड़के उठ बैठता और दो तीन वर्स्ट लम्बा चला जाता, केवल घूमने ही नहीं। उसे निरुद्देश्य घूमना पसन्द नहीं था। वह जड़ी-बूटी और कीड़े-मकोड़े इकट्ठे करने जाता था। कभी कभी वह आरकेडी को भी अपने साथ ले लेता था। लौटते समय उनमें प्रायः विवाद छिड़ जाता परन्तु आरकेडी ढेर के ढेर तर्क उपस्थित करने पर भी हार जाता था।

एक दिन उन्हें लौटने में बहुत देर हो गई। निकोलाई पेट्रोविच उन्हें देखने बाग में गया और लता कुञ्ज के पास पहुँच कर उसने शीघ्रता पूर्वक आती हुई पदचाप और दो युवकों की आवाज सुनी। वे कुञ्ज की दूसरी तरफ से आ रहे थे इसलिए उसे देख नहीं सके।

"तुम मेरे पिता को भली प्रकार नहीं समझ पाए।" आरकेडी कह रहा था।

निकोलाई पेट्रोविच चुपचाप मूर्तिवत खड़ा होकर सुनने लगा।

"तुम्हारे पिता अच्छे आदमी हैं", बजारोव ने कहा—"परन्तु वे पिछड़े हुए हैं। उनके राग-रंग के दिन समाप्त हो चुके हैं।"

निकोलाई पेट्रोविच ने कान लगा कर सुनने की कोशिश की··· आरकेडी खामोश रहा। बेचारा 'पिछड़ा हुआ व्यक्ति' कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा और फिर धीरे-धीरे पीछे को लौट गया।

"उस दिन मैंने उन्हें पुश्किन पढ़ते देखा था", बजारोव कहने लगा—"उन्हें बताओ कि ऐसी किताबों में वे अपना कीमती समय क्यों बर्बाद करते हैं। कुछ भी हो, अब वे बच्चे तो हैं नहीं। अब समय आ गया है कि वे इस बेवकूफी को समाप्त कर दें। अपने इस युग में भावुक होना कितना अद्भुत लगता है। उन्हें कोई अच्छी सी किताब पढ़ने को दो।"

"तुम उनके लिए कौन सी किताब ठीक समझते हो?" आरकेडी ने पूछा।

"मैं तो उनके लिए बुश्नर* की 'पदार्थ और शिल्प' नामक किताब आरम्भ करने के लिए ठीक समझता हूँ।"

"मेरा भी ऐसा ही ख्याल है", आरकेडी ने सहमति जताते हुए कहा–"पदार्थ और शिल्प की शैली बड़ी सरल है।"

× × ×

"तो यह है हम लोगों की स्थिति—मेरी और तुम्हारी," निकोलाई पेट्रोविच, खाना खाने के बाद पावेल पेट्रोविच के अध्ययन-कक्ष में बैठा हुआ उससे कह रहा था-"अब हम लोग पिछड़े हुए आदमी हैं, हमारे राग-रंग के दिन गए। सम्भव है बजारोव सच कहता हो, लेकिन इस बात के स्वीकार कर लेने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है कि एक बात के लिए मुझे बड़ा दुःख है। उस समय मैं यह समझ रहा था कि मैं और आरकेडी आपस में घनिष्ट मित्र के समान बन जायेंगे परन्तु अब यह लगता है कि वह बहुत आगे निकल गया है और मैं पिछड़ गया हूँ और अब हम एक दूसरे को नहीं समझ पाएंगे।"

"तुमने यह धारणा कैसे बना ली कि वह तुमसे आगे बढ़ा हुआ है? और महरबानी करके यह भी बताओ कि वह किन बातों में हम लोगों से भिन्न है?" पावेल पेट्रोविच ने उत्तेजित होकर कहा–"उसके दिमाग में ये सब बातें उस बदमाश, निहिलिष्ट ने भर रखी हैं। मैं उस धूर्त डाक्टर से नफरत करता हूँ। अगर तुम मुझसे पूछते हो तो वह एक कपटी आदमी है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इन मेंढकों आदि को चीरने फाड़ने पर भी उसे अभी डाक्टरी का पूरा ज्ञान नहीं है।"

"नहीं भाई, तुम इस तरह उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते, बजारोव एक चतुर और बहुत पढ़ा लिखा व्यक्ति है।"

"और वह हद दर्जे का घमन्डी है," पावेल पेट्रोविच ने पुनः कहा।

"हाँ" सहमत होते हुए निकोलाई पेट्रोविच ने कहा--"वह घमन्डी है। लेकिन मैं समझता हूँ कि ऐसा होना चाहिए। एक चीज मैं नहीं

*लुडविग बुश्नर (१८२४–६६) एक प्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक था जिसने औषधि-विज्ञान और पदार्थ विज्ञान पर अनेक पुस्तकें लिखी थीं।

समझ पाया हूँ मैं समय की प्रगति के साथ चलने के लिए प्रत्येक कार्य करता हूँ। मैंने किसानों को व्यवस्थित कर दिया है–एक फार्म की स्थापना की है-यह सारा प्रदेश मुझे कम्युनिष्ट कहने लगा है। मैं पढ़ता हूँ, अध्ययन करता हूँ और साधारणतया प्रत्येक आधुनिक बात की ओर ध्यान देता हूँ--और फिर भी वे लोग कहते हैं कि मेरे राग-रंग के दिन गए। क्यों, भाई, मैं वास्तव में सोचने लगा हूँ कि यह सच है ?"

"तुमने यह धारणा कैसे बना ली ?"

"अच्छा, तुम खुद ही सोचो। आज मैं बैठा हुआ पुश्किन पढ़ रहा था...मुझे याद है कि वह 'जिप्सी' नाम की पुस्तक थी...अचानक आरकेडी मेरे पास आया और बिना एक भी शब्द बोले, मेरी तरफ करुण दया-पूर्ण दृष्टि से देखते हुए धीरे से वह किताब ले ली जैसे कि मैं कोई छोटा सा बच्चा हूँ, और मेरे सामने एक दूसरी पुस्तक रख दी एक जर्मन भाषा की पुस्तक...उसके बाद मुस्कराया और पुश्किन को अपने साथ लेता हुआ चला गया।"

"ओह ! और वह कौन सी पुस्तक थी जो उसने तुम्हें दी ?"

"यह रही।"

और निकालाई पेट्रोविच ने अपनी पीछे की जेब से बुश्नर की बदनाम पुस्तक का नवा संस्करण निकाला।

पावेल पेट्रोविच ने हाथ में लेकर पुस्तक को उलटा-पलटा।

"हूँ," उसने घुर्राते हुए कहा-"आरकेडी निकोलाइच तुम्हारी शिक्षा के विषय में बहुत उत्कंठित प्रतीत होता है। खैर, तुमने इसे पढ़ने का प्रयत्न किया ?"

"हाँ।"

"कैसी है ?"

"या तो मैं बेवकूफ हूँ या यह सब बकवास है। मेरा ख्याल है मैं ही बेवकूफ हूँ।"

"तुम जर्मन भाषा तो नहीं भूले होगे, क्यों भूल गए क्या ?" पावेल पेट्रोविच ने पूछा।

"नहीं, मैं जर्मन समझता हूँ।"

पावेल ने पुनः किताब को उलटा पुलटा और भाई की तरफ कनखियों से देखा। दोनों चुप रहे।

"हाँ, एक बात और कहनी है," निकोलाई पेट्रोविच ने, जो वार्तालाप का विषय बदलने को उत्सुक था, उस चुप्पी को तोड़ते हुए कहा—"कोल्याजिन का एक पत्र आया है।"

"मटवी इलियच ?"

"हाँ, वह इस क्षेत्र का दौरा करने के लिए शहर आया है। अब वह बड़ा आदमी हो गया है और उसने लिखा है कि वह एक सम्बन्धी होने के नाते हम लोगों से मिलना चाहता है और उसने हम दोनों के साथ आरकेडी को भी शहर आने के लिए निमंत्रित किया है।"

"तुम जा रहे हो ?" पावेल पेट्रोविच ने पूछा।

"नहीं, और तुम ?"

"न मैं जाऊँगा। कौन व्यर्थ में पचास वर्स्ट की यात्रा का संकट उठाए। मैथ्यू हम लोगों को अपना ठाठ-बाट दिखाना चाहता है--उसका यही अभिप्राय है। हमारे बिना भी उसका काम चल जायगा। वास्तव में वह बड़ा आदमी है--प्रिवी काउन्सिल का सदस्य है। अगर मैं अपनी नौकरी से स्तीफा न देता और उसी गन्दे भार को ढोता रहता तो मैं अब तक एडजूटेन्ट जनरल बन जाता। और, फिर यह मत भूलो कि हम और तम पिछड़े हुए व्यक्ति हैं।"

"हाँ, भाई, अब समय आ गया है कि हम कब्र खोदने वाले को बुला कर अपना नाप दे दें।" गहरी सांस लेते हुए निकोलाई पेट्रोविच ने कहा।

"कोई डर की बात नहीं, मैं इतनी जल्दी हार मानने वाला नहीं हूँ," उसका भाई बड़बड़ाया, "मैं चाहता हूँ कि अभी हमें उस डाक्टर से टक्कर लेनी है।"

और उसी शाम को चाय पीते समय उनमें झड़प हो गई। पावेल पेट्रोविच बैठक में छिद्रान्वेषण की दृढ़ भावना लेकर भिड़ने के लिए तैयार होकर आया था। वह केवल बहाना ढूंढ़ रहा था कि उसे पाते ही

शत्रु पर टूट पड़े परन्तु उसे बहुत देर में मौका मिला। बजारोव दोनों बुजुर्ग चौधरियों (वह किरसानोव बन्धुओं को इसी नाम से पुकारता था) के सामने बहुत कम बोलता था और उस शाम को वह कुछ अनमना होने के कारण चुपचाप चाय के प्याले पर प्याले पीए जा रहा था। पावेल पेट्रोविच उत्तेजना से अधीर हो रहा था। अन्त में उसे मौका मिल ही गया।

बातचीत के दौरान में एक पड़ोसी जमींदार का नाम लिया गया। "एक निठल्ला, एक निकृष्ट कोटि का रईस," बजारोव ने खुल कर अपनी राय जाहिर की—वह उस व्यक्ति से सेन्ट पीटर्सवर्ग में मिल चुका था।

"क्या मुझे पूछने की इजाजत है," पावेल पेट्रोविच ने कहना प्रारम्भ किया, उसके होंठ कांप रहे थे। "आपके कथनानुसार 'निठल्ला' और 'रईस' एक ही शब्द के पर्याय हैं ?"

"मैंने 'निकृष्ट कोटि का रईस' कहा था," बजारोव ने आराम से चाय का घूंट भरते हुए उत्तर दिया।

"बिल्कुल ठीक ! मैं समझता हूँ कि 'रईसों' और 'निकृष्ट कोटि के रईसों' के विषय में आपकी एक ही सी राय है। मैं अपना यह कर्त्तव्य समझता हूँ कि आप को बतादूँ कि आपकी राय से मेरा कतई इत्तफाक नहीं है। इस पर मैं यह कह सकता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति मुझे उदार विचारों और प्रगति का प्रबल समर्थक मानता है। उसका कारण यह है कि मैं रईसों की इज्जत करता हूँ-सच्चे रईसों की। इस बात को याद रखिए महाशय।" (इन शब्दों को सुन कर बजारोव ने आँखें उठाकर पावेल पेट्रोविच के चेहरे की ओर देखा) "इस बात को याद रखिए, महाशय," उसने जोर देते हुए दुहराया, "अंग्रेजी रईस। वे अपने अधिकारों में रंच मात्र भी कमी नहीं स्वीकार करते और इसी कारण दूसरों के अधिकारों का सम्मान करते हैं। वे चाहते हैं कि जनता उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करे और इसी कारण वे भी जनता के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। इंग्लैंड के रईसों ने ही इंग्लैंड को स्वतन्त्रता दिलाई है और वे ही उसकी रक्षा करते हैं।"

"हमने ऐसी बातें पहले भी सुन रखी हैं," वजारोव ने कहा, "परन्तु आप इससे सिद्ध क्या करना चाहते हैं ?"

"मैं जो सिद्ध करना चाहता हूँ, महाशय,वह यह है," (जब पावेल गुस्से में होता था तो जान बूझ कर व्याकरण की गल्तियाँ करता था। यह सनक अलैक्जेन्डर कालीन परम्परा का अवशेष थी। उस युग के बड़े लोग, बहुत कम अवसरों पर जब वे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते थे तो जान बूझ कर गन्दी, उखड़ी पुखड़ी भाषा बोलते थे। मानो वे इस बात को जानते थे कि हम हैं तो रूसी परन्तु बड़े आदमी भी हैं और हमें व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करने का अधिकार है) "मैं जो सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा हूँ वह यह है कि जब तक किसी भी व्यक्ति में आत्म-सम्मान और आत्म गौरव की भावना उत्पन्न नहीं होती और यह भावना रईसों में पूर्ण रूप से विकसित है, तब तक सामाजिक चेतना की नींव स्थाई नहीं हो सकती-जनता की-सामाजिक ढांचे की। व्यक्तित्व, महाशय, मनुष्य में व्यक्तित्व ही मुख्य वस्तु है। व्यक्तित्व दृढ़ चट्टान के समान अडिग होना चाहिए क्योंकि यही वह नींव है जिस पर सब चीजों का निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए, मैं जानता हूँ कि आपकी दृष्टि में मेरी आदतें, मेरी पोशाक, मेरी व्यक्तिगत परिष्कृत रुचि, उपहास के विषय हैं। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इन सब बातों का सम्बन्ध आत्म-सम्मान से है, यह कर्त्तव्य के विषय हैं, हाँ, साहब, कर्त्तव्य से सम्बन्धित। मैं देहात में रहता हूँ जंगली जगह में, किन्तु मैं अपने आत्म गौरव और व्यक्तिगत श्रेष्ठता को कभी नहीं खो सकता।"

"मुझे कहने की इजाजत दीजिए, पावेल पेट्रोविच," वजारोव ने कहा—"आप आत्मसम्मान की बात करते हैं फिर भी आप बैठकर समय बर्बाद करते हैं। फिर बताइए कि इससे जनता का क्या कल्याण होता है। यह काम तो आप आत्म-सम्मान के बिना भी कर सकते हैं।"

पावेल पेट्रोविच का चेहरा पीला पड़ गया।

"यह बिल्कुल दूसरी चीज है। इस समय मैं आपको इसका

कारण बताने के लिए बाध्य नहीं हूँ कि मैं क्यों समय बर्बाद करता हूँ जैसा कि तुम्हारा कहना है। मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि रईसी विचारों में सिद्धान्तों का समावेश होता है और आजकल केवल दुराचारी और नीच प्रवृत्ति के व्यक्ति ही सिद्धान्त रहित जीवन बिता सकते हैं। मैंने आरकेडी को उसके आने के दूसरे ही दिन यह बता दीया था और वही मैं आपको अब बता रहा हूँ। क्यों, निकोलाई, ठीक है न ?"

निकोलाई पेट्रोविच ने सहमति सूचक सिर हिलाया।

"रईसी, उदारवाद, प्रगति, सिद्धान्त," बजारोव कह रहा था—"अच्छाई, कितने विदेशी—और बेकार शब्द हैं। एक रूसी को उनकी सेंत मेंत में भी जरूरत नहीं है।"

"मेहरबानी करके बताइए तो उसको जरूरत किस चीज की है ? आपके सिद्धान्तानुसार हम लोग इन्सानियत के दायरे के बाहर के लोग हैं—उसके नियमों के बन्धन से बिल्कुल परे के। मुझे ऐसा लगता है कि ऐतिहासिक तर्क इनकी आवश्यकता को······"

"उस तर्क से हमें क्या मतलब ? हमारा काम इसके बिना भी चल जाता है।"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि आप, मेरा विश्वास है, जब भूखे होते हैं तो रोटी खाते समय तर्क की आवश्यकता नहीं होती। फिर इन हवाई ख्यालातों की उपयोगिता ही क्या है ?"

पावेल पेट्रोविच ने परेशानी से अपने हाथ हिलाए।

"मैं आपकी बात नहीं समझा। आप रूसी जनता का अपमान कर रहे हैं। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि कोई शख्स सिद्धान्तों और विधिओं की उपयोगिता से कैसे इन्कार कर सकता है। हमारे जीवन में क्रिया शीलताओं के लिए प्रेरणा देने वाला और कौन सा आधार रह जाता है ?"

"चाचा, मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि हम लोग अधिकार या प्रभुत्व को स्वीकार नहीं करते," आरकेडी ने बीच में बोलते हुए कहा।

"हम केवल उसी से प्रेरणा ग्रहण करते हैं जिसे उपयोगी समझते हैं," बजारोव बोला-"इस युग में, आजकल सबसे अधिक उपयोगी मार्ग अस्वीकृति का है--इसीलिए हम अस्वीकार करते हैं।"

"प्रत्येक वस्तु को ?"

"हाँ, प्रत्येक वस्तु को।"

"क्या ? न केवल कला और काव्य को बल्कि...... इसे कहना भी त्रासदायक है।"

"प्रत्येक वस्तु को।" बजारोव असहनीय उदासीनता का परिचय देते हुए बोला।

पावेल पेट्रोविच ने उसे घूर कर देखा। उसे इस बात की आशा नहीं थी। उधर दूसरी ओर आरकेडी प्रसन्नता से फूल उठा।

"लेकिन, सुनो," निकोलाई पेट्रोविच ने दखल देते हुए कहा-"तुम प्रत्येक वस्तु को अस्वीकार करते हो, या दूसरे शब्दों में, तुम हर वस्तु को नष्ट कर देना चाहते हो ? फिर निर्माण का कार्य कौन करेगा ?"

"यह हमारा काम नहीं है......पहले जमीन साफ करनी है।"

"राष्ट्र की वर्तमान स्थिति यह मांग करती है," आरकेडी ने गर्वपूर्वक कहा-"कि हम इन मांगों को पहले पूरा करें। हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम अपने वैयक्तिक अहंकार को पहला स्थान दें।"

यह अन्तिम वाक्य बजारोव को पसन्द नहीं आया- इसमें 'दर्शन' की गन्ध आ रही थी। दूसरे शब्दों में उसमें भावावेश-रूमानी विचार धारा--की मात्रा बहुत अधिक थी क्योंकि बजारोव 'दर्शन' को भी रूमानी विचार धारा ही मानता था। परन्तु उसने अपने अधकच्चरे शिष्य का खंडन करना उचित नहीं समझा।

"नहीं, नहीं," पावेल ने सहसा क्रुद्ध होकर कहा—"मैं सचमुच इस बात का विश्वास नहीं कर सकता कि आप लोग दरअसल रूसी जनता को समझ सके हैं, कि आप उसकी आवश्यकताओं और इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। नहीं, रूसी जनता वह नहीं है जैसा कि आप लोगों ने उसे समझ रखा है। वह अपनी पवित्र परम्पराओं का सम्मान

करती है। वह पितृ सत्तात्मक विचारधारा में विश्वास करती है—वह बिना विश्वास के जीवित नहीं रह सकती·········"

"मैं इस बात का विरोध नहीं करूँगा," बजारोव ने टोकते हुए हुए कहा—"बल्कि मैं आपकी इस बात को पूर्ण सत्य तक मानने के लिये प्रस्तुत हूँ।"

"अगर यह बात है तो······ "

"फिर भी इससे कोई बात सिद्ध नहीं होती।"

"बिल्कुल ठीक, इससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता।" आरकेडी शतरंज के उस अभ्यस्त खिलाड़ी के समान बोला जो शत्रु की जबर्दस्त चाल को पहले से ही भांप कर सचेष्ट शान्ति के साथ उसके आक्रमण की प्रतीक्षा करता है।

"आप यह कैसे कह रहे हैं कि इससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता," पावेल पेट्रोविच ने आश्चर्यान्वित होकर हकलाते हुए कहा—"तब तो आप अपनी ही जनता का विरोध कर रहे हैं।"

"अगर हम करते हैं तो क्या?" बजारोव चीखा—"जब लोग बिजली की कड़कड़ाहट सुनते हैं तो यह विश्वास कर लेते हैं कि ईश्वरीय दूत आलीजाह अपने रथ में बैठ कर आकाश में विचरण कर रहे हैं। तो इससे क्या हुआ? क्या आप चाहते हैं कि मैं उनकी बात का विश्वास कर लूँ? वे रूसी हैं और क्या मैं रूसी नहीं हूँ?"

"नहीं, तुम रूसी नहीं हो। जो कुछ तुम कह रहे हो उसके आधार पर तुम रूसी नहीं हो।"

"मेरे बाबा खेत जोतते थे," बजारोव उद्धत गर्व के साथ बोला—"अपने किसी भी किसान से पूछ देखिये कि वह हम लोगों में से किसको अपना सच्चा साथी मानते हैं—आपको या मुझको? आप तो उनसे ठीक तरह बात करना भी नहीं जानते।"

"फिर भी तुम उससे बात भी करते हो और साथ ही साथ उससे घृणा करते हो।"

"क्या हुआ यदि वह घृणा के योग्य है तो ! आप मेरे विचारों को बुरा समझते हैं लेकिन आपने यह कैसे समझ लिया कि मेरे विचार उस राष्ट्रीय भावना के, जिसके आप प्रबल समर्थक हैं, फलस्वरूप उत्पन्न नहीं हुए हैं—वरन मैंने इन्हें यों ही कहीं से पकड़ लिया है।"

"यह बिल्कुल सत्य है। ये निहिलिस्ट किस मर्ज की दवा हैं ?"

"यह हमारा काम नहीं है कि हम इस बात को निश्चित करें कि वे किसी मर्ज की दवा हैं या नहीं। मैं साहसपूर्वक कह सकता हूँ कि आप जैसे व्यक्ति भी अपने को उपयोगी समझने का दम्भ करते हैं।"

"ठहरो, ठहरो, महाशय, कृपया व्यक्तिगत आक्षेप मत कीजिये।" अपने स्थान से उठते हुए निकोलाई पेट्रोविच चिल्लाया।

पावेल पेट्रोविच मुस्कराया और अपने भाई के कन्धे पर हाथ रख कर उसे बैठा दिया।

"तुम फिकर मत करो," वह बोला—"मैं अपना संयम नहीं खोऊँगा। विशेषकर उस आत्म गौरव की भावना के कारण जिसे हमारे मित्र······हमारे डाक्टर मित्र-हीन समझ कर उसका क्रूर मजाक उड़ाते हैं।" बजारोव की ओर एक बार पुनः मुड़ते हुए उसने कहा—"माफ कीजिये ! क्या किसी कारण से आप अपने सिद्धान्त को नया समझते हैं ? अगर समझते हैं तो आप अपने को धोखा दे रहे हैं। जिस भौतिकवाद का प्रचार आप कर रहे हैं उस पर कई बार पहले भी वाद विवाद हो चुका है और हर बार उसका दिवालियापन प्रमाणित हुआ है।"

"फिर आप अपरिचित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं," बजारोव टोकते हुए बोला। इस समय वह अपना संयम खोता जा रहा था। उसके चेहरे पर भद्दी तांबे के से रंग की लालिमा छा रही थी—"पहली बात तो यह है कि हम उपदेश नहीं देते। यह हम लोगों की रीति नहीं है···"

"फिर आप लोगों की कार्य करने की क्या रीति है ?"

"मैं बताता हूँ। अभी कुछ समय पहले तक हम लोग अपने रिश्वती अफसरों, सड़कों की कमी, व्यापार की दयनीय स्थिति और न्याय करने वाली अदालतों के विषय में कहा करते थे······"

"ठीक, बिल्कुल ठीक। वास्तव में आप लोग पर-निन्दक हैं— मैं समझता हूँ यही शब्द ठीक है। मैं स्वयं आप लोगों की बहुत सी शिकायतों से सहमत हूँ, लेकिन······"

"फिर हम लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि यह सब व्यर्थ की बकवाद थी जो हम अपनी बुराइयों के विषय में किया करते थे। इससे केवल तुच्छता और सिद्धान्तवाद की ही वृद्धि होती थी। हम लोगों को पता चल गया कि हमारे वे चालाक नेता···ये कथित प्रगतिशील और छिद्रान्वेषक लोग बिल्कुल बेकार हैं, यह कि हम अपना समय नष्ट कर रहे हैं, हम कला, अचेतन निर्माण शक्ति, धारा सभा-वाद, न्याय-प्रणाली आदि न मालूम कितने विषयों के बारे में बातें करते हैं जब कि मनुष्य के सामने सबसे महत्वपूर्ण और ठोस समस्या थी—उसकी रोटी की समस्या। अन्ध विश्वासों के मारे हमारा दम घुटा जा रहा था। जब हमारी सभी व्यापारी कम्पनियाँ इसलिए ठप्प होने जा रही थीं क्योंकि उनमें ईमानदार संचालकों का अभाव था। सरकार जो स्वतंत्रता का शोरोगुल मचा रही थी उससे जनता का कदाचित् ही कोई कल्याण होता क्योंकि किसान शराबखाने में जाकर, नशे में धुत होकर लुटने में बहुत प्रसन्न होता है।"

"इससे क्या," पावेल पेट्रोविच ने बीच में टोका-"तो, आप इस बारे में पूर्णतः निश्चिन्त हो चुके हैं और यह दृढ़ निश्चय कर लिया है कि किसी भी काम को गम्भीरतापूर्वक नहीं उठाएंगे?"

"और हमने यह दृढ़ निश्चय कर लिया है कि हम किसी भी बात को नहीं सुलझाएंगे।" बजारोव ने पूर्ण कटुता से भर कर दुहराया।

वह ऐसे 'रईस' के सामने अपने विचारों को पूर्णतः प्रकट कर देने के लिए क्षुब्ध हो रहा था।

"और निन्दा करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करना?"

"करना कुछ नहीं सिवाय निन्दा के।"

"और इसे ही निहिलिज्म कहते हैं?"

"यही निहीलिज्म कहलाता है," बजारोव ने इस बार पूर्ण धृष्टता के साथ दुहराया, पावेल पेट्रोविच ने आँखें सिकोड़ीं।

"अच्छा, तो यह बात है।" उसने अत्यन्त शान्त स्वर में कहा—निहिलिज्म हमारी प्रत्येक बीमारी का इलाज है और आप, आप लोग हमारे उद्धारक और नेता हैं। अच्छा, परन्तु आप लोग दूसरों को मुसीबत में क्यों घसीटते हैं, जैसे पर निन्दकों को। क्या आप लोग भी उन लोगों की ही तरह व्यर्थ की बकवाद नहीं करते रहते।"

"नहीं, हमारी त्रुटियाँ चाहे जैसी क्यों न हों परन्तु हम यह गलती कभी नहीं करते," बजारोव बोला।

"फिर क्या करते हैं? आप लोग कुछ काम भी करते हैं? आप का काम करने का इरादा भी है क्या?"

बजारोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। पावेल पेट्रोविच उत्तेजित हुआ परन्तु अपने को रोक गया।

"हूँ! काम करने के लिए, विध्वंस करने के लिए……" वह कहता गया—"परन्तु बिना इस बात को जाने हुए कि कब, कैसे और क्यों प्रारम्भ करना चाहिए?"

"हम विध्वंस इसलिए करते हैं कि हम स्वतः एक शक्ति हैं," आरकेडी बोला।

पावेल पेट्रोविच अपने भतीजे की तरफ देख कर व्यंगपूर्वक मुस्कराया।

"हाँ, एक शक्ति—एक दुर्दमनीय शक्ति," आरकेडी ने तन कर कहा।

"बेवकूफ लड़के!" पावेल पेट्रोविच ने आपे से बाहर होते हुए "कहा—कम से कम तुम तो यह बातें सोचना बन्द कर दो। तुम अपने उन जीर्ण शीर्ण विचारों द्वारा रूस की क्या सहायता कर रहे हो? वास्तव में ऐसी बातें सुन कर तो देवताओं के लिए भी अपना धैर्य सम्हालना कठिन हो जायेगा। शक्ति! बर्बर काल्मुक और मंगोल लोगों के पास भी शक्ति है परन्तु ऐसी शक्ति से क्या लाभ? हम सभ्यता के समर्थक हैं, हाँ, साहब, और उस सभ्यता के परिणामों के। यह मत कहो कि सभ्यता के परिणाम थोथे हैं। एक रद्दी से रद्दी रंगसाज,और पाँच

कोपेक पर रात भर पिआनो बजाने वाला व्यक्ति तुमसे अच्छा है क्यों कि वह सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है न कि बर्बर मंगोल शक्ति का। तुम लोग अपने को प्रगतिवादी समझते हो परन्तु वास्तव में तुम लोग एक कलमुक झोंपड़ी में बेकार बैठे रहने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर सकते। और ए शक्ति के अवतार महाशयो, यह मत भूलो कि तुम लोग करोड़ों लोगों के विरोध में संख्या में कुल साढ़े चार हो। वे करोड़ों लोग तुम्हारे द्वारा अपनी पवित्र मान्यताओं को कुचला जाता हुआ देखने की अपेक्षा तुम को ही कुचल डालेंगे।"

"अगर हम कुचल दिए जाते हैं तो इससे हमारा कल्याण ही होगा," बजारोव बोला—"परन्तु करने से कहना बड़ा आसान है...हम लोग संख्या में इतने कम नहीं हैं जितने कि आप समझते हैं।"

"क्या कहा? क्या आप गम्भीरता पूर्वक यह सोचते हैं कि आप लोग एक पूरे राष्ट्र के विरोध में खड़े रह सकेंगे?"

"मास्को एक जरा सी मोमबत्ती से जल गया था। आप जानते हैं?" बजारोव ने उत्तर दिया।

"अच्छा यह बात है। पहले तो हम शैतान की तरह घमन्डी हैं और फिर हम प्रत्येक वस्तु का मजाक उड़ाना प्रारम्भ कर देते हैं। तो नौजवानों की यह सबसे ताजी सनक है। यही बात, शायद, अनुभव-शून्य नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इन्हीं में से एक आपके पास बैठा हुआ है—बिल्कुल आपकी बगल में। वह आपकी पूजा करता है। उसकी शकल तो देखिए!" (आरकेडी ने कुढ़ कर मुँह फेर लिया) और यह बीमारी चारों तरफ फैल चुकी है। मुझे बताया गया है कि हमारे चित्रकारों ने वैटकीन* में पैर तक रखने से इन्कार कर दिया। रेफेल§ को पूर्णतः मूर्ख समझा जाता है। और मजा यह है कि वह चित्रकला का विशेषज्ञ, माना हुआ व्यक्ति है जब कि आक्षेप करने वाले

स्वयं पूर्ण अयोग्य और बेकार के व्यक्ति हैं। उनकी कल्पना "गर्ल एट ए फाउन्टेन" से आगे सच्चे जीवन के चित्रण तक पहुँच ही नहीं पाती। और उसका निर्माण भी वे अत्यन्त निकृष्ट रूप से करते हैं। आपके मतानुसार यही लोग ठीक हैं, क्यों हैं न ?"

"मेरी राय में तो" बजारोव ने उत्तर दिया—"रैफेल के चित्र दो कौड़ी के भी नहीं हैं और वे लोग भी उससे अच्छे नहीं हैं।"

"शाबाश, शाबाश! सुन रहे हो आरकेडी······आजकल के नवयुवकों को इस तरह अपने विचार प्रकट करने चाहिये। सोचो तो सही, अब उन्हें तुम्हारा साथ देने में क्या हिचक होगी ? पहले नवयुवकों को पढ़ना पड़ता था। वे नहीं चाहते थे कि उन्हें मूर्ख समझा जाय। इसलिए उन्हें विवश होकर परिश्रम करना पड़ता था। परन्तु अब तो उन्हें सिर्फ यह कह देना है-संसार की प्रत्येक वस्तु व्यर्थ है और, बस, काम बन गया। उनको इसी में मजा आता है। और, वास्तव में, जहाँ कि पहले वे केवल कूढ़ मगज होते थे और अब अचानक निहिलिस्ट बन बैठे हैं।'

"आप की आत्म-प्रतिष्ठा की भावना अब बहुत दूर तक पहुँच चुकी है," बजारोव ने भर्राए हुए कंठ से कहा। आरकेडी गुस्से से कांप उठा। उसके नेत्र जलने लगे—"हमारा विवाद सीमा से थोड़ा सा आगे बढ़ चुका है—मैं सोचता हूँ कि इसे यहीं समाप्त कर देना उचित है। और मैं उस समय आपसे सहमत हो जाऊँगा," उठते हुए उसने आगे कहा—"जब आप अपने राष्ट्रीय जीवन में मुझे एक भी ऐसी संस्था दिखा देंगे—चाहे वह घरेलू हो या सामाजिक-जो पूर्ण और कठोर अस्वीकार की भावना को लेकर न चल रही हो।"

"मैं आपको करोड़ों ऐसी संस्थाएं दिखा दूँगा," पावेल पेट्रोविच चीखा-"करोड़ों। मिसाल के तौर पर अपनी ग्राम पंचायत को ही ले लीजिए"

बजारोव ने घृणापूर्वक अपने होंठ सिकोड़े।

"जहाँ तक ग्राम पंचायत का प्रश्न है," उसने कहा, "उसके विषय में अच्छा हो आप अपने भाई से पूछ लें। मेरा विश्वास है कि अब

उन्हें ग्राम पंचायत का पूर्ण अनुभव हो चुका है। वे उस की पारस्परिक जिम्मेदारी, संयम और इसी प्रकार के धोखे धड़ी के अन्य सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।"

"परिवार, हमारे किसानों की परिवार-प्रथा के विषय में आपकी क्या राय है ?" पावेल पेट्रोविच ने चीखते हुए पूछा।

"यह दूसरा विषय है। मेरा विश्वास है कि इस विषय की उधेड़ बुन करना आपके हक में अच्छा नहीं साबित होगा। सम्भव है, आपने अपनी पुत्र-वधू के साथ व्यभिचार की बात सुनी हो। पावेल पेट्रोविच, मेरी सलाह मानिए। कम से कम दो दिन तक इस बात पर मनन कर लीजिए। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ आप किसी भी वस्तु पर इस प्रकार सीधी चोट नहीं करेंगे। सब वर्गों के व्यक्तियों से मिलिए, हरेक को नजदीक से परखिए और तब तक मैं और आरकेडी······।"

"जाकर सब की दिल्लगी उड़ाते फिरेंगे।" पावेल पेट्रोविच ने बीच में ही वाक्य पूरा करते हुए कहा।

"नहीं मेंढकों की चीर-फाड़ करेंगे। चलो आरकेडी, अच्छा महाशयो, नमस्कार।"

दोनों मित्र बाहर चले गए। भाई अकेले रह गए। पहले दोनों ने केवल चुपचाप एक दूसरे की ओर देखा।

"क्यों, देखा", अन्त में पावेल पेट्रोविच ने कहा– "यह है हमारी नई पीढ़ी। ये हैं हमारे उत्तराधिकारी।"

"उत्तराधिकारी," निकोलाई पेट्रोविच ने उदास होकर गहरी सांस लेते हुए कहा। इस वाद-विवाद के समय वह विषादपूर्ण मुद्रा बनाए चुपचाप बैठा हुआ कभी कभी आरकेडी पर दुखपूर्ण निगाह डाल लेता था। "तुम जानते हो, भाई, मैं क्या सोचता रहा हूँ ? एक बार अपनी प्यारी माँ से मेरा झगड़ा हो गया। उस समय माँ बुरी तरह चिल्ला रही थी और मेरी बात सुनने को तैयार नहीं होती थी···अन्त में मैंने उसे बता दिया कि वह मुझे नहीं समझ सकती क्योंकि हम दोनों भिन्न पीढ़ी के व्यक्ति हैं। मेरी इस बात से उन्हें बड़ी चोट

पहुँची और मैंने सोचा—और कोई चारा नहीं है। यह कड़वी गोली है परन्तु इसे निगलना ही पड़ेगा। अब हमारी बारी आई है और हमारे उत्तराधिकारी हमसे कह सकते हैं। "तुम हमारी पीढ़ी के नहीं हो, इस कड़वी गोली को निगलो।"

"तुम तो बहुत ज्यादा उदार और सीधे हो," पावेल पेट्रोविच ने विरोध करते हुये कहा। "इसके विपरीत मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम और तुम दोनों ही उन नौजवानों की अपेक्षा अधिक युक्तिपूर्ण हैं, यद्यपि हम लोग अपने विचारों को पुराने ढंग से व्यक्त करते हैं और हममें उनकी सी दृढ़ता नहीं है···परन्तु आजकल के नौजवान अपने ही विचारों से कितने प्रसन्न रहते हैं। तुम किसी से भी पूछो! "तुम कौनसी शराब लोगे, लाल या सफेद ?" "मुझे तो लाल ही अधिक पसन्द है" फौरन वह अपने भारी स्वर में उत्तर देगा और इस बात को इतनी गम्भीरता पूर्वक कहेगा कि तुम यह सोचने लगोगे कि यह व्यक्ति इस ब्रह्माण्ड का सबसे गम्भीर व्यक्ति है।"

"आप और चाय लेंगे ?" दरवाजे से झांकते हुए फेनिच्का ने पूछा। वाद-विवाद के समय उसे वहाँ आने का साहस नहीं हुआ था।

"नहीं तुम सोमवार को यहाँ से हटाने के लिये नौकरों से कह सकती हो," निकोलाई पेट्रोविच ने उत्तर दिया और उससे मिलने के लिये उठा। पावेल पेट्रोविच उससे संक्षिप्त सी विदा की नमस्कार कर अपने अध्ययन-कक्ष को चला गया।

११

आधा घन्टे बाद निकोलाई पेट्रोविच बाग में अपने प्रिय लता-कुञ्ज में गया। वह दुखी विचारों से त्रस्त हो रहा था। केवल अब उसे इस बात का पूर्ण अनुभव हुआ कि वह और उसका पुत्र दोनों एक दूसरे से अलग होते जा रहे हैं। उसे यह भी दिखाई पड़ने लगा

कि उन दोनों का यह अन्तर निरन्तर बढ़ता चला जायगा। इसका मतलब यह है कि उसने सेन्ट पीटर्सबर्ग में रह कर जाड़ों के उन लम्बे दिनों में नई पुस्तकें पढ़ने में व्यर्थ ही समय गंवाया था। उसने व्यर्थ ही नौजवानों की बातों को ध्यान से सुना था। उन नौजवानों की बातचीत के दौरान में कभी कभी जो वह अपना मत जाहिर कर देता था वह भी बेकार गया। "मेरा भाई कहता है कि हम लोग सच्चे रास्ते पर हैं," उसने सोचा. "अगर मिथ्याभिमान को छोड़ कर सोचा जाय तो यह सत्य है कि वे लोग हम लोगों की अपेक्षा सत्य से ज्यादा दूर हैं और फिर भी मैं यह अनुभव करता हूँ कि उन लोगों में कुछ ऐसा है जो हमारे पास नहीं है। हमारी तुलना में उनमें यही एक विशेषता है ··· यौवन? नहीं, यह विशेषता केवल यौवन ही नहीं है। क्या यह सब इस कारण तो नहीं है कि रईसी की बू उनमें हमारी अपेक्षा कम है?"

निकोलाई पेत्रोविच का सिर उसके सीने पर झुक गया और उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"परन्तु कविता की अवहेलना करना?" उसने नए सिरे से सोचना प्रारम्भ किया—"कला, प्रकृति आदि के लिए संवेदना का पूर्ण अभाव······।"

उसने अपने चारों तरफ निगाह फेंकी मानो यह समझने का प्रयत्न कर रहा हो कि किसी में भी प्रकृति के प्रति उपेक्षा की भावना कैसे रह सकती है। सन्ध्या का अन्धकार घिरता आ रहा था। बाग से लगभग आधे वर्स्ट की दूरी पर स्थित पेड़ों के एक झुंड के पीछे सूरज छिप रहा था। उन वृक्षों की छायायें शान्त खेतों पर दूर तक छा रही थीं। एक किसान सफेद टट्टू पर बैठा हुआ अन्धेरी पगडंडी पर धीमी चाल से चला जा रहा था। उसकी पूरी आकृति स्पष्ट दिखाई दे रही थी—यहाँ तक कि उसके कन्धे पर लगी हुई थेगली भी साफ नजर आ रही थी, यद्यपि वह छाया में होकर जा रहा था। घोड़े की स्पष्ट और चपल गति सुन्दर दृश्य उत्पन्न कर रही थी। सूर्य की किरणें झाड़ियों में से छन कर आ रही थीं। अस्पिन वृक्षों के तनों पर ऐसी मनोहर चमक उत्पन्न कर

रही थीं कि वे देवदार जैसे दिखाई पड़ रहे थे और उनकी पत्तियाँ बिल्कुल आसमानी रंग की प्रतीत हो रही थीं। इन सब के ऊपर डूबते हुए सूर्य की हल्की गुलाबी आभा में पीली झलक लिए हुए नीला आकाश फैला हुआ था। अबाबील बहुत ऊँची उड़ती हुई आकाश में चक्कर काट रही थीं, वायु स्तब्ध थी। बकाइन के फूलों पर एकाध मधु मक्खी खुमारी में भरी हुई भनभना रही थी। एक अकेली नीची लटकती हुई डाल पर कीड़ों का झुन्ड इकट्ठा हो रहा था। "ओह, कितना सुन्दर दृश्य है," निकोलाई पेट्रोविच ने सोचा और उसे अपनी प्रिय कविता की पंक्तियाँ याद हो आईं परन्तु उसे आरकेडी और 'वस्तु और शिल्प' नामक पुस्तक की याद आ गई और वह खामोश हो गया। फिर भी वह उदास और एकाकी स्मृतियों में डूबा हुआ चुपचाप बैठा रहा। उसे भावनाओं का स्वप्न देखना सदा से प्रिय था। देहाती जीवन ने उसकी इस भावना को और बढ़ा दिया था। अधिक दिन नहीं बीते जब वह सराय में बैठा हुआ अपने प्रिय पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में इसी प्रकार दिवा-स्वप्न में निमग्न हो गया था। परन्तु उसके बाद से उसमें एक परिवर्तन हो गया है। पिता पुत्र का सम्बन्ध जो पहले अस्पष्ट था अब अधिक स्पष्ट हो उठा है। अब उसने एक निश्चित रूप धारण कर लिया है। एक बार पुनः उसे अपनी स्वर्गीया पत्नी याद हो आई परन्तु उस कुशल गृहणी के रूप में नहीं जिससे वह पिछले अनेक वर्षों से परिचित था बल्कि एक भोली, छरहरे शरीर वाली, जिज्ञासु नेत्रों वाली और बच्चों की सी सरल दृष्टि से देखने वाली किशोरी के रूप में जिसके सुन्दर बाल बच्चों की सी सुन्दर गर्दन के ऊपर बंधे रहते थे। उसे उसके साथ अपनी पहली मुलाकात की याद आई। उस समय वह विद्यार्थी था। उससे उसकी मुलाकात मकान की सीढ़ियों पर हुई थी। अकस्मात वे दोनों आपस में टकरा गए थे। निकोलाई ने मुड़कर उससे माफी मांगने की कोशिश की और इस प्रयत्न में हकला कर केवल इतना ही कह सका—"क्षमा कीजिएगा, देवी जी"। वह नीचा सिर कर मुस्कराई थी और अचानक जैसे भयभीत हो उठी हो भाग गई थी। उसने सीढ़ियों के मोड़ पर पहुँच कर उसे

शीघ्रतापूर्वक मुड़ कर देखा था और लज्जा से गम्भीर हो उठी थी। और फिर उन भीरुतापूर्ण प्रथम मिलन, अस्फुट और अर्द्धउच्चरित शब्द, लज्जापूर्ण मुस्कराहट, व्यग्र आकुलता, दुख और निराशा की अनेक पुनरावृत्तियाँ हुईं। और सबसे अन्त में वह उन्मत्त बना देने वाला आनन्द······ये सब कहाँ लुप्त हो गए? वह उसकी पत्नी बन गई, उसके समान संसार में बहुत कम व्यक्ति ही इतने सुखी थे···"लेकिन," उसने सोचा–"जीवन के ये प्रथम मधुर क्षण······वे शाश्वत क्यों नहीं बन सके?"

उसने अपने विचारों का विश्लेषण करने का प्रयत्न नहीं किया लेकिन वह जीवन के उन मधुर क्षणों को स्मृति से भी अधिक सशक्त किसी अन्य शक्ति से सदैव के लिए बांध लेना चाहता था। वह अपनी मेरिया को पुनः अपने समीप देखने के लिए व्यग्र हो उठा–उसके शरीर की उष्णता, उसकी सुगन्धित श्वास का स्पर्श वह अपने समीप अनुभव कर रहा था।

"निकोलाई पेट्रोविच," पास ही फेनिच्का की आवाज सुनाई दी, "तुम कहाँ हो?"

वह चौंक पड़ा! इससे उसे न तो घबड़ाहट ही हुई और न दुख। उसने अपनी स्वर्गीया पत्नी और फेनिच्का में किसी भी प्रकार के सादृश्य की कल्पना नहीं की थी। परन्तु उसे इस बात का दुख था कि फेनिच्का ने उसे ढूँढ़ लिया। उसकी ध्वनि निकोलाई को पुनः वास्तविक संसार में खींच लाई। उसे अपने पके बालों, अपनी वृद्धावस्था की याद आई।

"वह आश्चर्यजनक आनन्दों से परिपूर्ण स्मृतियों का मोहक संसार जिसमें उसने अभी पदार्पण ही किया था और जिसे वह भूतकाल की अस्पष्टता से खींच लाकर स्पष्ट करने का प्रयत्न कर रहा था, प्रकम्पित होकर लुप्त हो गया।

"मैं यहाँ हूँ," उसने उत्तर दिया, "मैं अभी आया, तुम चलो।" "यह रईसी बू है," उसे ध्यान हो आया। फेनिच्का ने चुपचाप उसकी ओर झांका और गायब हो गई। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि

जब वह बैठा हुआ स्वप्न देख रहा था, रात धीरे धीरे गहरी हो आई थी। उसके चारों ओर अन्धकार और स्तब्धता छा रही थी। फेनिच्का का पीला और छोटा सा चेहरा उसे अपने सामने तैरता हुआ सा लगा। वह घर जाने के लिए आधा उठा परन्तु उसका हृदय भावनाओं के वेग से आलोड़ित हो रहा था। वह धीरे धीरे टहलने लगा। कभी चिन्तित होकर जमीन की तरफ देखता और कभी उसकी दृष्टि ऊपर आकाश की ओर उठ जाती जहाँ चमकते हुए तारे झिलमिला रहे थे। वह तब तक टहलता रहा जब तक कि थक कर चूर न हो गया परन्तु उसके हृदय से व्यग्रता, जो एक प्रकार की कष्टदायक भावना थी, एक अस्पष्ट निराशा पूर्ण आकुलता दूर नहीं हुई। और, यदि बजारोव को उसके इस हृदय मन्थन का आभास मिल जाता तो वह उसका कितना मजाक उड़ाता। और आरकेडी भी इन विचारों की निन्दा किए बिना न रहता। उसकी आँखों में आँसू आ गए-अवांछित अश्रु। वह चवालीस वर्ष का व्यक्ति, एक फार्म का मालिक, एक स्वामी, रो रहा था। यह स्थिति उसके वेला बजाने की स्थिति से सौ गुना अधिक दयनीय थी।

निकोलाई पेट्रोविच निरन्तर बाग में टहलता रहा। उसे घर जाने का साहस नहीं हुआ-उस शान्त, सुखदायक घर में जो अपनी रोशनी से चमकती हुई खिड़कियों से मुस्कराता हुआ उसे मुड़कर देख रहा था। वह अपने को उस अन्धकार, उस बाग, हवा के उस शान्तिदायक स्पर्श, हृदय की उस वेदना और चिन्ता से अलग करने में असमर्थ रहा।

रास्ते के एक मोड़ पर उसकी पावेल पेट्रोविच से मुठभेड़ हो गई।

"क्या बात है? उसने निकोलाई पेट्रोविच से पूछा-"तुम्हारा चेहरा भूत की तरह पीला पड़ा हुआ है, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं मालूम पड़ती, तुम जाकर सो क्यों नहीं रहते?"

निकोलाई पेट्रोविच ने संक्षेप में उसे अपनी मानसिक स्थिति बताई और चल दिया। पावेल पेट्रोविच बाग की दीवाल तक गया

और स्वयं भी विचारों में खो गया। उसने भी आसमान की ओर आँख उठाकर देखा। परन्तु उसकी सुन्दर काली आँखों में तारों की चमक के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दिखाई दिया क्योंकि न तो वह भावुक था और न उसकी नीरस, दुराराध्य परन्तु आवेशपूर्ण आत्मा, जो फ्रांसीसियों की तरह विश्व की शत्रु थी–कभी भी स्वप्न नहीं देखती थी।

"तुम जानते हो," उसी रात बजारोव आरकेडी से कह रहा था–"मेरे दिमाग में एक लहर उठी थी। आज तुम्हारे पिता एक निमन्त्रण के विषय में बातें कर रहे थे जो तुम्हारे किसी बड़े एवं विशिष्ट आत्मीय ने भेजा है। तुम्हारे पिता वहाँ नहीं जा रहे हैं। शहर का एक चक्कर लगा आने के बारे में तुम्हारी क्या राय है ? उसने तुम्हें भी बुलाया है। देखो, मौसम कितना अच्छा है। चलो, जरा गाड़ी पर बैठ कर शहर ही घूम आया जाय। हम लोग लगभग पांच या छः दिन घूम घाम कर लौट आयेंगे। समय अच्छा कटेगा।"

"तुम फिर लौट कर यहाँ आओगे न ?"

"नहीं, मुझे अपने पिता के पास जाना है। तुम जानते हो, वे शहर से तीस वर्स्ट की दूरी पर रहते हैं। मैंने उन्हें युगों से नहीं देखा है और न माँ को। उसके अलावा बुड्ढे और बुढ़िया को भी तसल्ली हो जायगी। वे बड़े अच्छे हैं–विशेष रूप से पिताजी तो बड़े ही मजेदार आदमी हैं तुम जानते ही हो, मैं उनका इकलौता पुत्र हूँ।"

"क्या तुम वहाँ बहुत दिनों तक ठहरना चाहते हो ?"

"नहीं, ऐसा कोई विचार नहीं है। वहाँ बड़ा नीरस वातावरण रहता है।"

"तुम लौटते हुए यहाँ आओगे ?"

"कुछ कह नहीं सकता...कोशिश करूँगा। अच्छा, तो तुम्हारा क्या इरादा है ? चलो, चलें।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी, आरकेडी बिना उत्साह के बोला।

वास्तव में वह अपने मित्र के प्रस्ताव से बहुत खुश हुआ था परन्तु उसने अपने सच्चे मनोभाव को उस पर प्रकट करना उचित नहीं समझा। क्योंकि अन्ततः तो वह भी एक निहिलिष्ट ही था।

दूसरे दिन दोनों मित्र शहर के लिए रवाना हो गये। मैरीनो-परिवार के युवक-दल में उनके चले जाने से मातम सा छा गया। दुन्याशा तो रो पड़ी···परन्तु बुड्ढों ने तनिक चैन की सांस ली।

१२

वह शहर जहाँ हमारे मित्रों ने पुनः पदार्पण किया, एक युवक गवर्नर के शासन में था जो एक प्रगतिशील और निरंकुश शासक था जैसा कि रूस में हमेशा से होते आए थे। अपने शासन के पहले ही वर्ष में उसका प्रान्त के कुलीन मार्शल-जो अश्वारोही सेना का अवकाश प्राप्त कप्तान, एक घोड़े पालने के फार्म का स्वामी और मस्त किस्म का मेजमान था तथा अपने मातहत अफसरों से झगड़ा हो गया। यह झगड़ा इतना बढ़ा कि अन्त में सेन्ट पीटर्सबर्ग के मंत्रालय ने इसकी जाँच के लिए एक कमिश्नर भेजना निश्चित किया। इसके लिये मटवी इलियच कोल्याजिन को चुना गया जो उस कोल्याजिन का पुत्र था जिसके संरक्षण में किरसानोव-बन्धु सेन्ट पीटर्सबर्ग में रहे थे। वह नए विचारों का आदमी समझा जाता था और यद्यपि उसकी अवस्था चालीस वर्ष से कुछ ऊपर ही रही होगी फिर भी वह राजनीतिज्ञ बनने का इच्छुक था। उसके सीने पर दोनों तरफ एक एक तमगा लटकता रहता था जिनमें से, यह सच है कि, एक किसी विदेशी द्वारा प्रदान किया गया था और जिसका कोई विशेष महत्व नहीं था। उस गवर्नर के ही समान, जिसका वह फैसला करने आया था, वह भी प्रगतिशील विचारों का माना जाता था और यद्यपि वह बड़ा आदमी था फिर भी उसमें अन्य बड़े आदमियों के से लक्षण नहीं थे। स्वयं अपने विषय में उसके बड़े ऊँचे विचार थे। उसके गर्व की कोई सीमा नहीं थी परन्तु अपने व्यवहार में वह विनम्र, दिखाई देने में दयालु तथा दूसरों की बात को गौर से सुनने वाला था। सभा-सुसाइटियों

में बैठ कर वह इतना खुल कर हँसता था कि कोई भी पहली नजर में उसे 'बहुत अच्छा' आदमी समझ लेता था। मौका पड़ने पर वह रौब गांठना भी जानता था जैसी कि कहावत है—"किस वस्तु की आवश्यकता है—केवल शक्ति की।" ऐसे अवसरों पर जोर देता हुआ कहता था—"शक्ति ही बड़े आदमियों का सबसे बड़ा गुण है।" परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी वह आसानी से बेवकूफ बना दिया जाता था और वहाँ एक भी ऐसा थोड़ा बहुत अनुभव रखने वाला अधिकारी नहीं था जो जिधर चाहे उधर उसकी नाक पकड़ कर उसे घुमा न देता हो। मट्वी इलियच गीजत* के प्रति बहुत उच्च विचार रखता था और वह प्रत्येक छोटे बड़े पर यह प्रमाणित कर देना चाहता था कि वह स्वयं उन ओछे और घिस-पिस काम करने वाले छोटे अफसरों के समान नहीं है और यह कि जनान्दोलन की एक भी बात उसकी नजर से बच नहीं पाती। इस प्रकार की बातें गढ़ने में वह पूर्ण दक्ष था। यहाँ तक कि उसने तत्कालीन साहित्य की प्रवृत्तियों को भी समझने का प्रयत्न किया था यद्यपि काफी बेपरवाही और दम्भ के साथ। इस ढलती हुई अवस्था में भी वह कभी कभी सड़क पर जाते हुए बच्चों के जुलूस में शामिल हो जाता था। दरअसल मट्वी इलियच अलैक्जेण्डर युग के उन अफसरों से किसी भी बात में आगे बढ़ा हुआ नहीं था जो सेन्ट पीटर्सबर्ग में श्रीमती स्वेचिना+ के यहाँ शाम के स्वागत समारोह में शामिल होने के लिए जाने से पहले सुबह कैंडिलाक× के पृष्ठ पढ़ा करते थे। अन्तर केवल यही था कि उसके हथकण्डे दूसरे और नए थे। वह एक चतुर

---

*फ्रांसीसी पीर गुलाम गीजत (१७८७–१८७४) प्रसिद्ध फ्रांसीसी राज-सचिव, राजदूत और शिक्षा-विशेषज्ञ था।

+मेडेम स्वेचिना (१७८२–१८५७) प्रसिद्ध रूसी जनरल स्वेचिना की पत्नी थी।

×इटिन बानेट-डी-मैब्ली-कैन्डिलाक(१७१५–१७८०)एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक था जो ज्ञान का आधार केवल बाह्येन्द्रियों को मानता था।

दरबारी, पक्का धूर्त से अधिक और कुछ भी नहीं था। अपने काम काज के मामलों में वह पक्का मूर्ख, विचारों में दरिद्र था परन्तु अपने काम को सम्हालना खूब जानता था; वहाँ उसे कोई भी गुमराह नहीं कर सकता था और जो जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है।

मट्वी इलियच ने इतनी प्रसन्नता से आरकेडी का स्वागत किया जो उस जैसे उच्च पदस्थ व्यक्ति के लिए कुछ अजीब सा था। दूसरे शब्दों में उसे मसखरापन भी कहा जा सकता है। उसे यह सुन कर ताज्जुब हुआ कि उसके आत्मीय जिनके लिए उसने निमंत्रण भेजा था वहीं गांव में रह गए हैं। "तुम्हारे पिता तो हमेशा से ही अजीब प्रकृति के व्यक्ति रहे हैं," अपने शानदार मखमली गाऊन के फुन्दने हिलाते हुए उसने कहा और फिर अचानक पास बैठे हुए एक मातहत अफसर की ओर, जो पास-पास लगे हुए बटनों की एक वर्दी पहने हुए उसके अन्तिम शब्द को बड़े आदर से सुन रहा था, घूम कर जोर से उससे पूछा-"क्या है?" वह नौजवान जिसके होंठ बहुत देर से खामोश रहने के कारण चिपक से गए थे, उठ कर खड़ा हो गया और अपने अफसर की ओर सकपका कर देखने लगा······परन्तु अपने मातहत को इस प्रकार परेशानी में डालने के बाद मट्वी इलियच ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। यहाँ कुछ शब्द बड़े आदमियों के विषय में कह देने असंगत नहीं होंगे। उनको अपने मातहतों को घबड़ाहट में डाल कर स्वयं आनन्द लेने की आदत है। इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए वे विभिन्न उपायों का प्रयोग करते हैं। इनमें से एक ढंग बहुत प्रसिद्ध है और जैसा कि अंग्रेज कहते हैं 'अत्यन्त प्रिय' है। वह ढंग यह है कि बड़ा अफसर एकाएक सरल से सरल शब्दों को समझना बन्द कर बिल्कुल बहरा सा बन जाता है। उदाहरण के लिए, वह पूछेगा-"आज कौन सा दिन है?

उसे अत्यन्त विनय पूर्वक बताया जायगा।

"आज शुक्रवार है,हु···जू···र"।

"क्या ? यह क्या है ? तुम क्या कहते हो ?" वह उच्च अधिकारी घूर कर पूछेगा।

"आज शुक्रवार है···हु···जू···र।"

"कैसे ? क्या ? शुक्रवार क्या होता है ? शुक्रवार के विषय में क्या कह रहे हो ?"

"शुक्रवार,···हु···जू···र, सप्ताह का एक दिन।"

"क्या बेवकूफी है, अब तुम इसके बाद मुझे और क्या सिखाओगे !"

मट्वी इलियच भी आखिरकार एक बड़ा अफसर था यद्यपि उसे उदार समझा जाता था।

"मेरे दोस्त, मैं तुमको गवर्नर से मिलने की सलाह दूँगा," उसने आरकेडी से कहा—"तुम समझे, मैं तुम्हें यह राय इसलिये नहीं दे रहा हूँ कि मैं बड़े आदमी की चापलूसी करने वाले पुराने विचारों का समर्थक हूँ बल्कि सिर्फ इसलिये कि गवर्नर अच्छा आदमी है। इसके साथ ही शायद तुम यहाँ के स्थानीय व्यक्तियों से भी परिचय प्राप्त करना पसन्द करोगे। मुझे आशा है कि तुम नीरस नहीं हो। वह परसों एक नृत्य-पार्टी का आयोजन कर रहा है।"

"आप वहाँ जायेंगे ?" आरकेडी ने पूछा।

"वह मेरे लिये ही तो उसका आयोजन कर रहा है," मट्वी इलियच ने अफसोस प्रकट करने वाले स्वर में कहा—"तुम नाचना जानते हो ?"

"हाँ, जानता हूँ परन्तु बहुत कम।"

"यह बहुत बुरी बात है। यहाँ बहुत सी सुन्दर लड़कियाँ हैं और दूसरी बात यह है कि एक नौजवान के लिये यह लज्जा की बात है कि वह नाचना नहीं जानता। इस बात का ध्यान रखो कि इस विषय में मेरे विचार दकियानूसी नहीं हैं। मैं एक मिनट के लिये भी इस बात को नहीं सोच सकता कि मनुष्य की बुद्धि का प्रदर्शन उसके चरणों द्वारा हो। परन्तु बायरनवाद वाहियात है।"

"लेकिन चाचा, इसका बायरनवाद से कोई सम्बन्ध तो है नहीं·········"

"मैं यहाँ महिलाओं से तुम्हारा परिचय करा दूँगा । मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा." मटवी इलियच आत्म-तुष्टि से दिल खोलकर हंसा—"यहाँ तुम्हें गर्मी तो नहीं मालूम पड़ रही, क्यों ?"

एक नौकर आया और उसने शासन समिति के प्रधान के आगमन की घोषणा की । वह सौम्य नेत्रों और झुर्रियोंदार चेहरे वाला व्यक्ति था जो प्रकृति का अत्यधिक प्रेमी था—विशेष रूप से ग्रीष्मऋतु के दिनों का जब वह कहा करता—"प्रत्येक छोटी मधुमक्खी प्रत्येक नन्हे से पुष्प से बहुत थोड़ी सी रिश्वत लेती है······" आरकेडी चला आया ।

बाजारोव उसे उसी सराय में मिला जहाँ वे ठहरे हुए थे । वह बजारोव को गवर्नर से मिलने के लिये बहुत देर तक समझाता रहा । "अच्छा,ठीक है ।" बजारोव ने अन्त में कहा—"एक पैनी में भी भीतर जाना और एक पौन्ड में भी । मेरे लिये दोनों ही एक समान हैं । चलो इन जमींदारों को देख ही लें, हम इसलिये तो यहाँ आये ही हैं ।"

गवर्नर ने इन दोनों युवकों का सौजन्यतापूर्वक स्वागत किया परन्तु न तो उन्हें कुर्सी पर बैठने के लिये कहा और न स्वयं बैठा । वह हमेशा अफसरी जल्दबाजी और जोश में रहता था । सुबह उठते ही सब से पहले कसी हुई चुस्त वर्दी और बहुत कड़ी टाई बांधता । वह आज्ञा देने की उत्तेजना और व्यस्तता में अपना खाना पीना और सोना भी भूल जाता । सारे प्रान्त में वह बार्डेलो के उपनाम से प्रसिद्ध था । यह उस प्रसिद्ध फ्रांसीसी शिक्षक के नाम पर न रखकर वरन एक स्वादहीन रूसी शराब के नाम पर रखा गया था । उसने किरसानोव और बजारोव को अपने घर नृत्य में निमंत्रित किया और दो ही मिनट बाद उन्हें पुनः निमन्त्रण दिया और इस बार उन दोनों को परस्पर भाई समझ कर उन्हें कैसारोव के नाम से पुकारा ।

जब वे लोग गवर्नर के यहाँ होकर अपने निवास स्थान पर लौट रहे थे अचानक एक छोटी सी गाड़ी से कूद कर एक व्यक्ति उनके सामने

आया। वह पान-स्लावी ढङ्ग की जाकेट पहने हुए एक नाटा सा व्यक्ति था। वह "इवजिनी बैसीलिच" चीख कर बजारोव की तरफ झपटा।

"ओह! तुम हो! सितनीकोव," बजारोव बोला—"तुम यहाँ कैसे आ टपके," और वह आगे अपने रास्ते पर चलने लगा।

"तुम इस बात का विश्वास करो या न करो--भाग्यवश ही आ पहुँचा," सितनीकोव ने उत्तर दिया और गाड़ी की ओर मुड़कर उसने लगभग आधा दर्जन बार अपना हाथ हिलाया और गाते हुए से स्वर में बोला—"गाड़ीवान, हमारे पीछे चले आओ, हमारे पीछे। मेरे पिता का यहाँ कुछ व्यापार फैला हुआ है," कूद कर नाली पार करते हुए वह कहता गया—"और उन्होंने मुझे उसी को देखने यहाँ भेजा है। आज मैंने सुना कि तुम आए हो। यह सुनते ही मैं तुम्हें ढूँढ़ने निकल पड़ा। (वास्तव में, लौट कर जब दोनों मित्र अपने कमरों में आए तो वहाँ उन्हें एक विजिटिंग कार्ड मिला जिसके कोने मुड़े हुए थे और जिसके एक तरफ फ्रांसीसी भाषा में और दूसरी तरफ स्लाव लिपि में सितनीकोव का नाम लिखा हुआ था।) "मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग गवर्नर के यहाँ से तो नहीं आ रहे हो?"

"तुम आशा करना छोड़ दो, हम सीधे वहीं से आ रहे हैं।"

"आह, ऐसी दशा में तो मुझे भी उससे मिलना पड़ेगा। इवजिनी बैसीलिच, मेरा परिचय तो करा दो अपने······से······"

"सितनीकोव, किरसानोव," बिना रुके बजारोव ने धीरे से कहा।

"बहुत खुश हुआ-वास्तव में," सितनीकोव ने कहना प्रारम्भ किया। वह किनारे किनारे चलता हुआ मुस्कराता और अपने सुन्दर दस्ताने उतारता जा रहा था। "मैंने बहुत कुछ सुना है···मैं इवजिनी बैसीलिच का पुराना परिचित हूँ। कहना तो चाहिए कि इनका शिष्य। इन्हीं के द्वारा मुझे आध्यात्मिक पुनर्जीवन प्राप्त हुआ है।"

आरकेडी ने बजारोव के शिष्य की ओर देखा। उसका चेहरा छोटा, आलस्ययुक्त, प्रसन्नता से परिपूर्ण, देखने में कुछ बुरा नहीं परन्तु व्याकुलता के भाव से पूर्ण था। उसकी छोटी, अन्दर घुसी हुई आँखों

में एक अभिलाषा से भरी हुई व्यग्र चमक थी। उसकी हँसी भी बेचैनी से भरी हुई थी—एक तीखी, नीरस हँसी।

"तुम इस बात का विश्वास करोगे," वह कहता गया—"जब मैंने पहले-पहल इवजिनी वैसिलिच को यह कहते सुना कि हमें अधिकारियों को स्वीकार नहीं करना चाहिये, तो मुझे बड़ी खुशी हुई थी········! यह एक नया सन्देश था। मैंने सोचा कि अन्त में अब जाकर एक ऐसा व्यक्ति मिला है। अच्छा, वइजिनी वैसीलिच, तुम्हें यहाँ एक ऐसी महिला से अवश्य मिलना चाहिये जो तुम्हें पूर्ण रूप से समझ सकती है और जिसके लिये तुम्हारी मुलाकात बहुत ही अच्छी साबित होगी। मुझे यक़ीन है कि तुमने उसके विषय में अवश्य सुना होगा।"

"वह कौन है ?" बजारोव ने लापरवाही के साथ पूछा।

"कुकसिन युदोजिया—इवडोक्सिया कुक्सिन। वह एक अद्भुत चरित्र वाली महिला है। सही अर्थों में वह 'स्वच्छन्दता' है—प्रगति शील विचारों की महिला। समझे न। चलो, अभी हम तीनों उससे मिलते चलें। वह पास ही रहती है। हम लोग वहीं खाना भी खायेंगे। तुमने तो अभी खाना खाया न होगा ?"

"अभी नहीं।"

"ठीक, यह अच्छा हुआ। तुम जानते हो, वह अपने पति के साथ नहीं रहती—पूरी आजाद है।"

"वह सुन्दर है क्या ?" बजारोव ने बीच में टोक कर पूछा।

"हाँ······रूपवती तो नहीं कहा जा सकता।"

"तब तुम हमें वहाँ ले चलने के लिये इतनी जिद्द क्यों कर रहे हो?"

"हा हा, यह अच्छी रही, वह शैम्पेन की एक बोतल पिलायेगी।"

"ठीक है, तुम बहुत काम के आदमी हो। अच्छा, यह तो बताओ तुम्हारे बुढ़ऊ क्या कर रहे हैं—वही खेती ?"

"हाँ," सितनीकोव ने जल्दी से कहा और जोर से मुँह फाड़ कर हँस उठा। "अच्छा, तो चलो, चलें ?"

"मैं सचमुच कुछ नहीं कह सकता।"

"तुम आदमियों से मिलना चाहते थे, चलो न," आरकेडी ने धीरे से कहा।

"और आपका क्या इरादा है मिस्टर किरसानोव ?" सितनीकोव ने पूछा. "आपको भी चलना पड़ेगा, ऐसे काम नहीं चलेगा।"

"हम लोग सभी इस तरह कैसे उसके यहाँ चढ़ाई कर सकते हैं ?"

"यह सब ठीक है। तुम कुकशिन को नहीं जानते, वह बहुत शरीफ है।"

"वहाँ शैम्पेन की एक बोतल मिलेगी न ?" बजारोव ने पूछा।

"तीन बोतलें," सितनीकोव चीख कर बोला—"मैं इसकी शर्त बदता हूँ।"

"किस चीज की शर्त बदोगे ?"

"अपने सिर की।"

"अच्छा हो कि अपने पिताजी के धन की थैलियों की बदो····· अच्छा, ठीक है, चलो।"

१३

मास्को शहर में बने हुए बंगलों के ढंग पर बना हुआ वह छोटा सा बंगला जिसमें अवदोत्या निकिसिशाना (या इवदोक्सिया) रहती थी एक ऐसी सड़क पर बना हुआ था जो अभी एक अग्निकाण्ड से बर्बाद हो चुकी थी। दुनियाँ इस बात को जानती है कि हमारी प्रान्तीय राजधानियाँ हर पाँचवें वर्ष अग्निकाण्डों की शिकार बन जाती हैं। दरवाजे के ऊपर तिरछे लगे हुए एक विजिटिंग कार्ड के ऊपर घन्टी बजाने की मुठिया लगी हुई थी। बंगले के बड़े कमरे में प्रवेश करने पर आगन्तुकों को एक नौकरानी मिली जो सम्भवतः मकान मालकिन की सहेली होगी ? वह एक गोटे वाली टोपी, जो मालकिन के प्रगतिशील विचारों की पूर्ण परिचायक थी, पहिने हुए थी।। सितनीकोव ने पूछा कि अवदोत्या निकिशिना घर पर हैं या नहीं ?

"ओहो, यह तुम हो विक्टर ?" बगल के कमरे में एक पतली तीखी आवाज सुनाई दी। "अन्दर आ जाओ।"

टोपीवाली स्त्री फौरन गायब हो गई।

"मैं अकेला नहीं हूँ," सितनीकोव ने कहा और आरकेडी और बजारोव की तरफ प्रसन्न दृष्टि डालते हुए चतुरता पूर्वक अपना ऊपरी लबादा उतार दिया। नीचे वह एक अजीब ढङ्ग की बिना बांहों की कमीज पहने हुए था जैसी कि किसान पहनते हैं।

"कोई बात नहीं," उस आवाज ने जवाब दिया—"आ जाइए।"

नौजवान भीतर घुसे। वह कमरा जिसमें वे लोग घुसे बैठक की बनिस्बत अध्ययन-कक्ष अधिक प्रतीत होता था। कागज, पत्र, मोटी रूसी भाषा की पत्रिकाएँ जो अभी खोली भी नहीं गईं थीं, धूल से भरी हुई मेजों पर बिखरी पड़ी थीं। सिगरेटों के अधजले छोटे-छोटे टुकड़े कमरे में इधर उधर छितरा रहे थे। एक चमड़े के सोफे पर एक महिला-नवयुवती, सुन्दरी और बिखरे हुए सुनहले बालों वाली—मैला रेशमी गाऊन, दुबले-पतले हाथों में बड़े बड़े कड़े पहने और सिर पर एक गोटेदार रूमाल बाँधे हुए आराम से लेटी हुई थी। वह सोफे से उठ खड़ी हुई और बेपरवाही के साथ मखमली और रोयेदार गोटवाले मफलर को अपने कन्धों पर डालते हुए आलस्यपूर्ण स्वर में बोली—

"नमस्कार, विक्टर," उसने सितनीकोव से हाथ मिलाया।

"बजारोव और किरसानोव," उसने बिल्कुल बजारोव के से ढङ्ग से उन दोनों का परिचय कराया।

"बहुत खुशी हुई," कुकशिना ने उत्तर दिया और बजारोव पर अपनी गोल आँखों के जोड़े को, जिनके बीच में जरा सी मुड़ी हुई गोल छोटी सी मोटी नाक थी, टिका कर उसने आगे कहा: "मैं आपके विषय में सुन चुकी हूँ," और उससे भी हाथ मिलाया।

बजारोव ने मुँह बनाया। इस आकर्षण हीन, स्वच्छन्द स्त्री की छोटी सी कुरूप आकृति में कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे उसे देखकर

घृणा होती। परन्तु उसके मुखमंडल पर छाए हुए भाव बुरा असर डालते थे। उसे देखकर किसी भी व्यक्ति की यह पूछने की इच्छा हो उठती थी कि—"क्या बात है, आप भूखी हैं? या आप ऊबी हुई हैं? या आपके दिमाग को कोई चीज परेशान कर रही है? आप इस तरह का हास्यास्पद व्यवहार क्यों कर रही हैं?" वह भी सितनीकोव की तरह मुँह टेढ़ा कर हँसती थी। वह लापरवाही का प्रदर्शन करते हुए बोलती और व्यवहार करती थी परन्तु उसका ढङ्ग अत्यन्त भद्दा था। यह स्पष्ट था कि वह निश्चित रूप से अपने को एक अच्छे और सीधे स्वभाव वाला प्राणी समझती थी परन्तु फिर, वह जो कुछ भी करती आपके ऊपर उसका सदैव यही प्रभाव पड़ता कि वह वही काम कर रही है जिसे वह करना नहीं चाहती। वह प्रत्येक कार्य-जैसा कि बच्चे कहते हैं, किसी उद्देश्य से ही करती थी। कहने का मतलब यह है कि उसके किसी भी कार्य में सरलता और स्वाभाविकता नहीं होती थी।

"हाँ, हाँ मैंने आपके विषय में सुना है, बजारोव," उसने दुहराया (मास्को की तथा प्रान्तीय अनेक संभ्रान्त महिलाओं की तरह उसकी भी यह आदत थी कि किसी भी व्यक्ति से प्रथम परिचय होने पर वह उसे उसके आधे नाम से ही पुकारती थी।) "आप सिगरेट पीएँगे?"

"मुझे सिगरेट से कोई शिकायत नहीं है," इस समय तक एक आरामकुर्सी पर बैठ कर और एक पैर अपने घुटने पर रखकर, झूलते हुए सितनीकोव ने उत्तर दिया—"लेकिन पहले हमें कुछ खाना तो खिलाओ। हम बहुत भूखे हैं और शैम्पेन की एक बोतल भी मंगाने के बारे में आपका क्या विचार है?"

"पूरे साइबेराइट* भुक्खड़ हो," इवदोक्सिया ने उत्तर दिया और हंसी (जब वह हंसती थी तो उसका ऊपर का मसूड़ा दिखाई देने लगता था।) "वह साइबेराइट है, बजारोव, है न?"

---

*साइबेरियट, साइबेरिया के रहने वालों के से स्वभाव वालों को कहते हैं। वे लोग प्रायः भूखे रहते हैं और मिल जाने पर ठूंस ठूंस कर गोश्त खाते हैं।

"मैं जिन्दगी के आनन्द भोगना चाहता हूँ," सितनीकोव ने गर्व से कहा—"इससे मेरे उदारदल-वादी बनने में कोई अड़चन नहीं पड़ती।"

लेकिन अड़चन पड़ती है, "इव्दोक्सिया चीखी फिर भी उसने नौकरानी को खाना शैम्पेन की बोतल लाने को हुक्म दिया। इस बारे में आपकी क्या राय है?"

बजारोव को सम्बोधित करती हुई वह आगे बोली—"मुझे विश्वास है कि आप मेरी राय से सहमत होंगे।"

"कतई नहीं," बजारोव ने उत्तर दिया—"गोश्त का एक टुकड़ा रोटी के एक टुकड़े से ज्यादा फाइदेमन्द है। रसायनिकों की भी यही राय है।"

"आप कैमिस्ट्री का अध्ययन करते हैं? मैं इसके पीछे पागल हूँ। मैंने एक खास तरह की लेई का आविष्कार भी कर लिया है।"

"एक प्रकार की लेई का? आपने?"

"हाँ, मैंने। आप जानते हैं किसलिए किया है? गुड़ियों के सिर बनाने के लिए जिससे वे टूटें नहीं। आप जानते हैं मैं व्यवहारिक भी हूँ। लेकिन यह अभी तैयार नहीं हो पाई है। मुझे लीविंग का अध्ययन करना चाहिए। अच्छा, आपने मास्कोवस्की वेदोमोस्ती नामक पत्रिका में प्रकाशित किस्ल्याकोव का 'स्त्रियों के कार्य' शीर्षक लेख पढ़ा है? आपको अवश्य पढ़ना चाहिए। आप नारी—समस्याओं में रुचि रखते हैं, रखते हैं न? और स्कूलों में भी? आपके मित्र क्या करते हैं? उनका नाम क्या है?"

श्रीमती कुकशिन ये प्रश्न एक के बाद एक इतनी लापरवाही से कर रही थीं जैसे वे उनका उत्तर सुनने के लिए उत्सुक नहीं हैं। उत्तर सुनने के लिऐ वह रुकी भी नहीं। बिगड़े हुए बच्चे अपनी नर्सों से इसी तरह के प्रश्न पूछा करते हैं।

"मेरा नाम आरकेडी निकोलाइच किरसानोव है," आरकेडी

बोला, "और मैं कुछ भी नहीं करता। इवदोक्सिया खिलखिला कर हंस पड़ी।

"कितना आकर्षक जीवन है? आप धूम्रपान क्यों नहीं करते? तुम जानते हो, विक्टर, मैं तुमसे नाराज हूँ।"

"किसलिए?"

"मैंने सुना है तुम फिर जार्ज सैण्ड की चापलूसी करते फिर रहे हो। वह एक असभ्य-पिछड़ी हुई औरत है, इसके अलावा और कुछ भी नहीं। उसकी एमर्सन से कोई तुलना नहीं उसे शिक्षा, जीवन शास्त्र या किसी भी विषय का रंचमात्र भी ज्ञान नहीं है। दरअसल मेरा तो यहाँ तक विश्वास है कि उसने भ्रूण-विद्या के बारे में सुना तक नहीं है। आजकल इसका भी ज्ञान न रखना कैसी अजीब बात है।" (इवदोक्सिया ने अपने हाथ ऊपर की तरफ फेंके।) "आह! बेलेलीविच ने इस विषय पर कितना सुन्दर लेख लिखा है। वह बड़ा मेधावी सज्जन है।" (इवदोक्सिया सदैव व्यक्ति के स्थान पर 'सज्जन' शब्द का प्रयोग करती थी।) "बजारोव, यहाँ मेरे पास सोफा पर आकर बैठो। शायद तुम इस बात को न जानते हो परन्तु मुझे तुमसे बहुत डर लगता है······"

"और क्यों, अगर मैं पूछूँ तो?"

"तुम खतरनाक सज्जन हो, तुम उसकी आलोचना करते हो। हे मेरे भगवान। कैसी मजाक की बात है कि मैं एक देहाती औरत की तरह बातें कर रही हूँ। परन्तु, वास्तव में मैं जमींदारिन हूँ। अपनी जमींदारी की देखभाल स्वयं करती हूँ, और क्या तुम इस बात का विश्वास करोगे कि मेरा कारिन्दा, एरोफी एक अजीब आदमी है—बिल्कुल कूपर के मार्ग-अन्वेषक की तरह। उसमें एक स्वाभाविक सरलता है। मैं यहाँ भले के लिये ही स्थाई रूप से बस गई हूँ—इस शहर का जीवन असह्य है। तम्हारा क्या ख्याल है? इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं है।"

"यह भी दूसरे शहरों के ही समान है।" बजारोव लापरवाही से बोला।

"यहाँ रहने से लाभ बहुत कम है--यही सबसे बुरी बात है। मैं जाड़े मास्को में बिताया करती थी ''लेकिन मेरे पति, मोशिये कुकसिन ने अब वह मकान बना लिया है। दूसरी बात यह है कि मास्को आजकल ''''' कुछ भी कहिए, वह नहीं रहा जो पहले था। मेरा विदेश जाने का इरादा है। पारसाल तो मैं लगभग चली ही गई होती।"

"पैरिस ?" बजारोव ने पूछा।

"पैरिस और हडिलबर्ग।"

"हडिलबर्ग क्यों ?"

"ओह, बंसन* वहाँ है।"

बजारोव कुछ भी नहीं समझ सका।

"पियरे सैपोजनीकोव''''''तुम उन्हें जानते हो ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

"ओह, मैंने कहा पियरे सैपोजनीकोव--वह हमेशा लिडिया खोस्तातोना के यहाँ रहता है।"

"मैं उसे भी नहीं जानता।"

"खैर, उसने मेरे साथ जाने का प्रस्ताव रखा था। ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं स्वतंत्र हूँ। मेरे कोई बच्चा नहीं है''''''मैंने क्या कहा था ? 'ईश्वर को धन्यवाद है'! दूसरी बात भी वही। कोई बात नहीं।"

इवदोक्सिया ने तम्बाकू से पीली पड़ी हुई उंगलियों से एक सिगरेट बनाई, जीभ से थूक लगाया और चिपका कर सुलगा ली। नौकरानी एक ट्रे लिए हुए भीतर आई।

"आह, खाना आ गया! आप लोग पहले कुछ जलपान करेंगे न ? विक्टर, बोतल का कार्क खोलो, तुम्हारा यही काम है।"

---

*राबर्ट विलियम बन्सन (१८११-९९) रसायन शास्त्री और प्रकृति विद्या विशारद। उसने मैग्नीशियम का आविष्कार था और किरछोव की सहायता से प्रकाश-वाहक तत्व का विश्लेषण किया था।

"हाँ, सो तो है ही," सितनीकोव धीरे से बुदबुदाया और पुनः तीखे स्वर से हंस उठा।

"यहाँ कुछ सुन्दर स्त्रियां भी हैं ?" तीसरा ग्लास खत्म करते हुए बजारोव ने पूछा।

"हाँ हैं," इवदोक्सिया बोली–"पर वे सब की सब मूर्ख हैं। मिसाल के तौर पर मैडम ओदिन्तसोवा को ही ले लीजिए–वह देखने में बुरी नहीं है। यह दुख की बात है कि उसकी शोहरत अच्छी नहीं है···

वह भी साधारण सी बात से हो गई, परन्तु असली बात यह है कि उसका दृष्टिकोण बड़ा संकुचित है। न उसके अपने स्वतन्त्र विचार हैं······इसी तरह वह कुछ भी नहीं जानती। ऐसे ही है। हमारी शिक्षा का पूरा ढाँचा बदल देना चाहिए। मैं अर्से से इस बात को सोचती आ रही हूँ : हमारी स्त्रियों को शिक्षा देने का ढंग बहुत बुरा है।"

"हाँ, वे तो इसी के योग्य बिल्कुल बेकार," सितनीकोव बोला, वे घृणा के अतिरिक्त और किसी भी चीज के योग्य नहीं हैं और मेरे मन में उनके लिए केवल घृणा है–पूर्ण और घोर घृणा।" (घृणा करने का अवसर पाना और उस घृणा को व्यक्त कर देना सितनीकोव के लिए अत्यन्त आनन्द का विषय था। विशेष रूप से वह नारियों पर आक्षेप करता था इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ रहते हुए कि कुछ ही महीनों बाद वह अपनी पत्नी के सामने नाक रगड़ेगा केवल इसी कारण कि उसका नाम राजकुमारी दुर्दोलियोसोवा है।) "उनमें से एक भी हमारी बातों को नहीं समझ सकती। हम गम्भीर स्वभाव वाले पुरुष व्यर्थ ही उन पर अपना समय बर्बाद करते हैं।

"परन्तु उनके लिए इस बात की कतई कोई जरूरत नहीं कि वे हमारी बातों को समझें।" बजारोव बोला।

"आप लोग किस बारे में बातें कर रहे हैं?" इवदोक्सिया ने पूछा।

"सुन्दरियों के।"

"क्या कहा ? तो तुम भी प्रोधान* के विचारों के समर्थक हो ?" बजारोव गुस्से से तन कर बैठ गया।

"मैं किसी के भी विचारों से सहमत नहीं हूँ। मेरे अपने विचार हैं।"

"ये अधिकारी विद्वान जहन्नुम को जांय !" सितनीकोव चिल्लाया क्योंकि उसे एक ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति में, कोई बड़ी बात कहने का अवसर मिला था, जिसकी वह चापलूसी करता था।

"फिर भी मेकाले······" कुकशिना ने कहना प्रारम्भ किया।

"मेकाले भी जहन्नुम में जाय !" सितनीकोव जोर से चीखा—"तुम इन औरतों के गुलामों की तरफदारी कर रही हो ?"

"नहीं, औरतों के गुलामों की नहीं परन्तु औरतों के अधिकारों की, जिनकी, जीवन की अन्तिम रक्त की बूंद तक, रक्षा करने की मैंने प्रतिज्ञा कर रखी है।"

"वाहियात !"—परन्तु यहाँ सितनीकोव ने बात बदली, "मैं इस बात का विरोध नहीं कर रहा हूँ," उसने धीरे से कहा।

"नहीं, मैं देख रही हूँ कि तुम एक पान-स्लावी हो।"

"नहीं, मैं पान-स्लावी नहीं हूँ, यद्यपि वास्तव में······"

"नहीं, नहीं, नहीं ! तुम पान-स्लावी हो। तुम दोमोस्ट्रई के अनुयायी हो ! तुम्हें तो कोड़े लगाने चाहिए।"

"कोड़ा बुरी चीज तो नहीं," बजारोव ने रिमार्क कसा—"परन्तु हम लोग आखिरी बूंद तक आ चुके हैं······"

"किसकी ? इवदोक्सिया ने पूछा।

"शैम्पेन की, मेरी प्यारी अवदोत्या निकिटशना शैम्पेन की-तुम्हारे खून की नहीं।"

---

*पीर जोसेफ प्रधान (१८०६-६५) एक फ्रांसीसी विद्वान था जो सम्राटों की सत्ता का विरोध करना समाज के लिए घातक समझता था।

"जब स्त्रियों पर आक्रमण होता है तो मैं बरदाश्त नहीं कर पाती," इवदोक्सिया बोलती गई, "यह बहुत भयानक बात है। उन पर आक्रमण करने के बजाय अच्छा हो कि तुम लोग माइकेल की 'दिलेमर' पढ़ो। अद्भुत पुस्तक है। सज्जनो अब हमें प्रेम-सम्बन्धी बातें करनी चाहिए।" इवदोक्सिया ने आगे कहा और मस्ती से अपनी बाहें एक सिकुड़न पड़े हुए सोफे की गद्दी पर गिरा दीं।

अकस्मात खामोशी छा गई।

"नहीं, प्रेम के सम्बन्ध में बातें क्यों करें," बजारोव बोला, "आपने अभी ओदिन्तसोवा का नाम लिया था...आपने उसका यही नाम बताया था, ऐसा मेरा विश्वास है। वह कौन है ?"

"ओह, वह बड़ी सुन्दर है! अत्यन्त आकर्षक !" सितनीकोव अपने स्वर को मधुर बनाता हुआ बोला "मैं उससे तुम्हारा परिचय करा दूँगा। बड़ी चालाक लड़की है, बहुत धनवान और विधवा। दुर्भाग्य से अभी उसका मानसिक विकास नहीं हो पाया है। उसे अपनी इन इवदोक्सिया से विशेष घनिष्टता प्राप्त करनी चाहिये। इवदोक्सिया ! आपकी स्वास्थ्य-कामना के लिए। आओ ग्लास पिलाएँ। एट टाक, एट टाक, एट-टिन-टिन-टिन ! एट टाक, एट टाक, एट-टिन-टिन-टिन।"

"विक्टर, तुम हमेशा शरारत किया करते हो !"

खाने में बहुत सी चीजें थीं। शैम्पेन की पहली बोतल के बाद दूसरी आई, फिर तीसरी और अन्त में चौथी भी...इवदोक्सिया बिना रुके बराबर चहकती रही। सितनीकोव इसकी हाँ में हाँ मिलाता रहा। उन्होंने विवाह के ऊपर बहुत बातें कीं—जैसे कि विवाह एक पूर्वाग्रह है या अपराध, और यह कि सभी मनुष्यों का जन्म वैयक्तिकता का ध्यान रखते हुए हुआ है या नहीं और वैयक्तिकता क्या है। यह बातचीत अन्त में इस सीमा तक पहुँच गई जब इवदोक्सिया शराब के नशे से मस्त होकर अपनी चौड़े नाखूनों वाली उंगलियों द्वारा एक बेसुरे पियानो को बजाने लगी। उसने पहले रूखे कर्कश स्वर में कुछ जिप्सी गाने सुनाए

और फिर सिमूर सिम्स का प्रेम गीत "प्रनादा निद्रा मग्न है" वाला गीत गाया। सितनीकोव ने सिर पर एक गुलूबन्द बाँध कर एक 'मरते हुए प्रणयी' की नकल करते हुए इवदोक्सिया के स्वर में स्वर मिला कर गाया।

"हे प्रिय, अपने अधरों को मेरे अधरों पर उष्ण चुम्बन में मुद्रित हो जाने दे।" आरकेडी से यह अवस्था सहन नहीं हुई।

"सज्जनो, यह तो पागलखाने का सा दृश्य बनता जा रहा है," उसने जोर से अपना मत प्रकट किया। बजारोव ने, जो बीच बीच में एकाध व्यंग कस देता था—अन्य किसी भी वस्तु की अपेक्षा शैम्पेन में अधिक मस्त होने के कारण, अंगड़ाई ली, उठा और मेजमान से बिना विदा मांगे कमरे से बाहर निकल आया। आरकेडी ने उसका साथ दिया। सितनीकोव भी उनके पीछे भागा।

"अच्छा, तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या ख्याल है?" उसने चारों तरफ उछलते हुए कहा—"मैंने तुमसे कहा था न? विलक्षण नारी है। इसी की तरह अन्य स्त्रियाँ भी होतीं तो कितना मजा आता। यह एक तरह से चारित्रिक सदाचार की उदाहरण है।"

"और वह स्थान भी क्या तुम्हारे बाप की नैतिक सच्चाई का उदाहरण है?" बजारोव ने एक शराबखाने की ओर, जिसके सामने होकर वे लोग गुजर रहे थे, इशारा करते हुए पूछा।

सितनीकोव पुनः वही बेवकूफी की हंसी हंसा। वह अपने इस पतन का ख्याल कर बहुत लज्जित था और यह नहीं समझ पा रहा था कि बजारोव के इस अप्रत्याशित अपनत्व से उसे प्रसन्न होना चाहिए या रुष्ट।

१४

कई दिनों बाद गवर्नर के यहाँ नृत्य समारोह हुआ। कोल्याजिन उस दिन का प्रमुख अतिथि था। कौंसिल के प्रेसीडेन्ट ने सब पर यह

प्रकट किया कि वास्तव में वह तो केवल उसी के कारण वहाँ आया था। उस समय गवर्नर नृत्य के अवसर पर और उस समय भी जब वह आज्ञा देने के मूड में अचल रहता था, प्रबन्ध करने में व्यस्त था। कोल्याजिन की नम्रता की बराबरी तो केवल उसकी शाही तड़क-भड़क ही कर सकती थी। वह हर एक की ओर देखता था। किसी की तरफ उपेक्षा की दृष्टि से तथा किसी की ओर अभ्यर्थना और सम्मान की दृष्टि से। महिलाओं के सम्मुख तो वह फ्रांसिसी सज्जन के समान, किसी प्राचीन वीर के अनुसार व्यवहार कर रहा था और राजनीतिज्ञों के समान बराबर दिल खोल कर हँस रहा था। उसने आरकेडी की पीठ थपथपाई और सब को सुनाते हुए ऊँचे स्वर में उसे 'प्रिय भतीजे' के नाम से सम्बोधित किया। बजारोव की तरफ, जो एक पुराना सूट पहने हुए था, उसने एक तीक्ष्ण परन्तु उड़ती हुई दृष्टि डाली और बराबर अस्पष्ट परन्तु विनम्र शब्दों में बड़बड़ाता रहा जिनमें ये केवल "मैं" तथा "ऐसा ही" शब्द सुनाई पड़ते थे। उसने सितनीकोव की तरफ उंगली से संकेत किया और मुस्कराया यद्यपि इस बार उसका मुँह दूसरी ओर मुड़ा हुआ था और कुकशिना की तरफ देख कर, जो बिना कलफ के कपड़े और मैले दस्ताने पहने तथा बालों में 'स्वर्गीय पक्षी' लगा कर आई, वह बुदबुदाया—"आकर्षक"।

वहाँ बड़ी भीड़ इकट्ठी हो रही थी। नाचने वाले पुरुष बहुत थे। नागरिक दीवालों पर बने हुए सजावट के फूलों की तरह सुस्त और क्रियाहीन से प्रतीत हो रहे थे परन्तु सैनिक बड़ी निपुणता से नाच रहे थे। विशेष रूप से उनमें से एक जो पेरिस में छः हफ्ते रह कर अभी २ वापस आया था और जिसने वहाँ कुछ उत्तेजक शब्द सीख लिये थे जैसे—"शि", "आह, क्या खूब", "इधर आओ, इधर आओ, मेरी नन्ही" आदि। वह इन शब्दों का सही उच्चारण, बिल्कुल वैसा ही जैसा कि पेरिस में किया जाता है, करने का प्रयत्न कर रहा था परन्तु फिर भी जब वह 'निश्चय' कह रहा होता तो उसका मतलब 'नितान्त' से होता। इस प्रकार वह फ्रांसीसी भाषा का ऐसा विकृत रूसी उच्चारण कर रहा था

जिसे सुन कर फ्रांसीसी लोग बड़ा मजाक बनाते हैं। खास तौर पर उस समय जब उनकी दृष्टि में हमारे देशवासी उनकी भाषा का फरिश्तों की तरह सुन्दर उच्चारण नहीं कर पाते।

आरकेडी, जैसा कि हम लोग जानते हैं, नाचने में दक्ष नहीं था और बजारोव ने तो नाचने में कतई कोई भाग नहीं लिया। वे दोनों एक कोने में बैठे रहे जहाँ सितनीकोव भी उनके पास आकर बैठ गया। मुख पर अभ्यस्त घृणा पूर्ण मुस्कराहट लाकर तरह-तरह के व्यंग बाण छोड़ते हुए वह अहंकार पूर्ण भाव से कमरे में चारों ओर देखता हुआ आनन्दित हो रहा था। अचानक उसके चेहरे का भाव बदला और आरकेडी की ओर मुड़ते हुए उसने अपनी स्वाभाविक अपराधी प्रवृत्ति का प्रदर्शन करते हुए धीरे से कहा—"ओदिन्तसोवा यहाँ है।"

आरकेडी मुड़ा और उसने कमरे के दरवाजे पर काला गाऊन पहने हुए एक लम्बी स्त्री खड़ी हुई देखी। उसकी राजसी रूपरेखा को देख कर वह स्तम्भित हो उठा। उसकी नंगी बाहें उसके सुडौल पतले शरीर के बगल में लटकती हुईं बड़ी आकर्षक दिखाई दे रही थीं। उसके चमकीले बालों में गुँथा हुआ फूलों का गुच्छा उसके सुडौल कन्धों पर होता हुआ नीचे लटक रहा था। निर्मल नेत्रों का एक जोड़ा बुद्धिमानी और सन्तोष के साथ देख रहा था—हाँ, सन्तोष के साथ, गम्भीरता से नहीं। उसके ऊपर तनिक आगे को झुकी हुई बिल्कुल स्पष्ट भौंहों की रेखाएँ थीं। उसके अधरों पर कठिनता से दिखाई पड़ने वाली अत्यन्त सूक्ष्म हँसी का भाव था, मुखमण्डल से एक कोमल और सम्मोहनी प्रभा छिटक रही थी।

"तुम उसे जानते हो?" आरकेडी ने सितनीकोव से पूछा।

"बहुत अच्छी तरह से। तुम उससे परिचय करना चाहते हो?"

"मुझे कोई ऐतराज नहीं······इस नृत्य के बाद।"

बजारोव का ध्यान भी ओदिन्तसोवा की ओर गया।

"यह कौन जानवर है?" उसने पूछा—"यहाँ ऐसी सुन्दरी और कोई भी नहीं है।"

जब नृत्य समाप्त हो गया तो सितनीकोव आरकेडी को ओदिन्त-सोवा के पास ले गया। जैसा कि उसने आरकेडी को विश्वास दिलाया था, ओदिन्तसोवा के साथ उसका कोई विशेष परिचय नहीं प्रतीत हुआ। वह घबड़ा कर बोल रहा था और ओदिन्तसोवा उसकी तरफ आश्चर्य से देख रही थी। किन्तु जब आरकेडी का पूरा नाम बताया गया तो उसके चेहरे पर गहरी रुचि का भाव झलकने लगा। उसने पूछा कि वह निकोलाई पेट्रोविच का पुत्र तो नहीं है ?

"हाँ, मैं उन्हीं का पुत्र हूँ।"

"मैं आपके पिता से दो बार मिल चुकी हूँ और उनके विषय में बहुत कुछ सुना भी है", वह कहती गई, "मुझे आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई।"

इसी समय एक सहायक अफसर उसके पास आया और अपने साथ नाचने का निमन्त्रण देने लगा। उसने स्वीकार कर लिया।

"आप नाचती हैं ?" आरकेडी ने सम्मान का भाव प्रदर्शित करते हुए पूछा।

"हाँ, आपने यह कैसे सोचा कि मैं औरों की तरह अधिक उम्र की लगती हूँ ?

"ओह, नहीं, नहीं, वास्तव में······लेकिन अगर ऐसी बात है तो आप मेरे साथ मजूर्का नृत्य नाचेंगी ?"

ओदिन्तसोवा अनुग्रहपूर्वक मुस्कराई।

"बहुत अच्छा," वह बोली और आरकेडी की ओर इस तरह देखा जिसमें पूर्ण रूप से बड़प्पन की भावना न होकर एक ऐसी भावना थी जिससे एक विवाहित बहिन अपने छोटे भाइयों को देखती है।

ओदिन्तसोवा आरकेडी से बहुत बड़ी नहीं थी। उसकी उम्र उन्तीस वर्ष की थी। परन्तु उसके सामने वह एक स्कूली छोकरा सा लगता था-एक अनुभव शून्य अल्हड़ विद्यार्थी, मानों उन दोनों की अवस्था में बहुत बड़ा अन्तर हो। मट्वी इलियच ओदिन्तसोवा के पास

शाही शान से आकर मीठी बातें करने लगा। आरकेडी पीछे हट गया परन्तु पूरे समय तक ओदिन्तसोवा पर, जब तक वह नाचती रही, अपनी निगाह गड़ाए रहा। नाचते समय वह अपने नाच के साथी से भी उसी सरलता से बातें करती रही जिससे उसने इलियच से की थीं। कोमलता पूर्वक उसने अपना सिर हिलाया और अपनी आँखें घुमाती हुई एक या दो बार धीमी हंसी हंसी। साधारण रूसी नाकों की तरह उसकी नाक कुछ मोटी थी और उसका रंग भी इतना स्वच्छ नहीं था जिसे सर्वोत्कृष्ट कहा जाय फिर भी आरकेडी ने यह निश्चय किया कि अपने जीवन में उसने कभी भी ऐसी अनिन्द्य और मोहक दूसरी नारी नहीं देखी। उसके कानों में उसके स्वरों का मोहक संगीत गूंजता रहा। उसके गाऊन में पड़ी हुई सलवटें, अन्य स्त्रियों के गाऊनों की अपेक्षा, भिन्न प्रकार की परन्तु अधिक भव्य और लहरदार थीं। उनकी गति में स्निग्धता और स्वाभाविकता थी।

जब मजूर्का नृत्य की रागिनी बजनी प्रारम्भ हुई और आरकेडी अपनी प्रस्तावित जोड़ी (ओदिन्तसोवा) के पास बैठा तो उस पर संकोच का भाव छा गया। वह अपने बालों पर हाथ फेरते हुए अवशता से अभिभूत होकर चुपचाप बैठा रहा। परन्तु उसका संकोच और व्यग्रता अधिक देर तक नहीं टिक सकी क्योंकि ओदिन्तसोवा की चुप्पी ने उस पर प्रभाव डाला और पन्द्रह मिनट से भी कम समय बीतते बीतते वह उसके साथ अपने पिता, चाचा, सेन्ट पीटर्सबर्ग के अपने जीवन तथा देहात के विषय में बातें करने लगा। ओदिन्तसोवा एक विनम्र सहानुभूति पूर्ण भाव से अपने पंखे को धीरे से खोलती और बन्द करती हुई उसकी बातें सुनती रही। इस वार्तालाप में केवल तभी बाधा पड़ती थी जब कभी ओदिन्तसोवा को कोई अपने साथ नाचने के लिए निमंत्रित करता। उसे निमंत्रण देने वालों में से सितनीकोव ने उसे दो बार बुलाया। नाच खत्म होने के बाद वह पुनः अपने स्थान पर आकर बैठ जाती, अपना पंखा उठाती; परिश्रम या थकावट के फलस्वरूप उसके सांस लेने में कोई अन्तर नहीं पड़ता। आरकेडी पुनः बात शुरू करता। वह उस समय यह

सोचकर बहुत गर्व का अनुभव कर रहा था कि वह ओदिन्तसोवा के पास बैठ कर उससे बातें कर रहा है। बात करते समय वह उसके नेत्रों में झांकने का प्रयत्न करता, उसकी सुन्दर भौंहों को देखता। उसके गम्भीर एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण मुखमंडल को देख कर वह बहुत प्रभावित हो रहा था। वह स्वयं कम बोलती थी परन्तु उसके शब्दों से संसार के ज्ञान का परिचय मिलता था। उसकी कुछ बातों से आरकेडी ने यह निष्कर्ष निकाला कि इस नवयुवती को जीवन का यथेष्ठ अनुभव है और इसने विभिन्न समस्याओं पर खूब मनन किया है—

"जब मिस्टर सितनीकोव आपको मेरे पास लाए थे," उसने आरकेडी से पूछा, "आपके पास वह कौन खड़ा था ?"

"क्यों, क्या आपने उसे देखा था ?" आरकेडी ने उत्तर में प्रश्न किया— "वह सुन्दर है, है न ? उसका नाम बजारोव है, और मेरा दोस्त है।"

और आरकेडी ने 'अपने दोस्त' के बारे में बताना शुरू किया।

वह उसके विषय में इतने विस्तार और इतने उत्साह से बोला कि ओदिन्तसोवा ने मुड़ कर बजारोव की तरफ गौर से देखा । इस समय तक मजूर्का नृत्य समाप्त होने को आगया था। आरकेडी को अपने साथी से बिछुड़ने का दुःख था। उसने उसके साथ कितना सुन्दर समय बिताया था। यह सच है कि वह प्रारम्भ से ही यह अनुभव कर रहा था कि उसके साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार हो रहा है जिसके लिये उसे कृतज्ञ होना चाहिये परन्तु नवयुवकों के हृदय पर इन बातों का कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता ।

सङ्गीत रुक गया।

"अच्छा", ओदिन्तसोवा ने उठते हुए कहा—"आपने मेरे यहाँ आकर मुझसे मिलने का वायदा किया है—अपने साथ अपने मित्र को भी लाना। मैं ऐसे व्यक्ति को देखने के लिये बहुत उत्सुक हूँ जो इतना साहसी है कि किसी भी चीज में विश्वास नहीं करता।"

गवर्नर ओदिन्तसोवा के पास आया, भोजन तैयार होने की सूचना दी और नम्रतापूर्वक उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया। जब वह चलने लगी तो उसने मुड़ कर आरकेडी की तरफ विदाई की मुस्कान बिखेरते हुए सिर हिलाया। उसने जरा झुक कर उत्तर दिया और उसकी जाती हुई रूप रेखा को देखता रहा (भूरी चमक लिए हुए काले रेशमी गाऊन में उसका शरीर कितना सुडौल लग रहा था।) और वह सोचते हुए कि 'वह मेरे अस्तित्व को ही भूल चुकी होगी' उसने गहरी निराशा का अनुभव किया।

"क्यों ?" जैसे ही आरकेडी कौने में बजारोव के पास पहुँचा, बजारोव ने उससे पूछा—"समय तो अच्छा कटा होगा ? एक सज्जन अभी मुझे बता रहे थे कि यह महिला–ओह–ओह–ओह है। वह मुझे बेवकूफ सा लगा। तुम्हारी क्या राय है ? क्या वह वास्तव में ऐसी ही है जैसा कि उसने बताया था ?"

"मैं इस परिभाषा को नहीं समझ सका," आरकेडी ने जवाब दिया।

"क्यों, मैं भी नहीं समझा ! कितने भोले हो !"

"अच्छा, या फिर मैं आपके उन सज्जन को नहीं समझ सका। निस्सन्देह ओदिन्तसोवा अत्यन्त आकर्षक है परन्तु वह इतनी उदासीन और गम्भीर प्रकृति की है कि······"

"ऊपर से शान्त दिखाई पड़ने वाले पानी में बहुत गहराई में धारा बहती है ·····तुम जानते हो !" बजारोव ने व्यंग कसा—"तुम कहते हो वह उदासीन है। यही तो सबसे बड़ी विशेषता है। तुम्हें आइसक्रीम अच्छी लगती है, क्यों अच्छी लगती है न ?"

"शायद," आरकेडी बुदबुदाया–"मैं इस बात का निर्णय नहीं कर सकता। वह तुमसे परिचित होना चाहती है और उसने मुझसे तुम्हें अपने साथ लाने के लिए कहा है।"

"तुमने जो मेरी तारीफ के पुल बांधे होंगे मैं सहज ही उनका अनुमान लगा सकता हूँ। फिर भी तुमने ठीक ही किया। मुझे साथ ले

चलना। वह जो कुछ भी हो, चाहे प्रान्त की सर्वश्रेष्ठ नारी या कुकशिना की तरह उड़ाकू परन्तु उसके कन्धे वास्तव में इतने सुन्दर हैं जैसे मैंने बहुत समय से नहीं देखे।"

बजारोव की इस विद्रूपी मज़ाक से आरकेडी उत्तेजित हो उठा परन्तु, जैसा कि प्रायः होता है, उसने अपने दोस्त को उसकी उस बात के विरुद्ध, जिसे वह बहुत नापसन्द करता था, बिल्कुल दूसरी ही बात पर डाँटा।

"तुम स्त्रियों के विचार-स्वातन्त्र्य का विरोध क्यों करते हो?" उसने दबी जबान से कहा।

"क्योंकि, मेरे प्यारे दोस्त, स्त्रियों में विचार स्वातन्त्र्य होने के परिणाम मैंने बहुत बुरे देखे हैं।"

इस बात के साथ ही वह वार्तालाप समाप्त हो गया। भोजन के तुरन्त बाद ही वे दोनों नौजवान चले गए। कुकशिना ने उन्हें जाते हुए देख कर अधीरतापूर्ण ईर्षी मुस्कराहट फेंकी जिसमें गम्भीरता थी। उसके अहंकार को इस बात से बड़ी ठेस पहुँची कि इन दोनों ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वह नृत्य समारोह में भाग लेने वालों में सबसे बाद में गई। उसने सुबह तीन बजे के बाद सितनीकोव के साथ पेरिस के ढंग से पोल्का-मजुर्क नामक नृत्य नाचा और उसके साथ ही गवर्नर का वह आडम्बर पूर्ण नृत्य समारोह समाप्त हो गया।

१५

"हमें यह देखना है कि यह युवती जीवधारियों की किस कोटि में आती है," दूसरे दिन ओदिन्तसोवा के होटल की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए बजारोव आरकेडी से कह रहा था—"उसमें हम ऊपर से जो कुछ देखते हैं उससे भी कुछ अधिक है।"

"मुझे तुम पर बड़ा आश्चर्य होता है!" आरकेडी चीखा—"क्या तुम यह कहना चाहते हो, कि तुम, बजारोव इतने संकीर्ण विचार वाले हो कि यह विश्वास करते हो कि……"

"बेवकूफ मत बनो" बजारोव लापरवाही से बोला—"यही तो समय है जब तुमने जाना है कि हमारे कहने का यही ढंग है कि सब चीज ठीक है। यह सब चक्की में पिसने के समान है। तुम ही तो आज मुझे बता रहे थे कि उसकी शादी कैसी विचित्र परिस्थितियों में हुई थी। हालांकि, मेरे विचारानुसार किसी बुड्ढे अमीर से शादी करना कोई विचित्र बात न होकर बुद्धिमानी ही है। मैं शहर की गप्पों में विश्वास नहीं करता परन्तु मैं यह सोचना अच्छा समझता हूँ कि जैसा कि हमारे सुसंस्कृत गवर्नर ने कहा था कि 'इसमें कुछ है अवश्य'।"

आरकेडी ने चुप रहते हुए दरवाजा खटखटाया। वर्दी पहने हुए एक नौकर ने इन दोनों को एक बड़े कमरे में पहुँचाया जो आम रूसी होटलों के कमरों की तरह बुरी तरह सजा हुआ था। परन्तु उसमें फूलों की भरमार थी। एक सादी सुबह की पोशाक पहने हुए ओदिन्तसोवा शीघ्र ही वहाँ आई। वसन्त की प्रभात कालीन आभा में वह अधिक अल्पवयस्का प्रतीत हो रही थी। आरकेडी ने उससे बजारोव का परिचय कराया और छिपे हुए आश्चर्य के साथ उसने देखा कि बजारोव कुछ घबड़ा उठा था जब कि ओदिन्तसोवा पूर्णतः शान्त और गम्भीर थी जैसी कि वह पहली रात को दिखाई पड़ी थी। बजारोव अपनी घबड़ाहट के प्रति सजग था इसलिए उसने परेशान होकर सोचा—'क्या तुम कभी किसी भी स्त्री को देख कर इतने परेशान और भयभीत हुए हो?" और सितनीकोव की तरह एक आरामकुर्सी पर बैठ कर झूलते हुए अत्यधिक बेरुखी का प्रदर्शन करते हुए बातें करने लगा। ओदिन्तसोवा उसकी ओर स्थिर नेत्रों से ध्यान पूर्वक देखती हुई उसे समझने का प्रयत्न करती रही।

अन्ना सर्जीवना ओदिन्तसोवा का पिता सर्जी निकोलयाविच लोक्टेव एक बदनाम छैला, आवारा और जुआरी था जो पन्द्रह वर्ष तक सेन्ट पीटर्सबर्ग और मास्को में पानी की तरह अपना धन बर्बाद करने के बाद देहात में जाकर बसने के लिए बाध्य हुआ था जहाँ शीघ्र ही उसका देहान्त हो गया। अपने पीछे उसने अपनी दोनों बेटियों

के लिए बहुत कम जायदाद छोड़ी थी। बेटियों में बड़ी अन्ना की उम्र बीस साल की तथा छोटी कतेरिना की बारह वर्ष की थी। उनकी माँ (जो एक निर्धन नवाबी परिवार की बेटी थी) की मृत्यु सेन्टपीटर्सबर्ग में उसी समय हो चुकी थी जब उसके पति का सितारा बुलन्दी पर था। पिता की मृत्यु हो जाने के बाद अन्ना की स्थिति दयनीय हो उठी क्योंकि सेन्टपीटर्सबर्ग में रह कर उसने जो उच्च शिक्षा प्राप्त की थी उससे वह गृह प्रबन्ध या जमींदारी की सुचारु व्यवस्था करने की दक्षता से अनभिज्ञ ही रही थी। साथ ही उसके लिए उस देहाती वातावरण में जीवन बिताना भी असह्य हो उठा। वह उस जिले में किसी से भी परिचित नहीं थी और वहाँ न कोई ऐसा ही व्यक्ति था जिससे वह सलाह ले सकती। उसके पिता ने अपने पड़ोसियों की सदैव उपेक्षा की थी जिनको वह नफरत करता था और जिसे वे लोग घृणा की दृष्टि से देखते थे। दोनों का दृष्टिकोण अपना अपना अलग था। वह घबड़ाई नहीं। उसने शीघ्र ही अपनी माँ की बहिन राजकुमारी अवदोत्या स्टेपनोव्ना ए. स को अपने साथ रहने के लिए बुला लिया। वह चिड़चिड़े स्वभाव की बड़ी असभ्य बुढ़िया थी। उसने अपनी भतीजी के घर में अड्डा जमाकर घर के सारे अच्छे कमरों पर स्वयं कब्जा जमा लिया और सुबह से लेकर शाम तक बड़बड़ाना और डाटना शुरू कर दिया। वह बगैर अपने एकमात्र गुलाम को साथ लिए, जो एक भद्दे रङ्ग की वर्दी, नीला कालर तथा एक तिकोनी टोपी पहने रहता था, कभी भी बाग में टहलने नहीं जाती थी। अन्ना ने धैर्यपूर्वक अपनी मौसी की सब सनकों को सहा और अपनी बहिन के पालन-पोषण में दत्त-चित्त हो गई। उसे देखकर यह लगता था मानो उसने अपने यौवन को इसी प्रकार एकाकी जीवन बिताते हुए नष्ट कर देने का संकल्प कर रखा है।……लेकिन भाग्य में कुछ और ही लिखा था। एक ओदिन्तसोव नामक ४६ वर्ष के बहुत अमीर व्यक्ति की उस पर निगाह पड़ी जो विलक्षण रूप से पित्तोन्मादी, भारी, लम्बा, तगड़ा परन्तु स्वभाव का न तो चिड़चिड़ा और न बेवकूफ ही

था। वह उस पर आसक्त हो उठा और उसके सन्मुख विवाह का प्रस्ताव रख दिया। उसने स्वीकार कर लिया। वह उसके साथ लगभग छः साल तक रहा और मरते समय अपनी सारी जायदाद उसके नाम कर गया। उसकी मृत्यु के पश्चात लगभग एक वर्ष तक अन्ना सर्जीवना वहीं देहात में रही। उसके बाद अपनी बहिन को लेकर विदेश यात्रा को चल पड़ी। परन्तु उसने केवल जर्मनी की ही यात्रा की। घर की याद आ जाने पर वह वापस लौटी और अपने प्रिय स्थान निकोल्सको में रहने लगी जो न""""नामक नगर से चालीस वर्स्ट दूर था। वहाँ उसके पास एक विशाल सजा सजाया सुन्दर बंगला था जिसके साथ एक बाग भी था जिसमें पौधों को हरा रखने वाली नर्सरी थी। स्वर्गीय ओडिन्टसोव अपने आराम और सुख के मामले में कंजूसी नहीं करता था। अन्ना सर्जीवना शहर बहुत कम जाती थी। अगर उसे कभी शहर जाना ही पड़ता तो विशेष कार्य वश और वह भी बहुत थोड़े समय के लिए। अपने प्रदेश में उसका कोई विशेष सम्मान नहीं था। ओडिन्टसोव के साथ उसके विवाह ने काफी बावैला मचा दिया था और उसके विषय में अनेक अपवादों की सृष्टि हो चुकी थी। उसके विषय में यह भी प्रसिद्ध था कि उसने अपने आप को दुष्कर्मों के लिए उकसाया था। उसे, यह ख्याल किया जाता था कि, अपनी किसी बदनामी को छिपाने के लिए ही विदेश यात्रा के लिए मजबूर होना पड़ा। "अब आप इन बातों से खुद ही सोच सकते हैं।" इस प्रकार के किस्से कहने वाले असन्तुष्ट व्यक्ति खीझ कर कहते। "उसने सब तरह की मुसीबतें सही हैं," उसके बारे में यह कहा जाता था। और उसी प्रान्त के एक अफवाह उड़ाने वाले मसखरे ने यह और जोड़ दिया था कि—"और खौलते तेल में भी।" अन्ततः ये सब किस्से उसके कानों तक भी पहुँचे परन्तु उसने कोई ध्यान नहीं दिया। वह एक दृढ़ और स्वतन्त्र विचारों वाली महिला थी।

ओदिन्तसोवा, अपने दोनों हाथों को मोड़ कर एक दूसरे पर रखे हुए, एक आराम कुर्सी में उठंग कर बैठ गई और बजारोव की बातें सुनती रही। वह अपनी हमेशा की आदत के खिलाफ, बड़ी जल्दी जल्दी बोलकर अपने श्रोता का मनोरंजन करने का प्रयत्न कर रहा था जिससे आरकेडी को और भी अधिक आश्चर्य हुआ। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचने में असफल रहा कि बजारोव को अपने प्रयत्न में सफलता मिल रही है या नहीं। अन्ना सर्जीएव्ना के चेहरे से उसके हृदय में उठने वाले भावों का कुछ भी पता नहीं चल रहा था। वह पूर्ण गम्भीर और नम्र बनी रही। उसके नेत्रों में एकाग्रता की चमक थी परन्तु वह मनोभावों से पूर्णतः शून्य थीं। पहले कुछ क्षणों तक बजारोव की बातों का उस पर बुरा प्रभाव पड़ा जैसे उसने किसी दुर्गन्ध को सूंघा हो या कोई कर्कश वाणी सुनी हो। लेकिन उसे शीघ्र ही यह पता चल गया कि बजारोव परेशान हो उठा है। उसे यह भी ज्ञात हुआ कि इस प्रकार बोलकर वह उसकी चापलूसी कर रहा है। वह केवल गन्दी बातों से दूर रहती थी। इस समय बजारोव की बातों में उसे ऐसी कोई भावना नहीं दिखाई दी। आरकेडी के लिए यह दिन आश्चर्यपूर्ण घटनाओं का दिन था। उसे यह उम्मीद थी कि बजारोव, ओदिन्तसोवा जैसी सतर्क महिला से अपने सिद्धान्तों और विचारों के बारे में बातें करेगा। वास्तव में, ओदिन्तसोवा ने स्वयं ऐसे व्यक्ति से मिलने की इच्छा प्रकट की थी, "जो इतना साहसी है कि किसी भी सिद्धान्त में विश्वास नहीं रखता।" इसके विरुद्ध यहाँ आकर बजारोव दवाइयां, होम्योपैथी और वनस्पति विज्ञान पर बातें कर रहा था। साथ ही, यह भी पता चला कि ओदिन्तसोवा ने भी अपना जीवन एकाकी और आलस्य में ही नहीं बिताया है। उसने उच्चकोटि के साहित्य का अध्ययन किया है और रूसी भाषा का उसका ज्ञान भी सुन्दर है। उसने बातचीत की धारा को संगीत की ओर मोड़ा परन्तु यह जानकर कि बजारोव कलाओं का विरोधी है, उसने नम्रता-पूर्वक पुनः वनस्पति विज्ञान की चर्चा छेड़ दी यद्यपि इसी बीच

आरकेडी ने ग्राम्य-संगीत के विषय में अपना मन्तव्य प्रकट किया था। ओदिन्तसोवा अब भी आरकेडी के साथ एक छोटे भाई का सा ही व्यवहार कर रही थी। आरकेडी में उसे केवल नवयुवकोचित सरलता और अल्हड़पन ही ऐसे गुण दीखे जिन्हें वह पसन्द करती थी। तीन घन्टे तक यह उत्साहपूर्ण और तर्कयुक्त वार्तालाप, विभिन्न विषयों को लेकर, अनवरत रूप से चलता रहा।

अन्त में हमारे दोस्त विदा लेने के लिए उठ खड़े हुए। अन्ना सर्जीएव्ना ने कृपापूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देख कर अपना सुन्दर गोरा हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया और एक क्षण सोचकर अस्थिर परन्तु स्निग्ध मुस्कराहट के साथ बोली—

"महाशयो, यदि आप लोगों को ऊबने का भय न हो तो मुझसे निकोल्सको में आकर मिलना।"

"ओह, अन्ना सर्जीएव्ना," आरकेडी चीखा, "मैं इसे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझूंगा।"

"और आप, मिस्टर बजारोव ?"

बजारोव केवल झुककर रह गया—और आरकेडी ने अन्तिम आश्चर्य के रूप में देखा कि उसका मित्र शरमा रहा था।

"अच्छा, "आरकेडी ने उससे बाहर सड़क पर आकर कहा,–" क्या तुम्हारा अब भी यह विश्वास है कि वह ओह-ओह-ओह है ?"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इसके विषय में क्या राय कायम करूँ ? वह मूर्ति की तरह बिलकुल निष्प्राण और ठण्डी है।" कुछ देर रुक कर बजारोव ने फिर कहा, "यह महिला, ग्रांड डचेज के समान प्रभावशालिनी और भव्य है। इसकी पूर्ति के लिये केवल इस बात की आवश्यकता और है कि उसके सिर पर मुकुट और पीछे परिचारिकाओं की एक लम्बी पंक्ति हो।"

"हमारी ग्रांड डचेज ऐसी रूसी भाषा नहीं बोल पाती", आरकेडी ने अपनी राय जाहिर की।

"उसने जीवन का संघर्ष देखा है, दोस्त, यह हमारी रोटी का स्वाद जानती है—पहले यह भी हमारी तरह गरीब थी।"

"जो तुम्हारे मन में आये सो कहो, परन्तु वह है कितनी आकर्षक," आरकेडी बोला।

"अत्यन्त सुन्दर शरीर पाया है उसने!" बजारोव कहता गया—"शरीर-रचना-शास्त्र के अध्ययन के लिए कितना सुन्दर मसाला है।"

"चुप रहो, इवगिनी, खुदा के वास्ते चुप रहो! तुम जानते हो, हर बात की एक सीमा होती है।"

"अच्छी बात है, नाराज मत हो, यार! कुछ भी हो, है वह फर्स्ट क्लास चीज। उससे चल कर जरूर मिलना चाहिए।"

"कब?"

"परसों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? यहाँ पड़े रहने से क्या फायदा? कुकशीन के साथ शैम्पेन पीना? या तुम्हारे उस उदार उच्चाधिकारी रिश्तेदार की बातों पर कान हिलाना? अच्छा तो परसों ही चलना तय रहा। एक बात यह भी है कि मेरे पिता का फार्म भी वहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। यह निकोल्सकोय न—नामक सड़क पर है न?"

"हाँ।"

"ठीक है! अब हमें समय नहीं नष्ट करना है। सिर्फ बेवकूफ ऐसा करते हैं—और अक्लमन्द परिन्दे। खुदा की कसम क्या सुन्दर शरीर पाया है।"

तीन दिन बाद दोनों दोस्त निकोल्स्कोय की सड़क पर जा रहे थे। धूप चमकीली थी, परन्तु ज्यादा गरम नहीं और चमकीली छोटी गाड़ी के घोड़े अपनी गुंथी हुई पूंछ को इधर उधर हिलाते हुए चपल गति से आगे बढ़े जा रहे थे। आरकेडी ने सड़क की तरफ देखा और मुस्कराया। वह खुद नहीं जानता था कि किसलिए।

"मुझे बधाई दो" बजारोव अचानक बोला, "आज २२ जून है, मेरे गृह देवता का दिवस। हम देखेंगे कि वह हमारे लिए क्या सौभाग्य

लाता है। आज वे लोग घर पर मेरा इन्तजार कर रहे होंगे," उसने स्वर को धीमा करते हुए आगे कहा—"कोई बात नहीं, उन्हें इन्तजार करने दो।"

१६

अन्ना सर्जीएव्ना का विशाल भवन, जिसमें वह रहती थी, एक पहाड़ी की खुली हुई तरफ बना हुआ था। उससे थोड़ी ही दूरी पर पीली ईंटों का बना हुआ एक गिरजा था जिसकी छत हरी, और खम्भे सफेद थे और उसके प्रवेश द्वार पर पलस्तर में बनाए हुए इटैलियन शैली के चित्र बने हुए थे जिनमें ईसा मसीह के मृत्युंजय रूप को दिखाया गया था। उसके सामने, मैदान में, शिरस्त्राण धारण किए एक काले रंग की योद्धा की मूर्ति थी जिसकी गढ़न की गोलाई दर्शनीय थी। गिरजे के पीछे मकानों की दो पंक्तियों में एक लम्बा गाँव बसा हुआ था जिसमें कहीं कहीं फूस की छतों से ऊपर उठी हुई चिमनियां दिखाई दे रही थीं। उस विशाल भवन की बनावट गिरजे की बनावट जैसी ही थी जिसे आमतौर पर 'एलेक्जेन्ड्री शैली' कहा जाता है, उस भवन पर भी पीला रंग किया गया था और छत हरी थी। उसके खम्भे सफेद थे और प्रवेशद्वार युद्ध के चित्रों से सजाया गया था। एक प्रसिद्ध प्रान्तीय शिल्पी ने, स्वर्गीय ओदिन्तसोव की इच्छानुसार, जो अपने विचारानुसार तत्व रहित काल्पनिक विचारों को सहन नहीं कर सकता था, इन दोनों इमारतों को बनाया था। भवन के दोनों तरफ, एक पुराने बाग के गहरे हरे रंग के पेड़ों की लम्बी कतारें लगी हुई थीं और भवन प्रवेशद्वार तक आने वाली सड़क के दोनों तरफ संवारे हुए फर के पेड़ लगे हुए थे।

बड़े हॉल की गैलरी में हमारे मित्रों का दो कद्दावर वर्दीधारी नौकरों ने स्वागत किया, जिनमें से एक तुरन्त ही खानसामे की तलाश में चला गया। खानसामा, जो एक मोटा आदमी था और काला लम्बा

कोट पहने हुए था, तुरन्त हाजिर हुआ और महमानों को कालीन बिछी हुई सीढ़ियों से होकर उनके कमरे में ले गया जिसमें दो पलंग और अन्य नहाने धोने और श्रृङ्गार के समस्त साधन प्रस्तुत थे। निश्चित रूप से यह एक ऐसा घर था जिसमें चारों ओर सुव्यवस्था दिखाई दे रही थी। वहाँ की प्रत्येक वस्तु नवीन और उचित आकार प्रकार की थी। मंत्रालय के प्रतीक्षालयों के समान वहाँ के वातावरण में एक भीनी सुगन्ध भरी हुई थी।

"अन्ना सर्जीयेव्ना प्रार्थना करती हैं कि आप उनसे आध घन्टे बाद आकर मिलें," खानसामा ने कहा, "इस बीच आपको किसी और वस्तु की आवश्यकता है?"

"नहीं, किसी चीज की नहीं, भले आदमी," बजारोव ने जवाब दिया—"अगर तब तक तुम एक गिलास वोद्का ला सको तो······।"

"जो आज्ञा, श्रीमान्," खानसामा ने जवाब दिया। खानसामा कुछ अचकचा उठा था। लौटते समय उसके बूट चरमरा उठे।

"क्या शान है!" बजारोव बोला, "मेरा ख्याल है कि तुम लोगों की भाषा में यही कहा जाता है? ग्रान्ड डचेज बिल्कुल ऐसी ही होती है।"

"एक सुन्दर ग्रान्ड डचेज," आरकेडी ने जवाब दिया,—"जिसने बिना किसी हिचक के, हम जैसे दो अत्यन्त उच्च कोटि के अमीरों को निमन्त्रित किया है।"

"खासतौर से मुझे, जो एक भावी डाक्टर, एक डाक्टर का लड़का और एक मठाधीश का नाती है। तुम जानते हो कि मैं एक मठाधीश का नाती हूँ।"

और थोड़ी देर बाद होठों को सिकोड़ता हुआ पुनः बोला—

"स्पेरेंस्की की तरह। मेरा ख्याल है वह मनोरंजन में अवश्य दिलचस्पी लेती होगी। जरूर, यह महिला जरूर दिलचस्पी लेती होगी। सम्भव है कि अब हम लोगों को भी सूट पहनना पड़े।"

आरकेडी ने केवल अपने कन्धे उचकाए''परन्तु वह भी थोड़ी सी परेशानी अनुभव कर रहा था।

आध घन्टे बाद बजारोव और आरकेडी नीचे ड्राइंग रूम में पहुँचे। यह एक लम्बा चौड़ा, हवादार और खूब तड़क भड़कदार सामानों से सजा हुआ था पर अत्यधिक सुरुचिपूर्ण नहीं था। भारी और कीमती फर्नीचर पुराने ढंग से कागज से मढ़ी हुई दीवालों के सहारे सजा हुआ था। स्वर्गीय ओदिन्तसोव ने इसे मास्को से अपने एक मित्र और एजेन्ट द्वारा मंगवाया था जो शराब का व्यापारी था। केन्द्रीय दीवान के ऊपर एक मोटे सुन्दर बालों वाले व्यक्ति की तस्वीर टंगी हुई थी। उसे देखने से ऐसा लगता था मानो वह आने वालों को अप्रसन्नतापूर्वक घूर रहा हो।

"मेरा ख्याल है, यह बुड्ढे ओदिन्तसोव का चित्र है," बजारोव ने धीरे से आरकेडी के कान में कहा और अपनी नाक रगड़ते हुए आगे बोला—"हम लौट चलें तो कैसा रहे?"

इसी समय ओदिन्तसोवा कमरे में दाखिल हुई। वह एक हल्के रंग की झीनी पोशाक पहने हुई थी। उसने अपने बाल संवार कर कानों के पीछे इस तरह से बांध रखे थे जिससे उसके कोमल, पवित्र मुख कर बालिका का सा अल्हड़पन झलक उठा था।

"अपने बचन को पूरा करने के लिए आप लोगों को धन्यवाद," उसने कहना शुरू किया—"कि आपने मेरा महमान बनना स्वीकार किया। वास्तव में, यह कोई बुरी जगह तो नहीं है। मैं अपनी बहन से आपका परिचय कराऊँगी। वह पियानो बहुत अच्छा बजाती है। यह आपको तो अच्छा नहीं लगता मिस्टर बजारोव, लेकिन मेरा विश्वास है कि मिस्टर किरसानोव को संगीत से प्रेम है। मेरी बहन के अलावा मेरे साथ मेरी एक बुढ़िया चाची भी रहती हैं और कभी कभी ताश खेलने के लिए एक पड़ोसी महोदय भी तशरीफ ले आते हैं। हम सब का सहवास आप लोगों को मिलेगा। अब आइए हम लोग बैठ जांय।"

ओदिन्तसोवा ने यह स्पीच एक ऐसे अजीब परन्तु स्पष्ट ढङ्ग से दी मानो उसे जवानी रटी हुई हो। फिर वह आरकेडी की ओर मुड़ी। ऐसा मालूम पड़ा कि उसकी माँ आरकेडी की माँ को जानती थी और उस समय उसकी विश्वासपात्र रही थी जब निकोलाई पैट्रोविच के साथ उसकी प्रेमलीला चल रही थी। आरकेडी उत्साहपूर्वक अपनी माँ के विषय में बातें करने लगा और बजारोव उठकर चित्रों का एलबम देखने लगा। "मैं कैसा मेमना जैसा पालतू बन गया हूँ।" उसने सोचा।

एक सुन्दर बोर्जोई कुत्ता जिसके गले में एक नीला पट्टा बंधा हुआ था दौड़ता हुआ उस कमरे में आया और फर्श पर पंजा मार-मार कर शोर मचाने लगा। उसके पीछे पीछे लगभग अठारह वर्ष की, काले बालों और गेहुँआ रंग की लड़की आई जिसका चेहरा कुछ कुछ गोल परन्तु आकर्षक और छोटी काली आँखें थीं। उसके हाथों में फूलों से भरी हुई एक डलिया थी।

"यह मेरी बहन कात्या है," ओदिन्तसोवा ने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा।

कात्या ने अभिवादन किया और बहन के बगल में बैठ कर फूल छांटने लगी। वह बोर्जोई कुत्ता जिसका नाम फिफी था, एक एक कर दोनों महमानों के पास गया और पूंछ हिलाते हुए अपनी ठंडी नाक से उनके हाथ चाटे।

"क्या ये सब फूल तुमने खुद ही तोड़े हैं?" ओदिन्तसोवा ने पूछा।

"हाँ," कात्या ने जवाब दिया।

"क्या चाची चाय लिए आ रही हैं?"

"हाँ, आ रही हैं।"

जब कात्या बोलती तो बड़े आकर्षक ढङ्ग से शर्माते हुए, सरलता पूर्वक मुस्कराती। अपनी भौहों के नीचे से तीखी निगाह से देखने का उसका तरीका बड़ा मोहक था। उसकी हर चीज और हर बात में स्फूर्ति और विशुद्ध सरलता थी—उसकी बोली, चेहरे की कोमलता,

गुलाबी हथेलियों पर पीली सी गोलाकार रेखायें, तनिक संकुचित से कन्धे आदि बड़े सुन्दर और आकर्षक थे। क्षण-क्षण पर उसके मुख का रंग बदल रहा था और वह रुक रुक कर सांस ले रही थी।

ओदिन्तसोवा बजारोव की तरफ मुड़ी—

"आप इन तस्वीरों को केवल शालीनता वश ही देख रहे हैं, इवजिनी वैसीलिच," वह बोली,

"इसमें आपको आनन्द नहीं आ रहा है। अच्छा हो कि आप हमारे और नजदीक खिसक आएं जिससे हम लोग कुछ बातचीत कर सकें।"

बजारोव ने अपनी कुर्सी और नजदीक खिसका ली।

"आप किस विषय पर बात करना पसन्द करेंगी ?" उसने पूछा।

"जो आप चाहें। लेकिन आपको यह पहले से ही जताए देती हूँ कि मैं बहस के मामलों में बड़ी जिद्दी हूँ।"

"आप ?"

"हाँ, मैं। आपको आश्चर्य हो रहा है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?"

"क्योंकि, जहां तक मैं समझता हूँ आप शान्त और सुस्त प्रकृति वाली हैं और तर्क में तर्क करने वाले को स्वयं को बहा देना पड़ता है क्योंकि तर्क के लिये जोश की जरूरत होती है !"

"आपने मेरी प्रकृति को बहुत जल्दी समझ लिया है, ऐसा अनुमान होता है। पहली बात तो यह है कि मैं अधीर और जिद्दी हूँ, आप कात्या से पूछ सकते हैं। दूसरी बात यह है कि मैं शीघ्र ही भावावेश में बह जाती हूँ।"

बजारोव ने अन्ना सर्जीएव्ना की ओर देखा।

"सम्भवतः आप इस विषय में अधिक जानती होंगी। अच्छा,तो आप बहस करना चाहती हैं। अच्छी बात है। मैं आपके एल्बम में सेक्सोनी स्विटजरलैंड के दृश्य देख रहा था। आपने कहा कि इनसे मेरा मनोरंजन नहीं हो सका है। आपने यह बात इसलिये कही क्योंकि आपकी दृष्टि में मुझमें कला के प्रति कोई अभिरुचि नहीं है। यह सच है, मुझमें

कला के प्रति कोई आकर्षण नहीं है परन्तु वे चित्र मेरे लिये भौगोलिक दृष्टि बिन्दु से उपादेय हो सकते हैं, जैसे पहाड़ की बनावट का अध्ययन।"

"माफ कीजिये, भूतत्व विद्या विशारद के रूप में आप शीघ्र ही इस विषय पर लिखी गई किसी विशेष पुस्तक का हवाला देने लगेंगे न, कि किसी चित्र की विशेषता का।"

"पुस्तक के दस पृष्ठ भी मुझे उतनी बातें नहीं बता पाते जितनी कि एक चित्र की रेखायें।" थोड़ी देर तक अन्ना सर्जीएव्ना चुप रही।

"क्या दरअसल आप में कलात्मक भावनाओं का पूर्ण अभाव है?" मेज पर अपनी कुहनी टेक कर उन पर झुकते हुए उसने पूछा। इस प्रकार झुकने से उसका चेहरा बजारोव के और पास आ गया, "आप इसके बिना अपना समय कैसे काटते हैं?"

"मैं यह बात जानना चाहूँगा कि इसका उपयोग क्या है?"

"सिर्फ अध्ययन करने और मनुष्यों को समझने के लिये।"

बजारोव व्यंगपूर्वक मुस्कराया।

"पहली बात तो यह है कि मेरी इस कमी को अनुभव पूरा कर सकता है और दूसरी बात यह कि, मुझे कहने की इजाजत दीजिये, व्यक्तियों का अध्ययन करना समय की बरबादी है। सभी मनुष्य एक से हैं—शरीर और आत्मा दोनों ही में। हम में से हरेक के पास एक सा दिमाग, एक सी अंतड़ी, एक सा दिल और एक से फेंफड़े हैं। और हम सब में तथाकथित नैतिक गुण भी एक से ही हैं—थोड़ी सी भिन्नता कोई महत्व नहीं रखती। सम्पूर्ण मनुष्यों को समझने के लिये एक मानव का ज्ञान यथेष्ट है। मनुष्य जङ्गल में खड़े हुए पेड़ों के समान हैं। कोई भी वनस्पतिःशास्त्री हर पेड़ की जाँच करने की तकलीफ नहीं उठाता।"

कात्या ने जो आराम से गुलदस्ते के लिये फूल छाँट रही थी, बजारोव की तीखी, लापरवाह नजर से नजर मिलाते हुए उसकी तरफ आश्चर्य से उद्विग्न होते हुए देखा और उसके कपोल कानों तक लाल हो उठे। अन्ना सर्जीएव्ना ने अपना सिर हिलाया।

"जङ्गल के पेड़," उसने दुहराया। "तो, आपकी दृष्टि में एक चतुर और एक मूर्ख व्यक्ति में, तथा एक अच्छे और बुरे आदमी में कोई फर्क नहीं है ?"

"नहीं, है जैसे कि एक स्वस्थ और एक बीमार में होता है। एक तपेदिक के बीमार के फेफड़ों की वही हालत नहीं होती जो हमारे और आपके फेफड़ों की है हालांकि दोनों की बनावट एक सी है। हम मोटे तौर पर यह जानते हैं कि शारीरिक पीड़ा क्यों उत्पन्न होती है। कुशिक्षा से हममें नैतिक बुराइयाँ तथा वे सब बेहूदी बातें घर कर लेती हैं जिन्हें हम बचपन से पालते चले आते हैं। सारांश यह है कि इन सब के मूल में समाज की अव्यवस्थित दशा ही कार्य करती रहती है। समाज को ऊपर उठाओ, उन्नत करो। ये सब बुराइयाँ अपने आप दूर हो जायेंगी।"

बजारोव ने ये सब बातें इस ढंग से कहीं मानो वह स्वयं सोच रहा हो। "आप विश्वास करें या न करें, मैं इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं करता।" उसने अपनी लम्बी उंगलियों को धीरे-धीरे अपने गलमुच्छों पर फेरा। उसकी आँखें बेचैनी से कमरे में चारों ओर चक्कर काट रही थीं।

"तो आपका यह विश्वास है कि," अन्ना सर्जीएव्ना बोली, "जब समाज उन्नत हो जायगा तो उसमें कोई भी मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति नहीं रहेगा।"

"किसी भी दशा में, एक सुव्यवस्थित समाज में इस बात का कोई महत्व नहीं रहेगा कि कोई आदमी मूर्ख या चतुर है अथवा भला या बदमाश।"

"हाँ, मैं समझती हूँ। हम सब की अन्तड़ियाँ एक ही तरह की होनी चाहियें।"

"बिल्कुल यही बात है, मैडम।"

ओदिन्तसोवा आरकेडी की ओर मुड़ी।

"और आपकी क्या राय है, आरकेडी निकोलयेविच ?"

"मैं इवजिनी से सहमत हूँ।" उसने उत्तर दिया।

कात्या ने सिकुड़ी हुई भौंहों के नीचे से उसकी तरफ देखा।

"मुझे आपकी बातें सुन कर आश्चर्य हो रहा है, महाशयो", ओदिन्तसोवा बोली, "लेकिन हम लोग इस बात पर फिर बहस करेंगे। मुझे मौसी की चाय के लिये आने की आहट सुनाई दे रही है। हमें उनके कान नहीं खाने चाहिये।"

अन्ना सर्जीएव्ना की मौसी, राजकुमारी 'क'—एक दुबली पतली सिकुड़े हुए छोटे से चेहरे वाली औरत, जो हलकी बालों की बनी हुई टोपी के नीचे से सब को अपनी ईर्ष्यालु आँखों से घूर रही थी, कमरे के अन्दर आई और मेहमानों की ओर एक हलका सा इशारा कर एक चौड़ी मखमली आरामकुर्सी पर बैठ गई जिस पर और कोई भी बैठने का साहस नहीं कर सकता था। कात्या ने उसके पैरों के नीचे एक छोटा सा स्टूल रख दिया। उस बुड्ढी औरत ने उसे धन्यवाद भी नहीं दिया, उसकी तरफ देखा तक नहीं। उसके हाथ पीले शाल के नीचे, जो उसके सम्पूर्ण शरीर को लपेटे हुए था, थोड़े से काँपे। उस राजकुमारी को पीला रंग बहुत पसन्द था—यहाँ तक कि उसकी टोपी के फीते भी हल्के पीले रङ्ग के थे।

"आपको नींद कैसी आई, मौसी", ओदिन्तसोवा ने आवाज ऊँची करते हुए पूछा।

"यह कुत्ता फिर यहाँ आ गया", बुढ़िया घुर्राई और फिफी को अपनी ओर संदिग्ध रूप से कदम बढ़ाते हुए देख कर चीखी: "शू, शू"!

कात्या ने फिफी को बुलाया और दरवाजा खोला।

यह समझ कर कि उसे घुमाने ले जाया जा रहा है, फिफी प्रसन्नता से उछलता हुआ बाहर चला गया परन्तु बाहर अपने को अकेला पाकर दरवाजे को पंजों से खुरचने और कूँ कूँ करने लगा। राजकुमारी ने इस पर पुनः नाक भौं चढ़ाई जिसे देख कर कात्या बाहर जाने के लिये उठने ही वाली थी ········

"चाय तैयार है, मेरा ऐसा ख्याल है", ओदिन्तसोवा बोली, "चलिए महाशयो, चलें, मौसी चलिए चाय पी लीजिये।"

राजकुमारी चुपचाप अपनी कुर्सी से उठी और सबसे पहले कमरे से बाहर निकल गई। शेष सब उसके पीछे पीछे भोजन गृह में गए। वर्दी पहने हुए एक लड़के ने शोर मचाते हुए एक गद्देदार आराम-कुर्सी, जो केवल राजकुमारी के लिए ही सुरक्षित थी, खींची जिस पर राजकुमारी बैठ गई। कात्या ने, जो चाय बना रही थी, एक प्याले में, जिस पर खानदानी गौरव के प्रतीक चिन्ह बने हुए थे, चाय ढालकर सब से पहले उसे दी। बुढ़िया ने अपनी चाय में थोड़ा सा शहद मिलाया (वह अपनी चाय में चीनी मिलाना पाप और पैसे का अपव्यय समझती थी यद्यपि उसने कभी इस पर एक पैसा भी खर्च नहीं किया था) और एकाएक भारी और कर्कश आवाज में पूछा।

"और राजकुमार आइवन ने क्या लिखा है ?"

किसी ने जवाब नहीं दिया। बजारोव और आरकेडी ने जल्दी ही यह बात भांप ली कि किसी ने भी उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया यद्यपि वे उसकी बहुत इज्जत करते थे। "इन लोगों ने बुढ़िया को यहाँ केवल दिखावे के लिए रखा हुआ है क्योंकि उसमें शाहीपन है," बजारोव ने सोचा··· । चाय के बाद अन्ना सर्जीएव्ना ने टहलने का प्रस्ताव रखा परन्तु उसी समय हल्की हल्की फुहार पड़ने लगी। इसलिए राजकुमारी को छोड़ कर अन्य सभी लोग दीवानखाने में लौट आए। वह पड़ोसी, जो ताश खेलने का शौकीन था, आ गया। वह व्यक्ति जिसका नाम पोरफिरी प्लेटोनिच था, एक नाटे कद का, मोटा, भूरे बालों और छोटी टांगों वाला, (जो ऐसी लगती थीं मानो उसी के लिये काट कर जोड़ दी गई हों) अत्यन्त विनम्र और शीघ्र ही प्रसन्न हो उठने वाला व्यक्ति था। अन्ना सर्जीएव्ना जो अधिकतर बजारोव से ही बातें करने में व्यस्त रही थी, ने उससे पूछा कि क्या वह उनके साथ एक पुराने फैशन का ताश का खेल (प्रिसरेंस) खेल सकेगा। बजारोव ने यह कहते हुए स्वीकार कर लिया कि उसके लिए यह जरूरी है कि वह देहात में काम करने वाले डाक्टर की ड्यूटी के लिये अपने को तैयार करे।

"पर सावधान रहिए," अन्ना सर्जीएव्ना ने कहा, "पोरफिरी सेटोनिच और मैं आपको हरा देंगे। और तुम, कात्या," उसने आगे कहा, "तब तक आरकेडी निकोलयेविच को कुछ गा कर सुनाओ। वे संगीत के शौकीन हैं और हम लोग भी सुनेंगे।"

कात्या अनिच्छापूर्वक पियानो के पास गई और आरकेडी ने भी, यद्यपि वह संगति का शौकीन था, बेमन से उसका अनुसरण किया। उसको यह सन्देह था कि ओदिन्तसोवा उसे वहाँ से हटाना चाहती है। फिर भी उसका हृदय, जैसा कि उसकी अवस्था के प्रत्येक युवक को होता है, एक अस्पष्ट और मन्द प्रेम की भावना से भर उठा। कात्या ने पियानो खोला और आरकेडी की ओर बिना देखे ही धीमी आवाज में पूछा।

"आप क्या सुनना पसन्द करेंगे?"

"जो आपकी इच्छा हो," आरकेडी ने लापरवाही से जवाब दिया।

"आपको कैसा संगीत अच्छा लगता है," कात्या ने उसी प्रकार बैठे हुए फिर पूछा।

"पक्का," आरकेडी ने उसी स्वर में जवाब दिया।

"आपको मोजार्ट* पसन्द है?"

"जी हाँ।"

कात्या ने मोजार्ट का सोनाटा-फैनटासिया† नामक गाना 'सी' स्वर में निकाला। उसने बजाया तो बहुत अच्छा किन्तु उस बजाने में न तो उमंग थी और न भावावेश। उसकी आँखें गाने की कुंजी पर जमी हुई थीं तथा होंठ दृढ़तापूर्वक बन्द थे। इस प्रकार वह तनी हुई सीधी बैठी हुई थी। उस ध्वनि के अन्तिम क्षणों में उसका चेहरा आरक्त हो उठा और बालों की एक लट उसकी भौंह पर लटक गई।

---

*एक राग-विशेष।

†इसे कल्पनातरंग-लहरी भी कह सकते हैं।

सोनाटा के अन्तिम भाग का आरकेडी पर बड़ा प्रभाव पड़ा जिसमें इस गान का आकर्षक और प्रमत्त सौन्दर्य सहसा वेदनापूर्ण और दुखान्त विलाप के रूप में परिणत हो गया था। फिर भी इस मोजार्ट राग के इस प्रभाव ने उसके हृदय में जो भाव उत्पन्न किए थे उनका कात्या से कोई सम्बन्ध नहीं था। उसकी तरफ देख कर उसने केवल यह सोचा कि—"यह नवयुवती बुरा नहीं बजाती और देखने में भी बुरी नहीं है।"

सोनाटा को समाप्त कर कात्या ने पियानो पर हाथ रखे हुए ही पूछा, "बस ?" आरकेडी ने जवाब दिया कि वह उसे और अधिक कष्ट देने का साहस नहीं कर सकता। यह कह कर वह उससे मोजार्ट के विषय में बातें करने लगा। उसने कात्या से पूछा कि उसने यह सोनाटा स्वयं ही चुना था या किसी दूसरे ने उसे यह सुझाया था। कात्या ने अत्यन्त संक्षेप में इसका उत्तर दिया। वह स्वयं में ही संकुचित हो उठी और खामोश बन गई। अगर एक बार वह इस प्रकार संकुचित होकर स्वयं में ही सीमित हो उठती थी तो फिर उसे खुलने में बहुत समय लगता था। ऐसे अवसरों पर उसके चेहरे पर हठीलेपन और लगभग जड़ता के भाव छा जाते थे। उसे पूरी तरह से शर्मीली नहीं कहा जा सकता। वह केवल अपनी बहन के कारण जिसकी संरक्षता में वह रहती थी, केवल शंकित और त्रस्त बनी रहती थी परन्तु उसकी बहन को इस सत्य का कभी आभास भी नहीं हुआ था। आरकेडी ने परिस्थिति के इस तनाव को फिफी को बुला कर दूर करना चाहा जो एक भौंड़ा तरीका था। फिफी कमरे में आ गया था। आरकेडी ने स्नेहपूर्वक मुस्कराते हुए उसे थपथपाया। कात्या पुनः अपने फूलों को छांटने में व्यस्त हो गई।

उधर बेचारा बजारोव लगातार हारता जा रहा था। अन्ना सर्जीएव्ना पक्की खिलाड़िन थी और पोरफिरी प्लेटोनिच भी ताश के खेल में अपने को सम्हालने में पूर्ण समर्थ था। बजारोव की हानि, यद्यपि बहुत मामूली थी परन्तु फिर भी सुखकर न थी। दोपहर के भोजन के समय अन्ना सर्जीएव्ना ने पुनः वनस्पति-शास्त्र पर बातें छेड़ दीं।

"कल सुबह हम लोग टहलने चलें," उसने बजारोव से कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप मुझे जंगली पेड़-पौधों के लैटिन नाम और उनके गुण समझा दें।"

"आप लैटिन नाम किसलिये जानना चाहती हैं?" बजारोव ने पूछा।

"प्रत्येक वस्तु में एक व्यवस्थित क्रम होना चाहिये," उसने जवाब दिया।

× × ×

"अन्ना सर्जीएव्ना कैसी अद्भुत स्त्री है!" अपने कमरे में एकान्त पाकर आरकेडी ने अपने मित्र से कहा।

"हाँ," बजारोव ने जवाब दिया, "वह एक बुद्धिमान स्त्री है। मुझे यह कहने की इजाजत दो कि उसने दुनियाँ में थोड़ा बहुत देखा है।"

"तुम्हारे इस कथन से क्या अभिप्राय है?"

"अच्छे अर्थ में, दोस्त आरकेडी निकोलायच! मुझे विश्वास है कि वह अपनी जायदाद का प्रबन्ध भी बहुत अच्छी तरह से करती है। परन्तु अद्भुत वह नहीं बल्कि उसकी बहन है।"

"क्या? वह छोटी सी सांवली लड़की?"

"हाँ, वह छोटी सी सांवली लड़की। केवल वहीं सम्पूर्ण ताजगी और भोलापन, भीरुता और मौन तथा और सब कुछ है। वह इस योग्य है कि उसकी तरफ ध्यान दिया जाय। तुम अब भी उसे जिस तरह चाहो ढाल सकते हो, परन्तु दूसरी तो हर फन में उस्ताद है।"

आरकेडी कुछ भी नहीं बोला और दोनों अपने-अपने विचारों में डूबे हुए बिस्तरों पर चले गये।

× × × ×

उस शाम को अन्ना सर्जीएव्ना भी अपने मेहमानों के विषय में सोचती रही। उसे बजारोव पसन्द था क्योंकि उसमें लगाव का अभाव था तथा साथ ही वह अक्खड़ और मुंहफट था। उसमें उसे नवीनता मिली, एक ऐसी नवीनता जैसी उसने इससे पूर्व कहीं भी नहीं देखी थी और स्वभाव वश वह सदैव नवीनता के प्रति उत्सुक रहती थी।

अन्ना सर्जीएव्ना विलक्षण महिला थी—सब तरह की ईर्ष्या और दृढ़ विश्वास (कट्टरता) से दूर। उसने न कभी किसी को माना और न कभी किसी से भी प्रभावित हुई। बहुत सी बातों को वह साफ साफ देख लेती थी, समझ लेती थी, बहुत सी चीजें उसे आकर्षित करती थीं परन्तु किसी से भी उसे पूर्ण सन्तोष नहीं मिलता था। साथ ही पूर्ण सन्तोष के लिए उसे बहुत ही कम इच्छा होती थी। इसका कारण यह था कि उसकी बुद्धि एक ही साथ जिज्ञासु और विरक्त रहती थी। उसके सन्देह कभी भी उस सीमा तक शान्त नहीं हो पाते थे जहाँ पहुँच कर वह उन्हें भूल जाय और न कभी उस सीमा तक ही उठ पाते थे जो उसे व्यग्र बना दे। अगर वह धनी और स्वतन्त्र न होती तो, शायद, यह सम्भव होता कि वह स्वयं को झगड़ों में डाल देती और जीवन की अभिलाषाओं को समझ पाती......। परन्तु वह निर्द्वन्द जीवन व्यतीत करती थी यद्यपि कभी कभी वह ऊब उठती थी और इस प्रकार उसके दिन यदा-कदा उत्तेजना के झोंकों से आलोड़ित होते हुए सरकते जा रहे थे। कभी कभी गुलाबी आकर्षक दिवा स्वप्न उसकी आँखों के आगे सकार हो उठते परन्तु जब वे लुप्त हो जाते तो उसे बड़ी शान्ति मिलती और उनके लुप्त हो जाने पर वह कभी भी दुखी नहीं हुई थी। उसकी कल्पना कभी कभी उसे परम्परागत नैतिक सीमा के पार तक ले जाती परन्तु तब भी उसका रक्त उसी स्थिरता के साथ उसके आलस्य पूर्ण मनोमुग्धकारी शरीर में प्रवाहित होता रहता था। कभी कभी, सुवासित स्नान के उपरान्त, ऊष्मा और मादक मूर्च्छना में डूबी हुई, वह जीवन की व्यर्थता, व्यथाओं कष्टों और बुराइयों के विषय में गम्भीर चिन्तन करने लगती। अकस्मात् उसका हृदय साहस से भर उठता, वह उच्च और उन्नत विचारों से दीप्तिमान बन जाती परन्तु आधी खुली हुई खिड़की से आता हुआ हवा का एक झोंका लगता और अन्ना सर्जीएव्ना सिकुड़ उठती, शिकायत करती और क्रुद्ध हो उठती थी। उस समय वह केवल यह चाहने लगती कि किसी प्रकार ठंडी हवा का वह झोंका बन्द हो जाता जो उसे परेशान कर रहा था।

इन सब औरतों की तरह जिन्होंने प्रेम का साक्षात्कार नहीं किया है, उसके मन में ऐसी स्पृहा उत्पन्न होने लगती थी जिसके विषय में वह स्वयं स्पष्ट और पूरी तरह से नहीं जानती थी कि वह क्या चाहती है। वास्तविकता तो यह थी कि वह कुछ नहीं चाहती थी, यद्यपि उसे यही अनुभव होता था कि वह सब कुछ चाहती है। स्वर्गीय ओदिन्तसोव को उसने किसी प्रकार सहन कर लिया था (यह शादी उसके लिए एक सहूलियत थी, फिर भी शायद वह इस शादी के लिए कभी भी तैयार न होती यदि ओदिन्तसोव सहृदय न होता) और प्रत्येक मनुष्य के लिए, जिनको वह उलझे हुए, भारी-भरकम, सुस्त, अकर्मण्य और बुरी तरह से ऊबा देने वाला समझती थी, उसके हृदय में एक गुप्त घृणा का भाव भरा हुआ था। विदेश में कहीं एक बार उसकी मुलाकात एक सुन्दर स्वीडनवासी नौजवान से हुई थी, जिसका चेहरा सिपाहियाना, आँखें नीली और विश्वस्त और भौंहें खुली हुई थीं। उसने इसे बहुत प्रभावित किया था परन्तु फिर भी जिसका प्रभाव उसे रूस लौटने से नहीं रोक सका था।

"यह डाक्टर बड़ा अद्भुत व्यक्ति है!" अपने वैभवशाली, कीमती पलंग पर हल्के रेशमी वस्त्र के नीचे लेटे और अपना सिर सुन्दर कढ़े हुए तकिओं पर रखे हुए उसने सोचा। अन्ना सर्जीएव्ना ने उत्तराधिकार में अपने पिता की विलासप्रियता का कुछ अंश पाया था। उसे अपने अपराधी परन्तु दयालु पिता के प्रति अत्यन्त स्नेह था। उसका पिता भी उसे बहुत प्यार करता था और मित्रतापूर्ण व्यवहार से सदैव उसका मनोरञ्जन करता रहता था। वह उसके साथ हम उम्र का सा वर्ताव करता और विना किसी हिचक के उसे अपनी सब बातें बता देता था। अपनी माँ की उसे केवल धुंधली सी याद थी।

"वह एक अद्‌भुत व्यक्ति है!" उसने अपने आप दुहराया। उसने अपने शरीर को पूरी तरह फैलाया, मुस्कराई, दोनों हाथ जोड़ कर सिर के नीचे लगाए और एक रद्दी से फ्रांसीसी भाषा के उपन्यास के एक या दो पृष्ठ देखे, फिर किताब रख दी और सो गई। इस समय वह पूर्ण रूप से प्रफुल्ल, शान्त और मधुर मुस्कान बिखेर रही थी।

दूसरी सुबह, नाश्ते के बाद ही, अन्ना सर्जीएव्ना बजारोव के वनस्पति-शास्त्र के विषय में बातें करती हुई चली गई और भोजन के समय तक नहीं लौटी। आरकेडी कहीं नहीं गया, उसने कात्या के साथ लगभग एक घन्टा बिताया। उसका साथ अरुचिपूर्ण नहीं लगा और कात्या ने स्वयं कल वाले सोनाटा को फिर बजाने का प्रस्ताव रक्खा, परन्तु जब अन्त में ओदिन्तसोवा और आरकेडी ने उसे देखा तो उसका हृदय एक क्षणिक वेदना से भर उठा। वह बाग में होकर थके हुए कदम रखती हुई चली आ रही थी। इसके कपोल आरक्त हो रहे थे और सिरकियों के टोप के नीचे उसके नेत्रों में एक विशेष चमक आ गई थी। वह एक जङ्गली फूल के डंठल से खेल रही थी। इसका पतला दुपट्टा कुहनियों तक खिसक आया था और उसके टोप पर लगे हुए चौड़े भूरे फीते उसकी छाती पर लहरा रहे थे। बजारोव अपनी सदा की निश्चित और गर्वपूर्ण चाल से उसके पीछे चला आ रहा था परन्तु आरकेडी को उसके मुख के भाव अच्छे नहीं लगे यद्यपि उनमें प्रसन्नता और कोमलता भी थी। अपने दाँतों के बीच से फुसफुसाते हुए से बजारोव ने "गुड मोर्निङ्ग" कहा और अपने कमरे में चला गया। ओदिन्तसोवा ने अपने विचारों में डूबे हुए आरकेडी से हाथ मिलाया और अपनी राह चली गई।

"गुड मार्निंग" आरकेडी ने सोचा··· "मानो हम लोगों ने आज एक दूसरे को देखा ही नहीं था।"

१७

समय (हम सब जानते हैं) कभी तो पक्षी की तरह तेजी से उड़ता है और कभी घोंघे की तरह धीमी गति से रेंगता है। लेकिन मनुष्य उस समय सब से अधिक प्रसन्न होता है जब वह समय की उड़ान से अनजान या लापरवाह रहता है। और ऐसा ही समय था जिसमें आरकेडी और बजारोव ने ओदिन्तसोवा के यहाँ पन्द्रह दिन बिता दिये।

इसका थोड़ा बहुत श्रेय ओदिन्तसोवा की उस सुचारु व्यवस्था को भी था जिसके अनुसार उसके घर का संचालन होता था। वह कट्टरता पूर्वक इस जीवन के इस सुनिश्चित क्रम का स्वयं पालन करती थी और दूसरों से भी कराती थी। इसके अनुसार प्रत्येक दैनिक कार्य अपने कार्य-क्रम के अनुसार ही सम्पन्न होता था। सुवह, ठीक आठ बजे सब लोग नाश्ते के लिये इकट्ठे होते थे। नाश्ते और दोपहर के भोजन के बीच के समय में प्रत्येक अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिये स्वतन्त्र था, जब कि मालकिन अपने कारिन्दे रसोइये तथा गृह प्रबन्धक के साथ काम-काज की बातें करने में व्यस्त रहती थी (वह अपनी जागीर की व्यवस्था दशमांश कर की प्रणाली पर करती थी)। डिनर के खाने से पहले सब लोग कुछ गपशप करने या पढ़ने के लिये फिर इकट्ठे होते थे। सन्ध्या का समय घूमने, ताश खेलने एवं गाने बजाने में बिताया जाता था। साढ़े दस बजे अन्ना सर्जीएव्ना अपने कमरे में चली जाती और वहाँ से आने वाली सुवह के लिये आज्ञायें प्रसारित करती और बिस्तर पर सोने चली जाती थी। बजारोव को यह नपी-तुली उबा देने वाली और प्रदर्शनपूर्ण नियमितता अच्छी नहीं लगती थी। उसका कहना था कि—"यह तो रेल की पटरियों पर दौड़ने के समान है।" वर्दीधारी नौकर और सदैव गम्भीर बना रहने वाला खानसामा उसकी प्रजातान्त्रिक भावनाओं को चोट पहुँचाते थे। वह इस बात में विश्वास रखता था कि उन लोगों को भी पूरी पोशाक पहन कर एक साथ अंग्रेजी ढङ्ग से खाना खाना चाहिये। एक बार उसने अन्ना सर्जीएव्ना से इस विषय पर बातें की थीं।

उसका व्यवहार कुछ इस प्रकार था कि कोई भी उससे अपनी बात कहने में हिचकता नहीं था। उसने बजारोव की बात सुनी और बोली, "अपने दृष्टिकोण से सम्भव है कि आप ठीक हों—उस हालत में मुझे भान होता है कि मैं मालकिन हूँ; परन्तु यदि आप गाँव में अनियमित जीवन बिताने का साहस करेंगे तो आप भयंकर रूपसे ऊब उठेंगे।" और वह अपने नियमानुसार ही प्रत्येक कार्य चलाने लगी। बजारोव कुड़बुड़ाया, परन्तु वह और आरकेडी दोनों ही को ओदिन्तसोवा के

घर का वह जीवन अत्यन्त अच्छा लगा क्योंकि वहाँ प्रत्येक वस्तु "रैल की पटरियों पर दौड़ती थी।" वास्तव में जिस दिन से ये दोनों युवक निकोल्सकोय में आये उसी दिन से इन दोनों में एक परिवर्तन आ गया था। बजारोव, जिसके लिये स्पष्ट रूप से अन्ना सर्जीएव्ना के मन में आदर की भावना थी, यद्यपि वह कभी-कभी ही उससे सहमत होती थी, कुछ बेचैनी के लक्षण प्रकट करने लगा जो उसके लिये एक नई चीज थी। वह चिड़चिड़ा उठता, अनमने ढङ्ग से बातें करता, उदास-दिखाई देता और बेचैन और अधीर हो उठता; जब कि आरकेडी जिसे इस बात का पूर्ण विश्वास हो चुका था कि वह ओदिन्तसोवा को प्यार करता है, चुपचाप उदास होकर एकान्तसेवी बन गया था। फिर भी उसकी इस उदासीनता ने उसे कात्या के साथ आत्मीयता बढ़ाने से नहीं रोका। यहाँ तक कि इस बात ने उसे कात्या के साथ अत्यन्त मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के लिये उत्साहित ही किया। "वह मुझे पसन्द नहीं करती, करती है क्या? ओह, सब ठीक है!······परन्तु यहाँ एक कोमल प्राणी ऐसा भी है जो मेरी उपेक्षा नहीं करता", आरकेडी ने सोचा और उसके हृदय ने एक बार पुनः कोमल भावनाओं की मधुरता का अनुभव किया। कात्या को इस बात का बहुत धुन्धला सा आभास था कि आरकेडी को उसके सहवास में आनन्द मिलता है और उसने न अपने को तथा न उसे एक ऐसी मित्रता के आनंद से वंचित नहीं किया जिसमें लज्जा की झिझक और सन्देहयुक्त विश्वास का निश्चल आनन्द भरा होता है। अन्ना सर्जीएव्ना की उपस्थिति में वे एक दूसरे से बातें करने में कतराते रहते। कात्या सदैव अपनी बहन की तीखी नजरों के सामने संकुचित हो उठती और आरकेडी, जैसा कि प्रत्येक प्रेमी को शोभा देता है, किसी भी दूसरे के प्रति कोई ध्यान नहीं देता था जब कि उसकी प्रेमिका उसके पास रहती थी। फिर भी वह केवल कात्या के साथ ही अपने को पूर्ण आश्वस्त अनुभव करता था। उसने यह अनुभव किया कि ओदिन्तसोवा को प्रसन्न करना एक ऐसी चीज थी जिसके वह योग्य नहीं था। वह जब उसके साथ अकेला रहता तो लज्जावश खामोश बना रहता था और

ओदिन्तसोवा भी यह नहीं जानती थी कि वह उससे क्या बातें करे। वह उसके लिये बहुत छोटा था। इसके विपरीत कात्या के साथ वह पूर्ण स्वतन्त्रता का अनुभव करता था। वह दयालु था और उसके अनुकूल व्यवहार करता था। साथ ही उसने कात्या को अपने संगीत विषयक भावों को खुल कर व्यक्त करने की छूट दे रखी थी। इसके अतिरिक्त पुस्तकें, कवितायें एवं अन्य छोटी मोटी बातों पर वे लोग गपशप किया करते थे। परन्तु उसे इस बात का आभास भी नहीं था कि ये छोटी मोटी बातें स्वयं उसे भी आकर्षित करतीं हैं। साथ ही कात्या उसकी अन्य मनस्कताओं में कभी बाधा नहीं डालती थी। आरकेडी कात्या के साथ सहवास सुख उठा रहा था और बजारोव ओदिन्तसोवा के साथ, और अक्सर ऐसा होता था कि दोनों युगल एक साथ बाहर निकलते और बाहर जाकर भिन्न मार्गों पर चल पड़ते, विशेष कर भ्रमण के समय। कात्या प्रकृति की पुजारिन थी और आरकेडी भी प्रकृति-प्रेमी था यद्यपि उसने इस बात को स्वीकार करने का साहस कभी नहीं किया। ओदिन्तसोवा को प्रकृति से कोई अनुराग नहीं था और न बजारोव को। यह बात कि हमारे मित्र बराबर एक दूसरे से अलग रहते थे, परिणामहीन नहीं निकली। उनके पारस्परिक सम्बन्धों में क्रमशः एक अन्तर आता चला गया। बजारोव अब आरकेडी से ओदिन्तसोवा के विषय में बातें नहीं करता था। यहाँ तक कि उसके आभिजात्य रंग-ढङ्ग की आलोचना भी बन्द कर दी। वह अब भी कात्या की बहुत तारीफ करता था और अपने मित्र को इस बात की सलाह देता था कि वह उसकी भावुकता पर नियन्त्रण रखने का प्रयत्न करे। फिर भी, उसकी प्रशंसा अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक की हुई और उसके सुझाव नीरस होते थे। वह अब पहले की अपेक्षा आरकेडी से बातें भी कम करने लगा था। ऐसा लगता मानो वह उससे दूर रहना चाहता हो, उसके सामने आने में शर्मिन्दा होता हो।

आरकेडी ने इस सब पर गौर किया परन्तु अपने विचार स्वयं तक ही सीमित रखे।

इस नवीन परिवर्तन का वास्तविक कारण वह भावना थी जो ओदिन्तसोवा ने बजारोव के हृदय में उत्पन्न करदी थी, एक ऐसी भावना जिसने उसे संतप्त और पागल बना दिया था परन्तु जिसके विषय में वह तुरन्त एक व्यंग्यपूर्ण हंसी और उपहास करते हुए मुकर जाता यदि कोई उससे उस सम्भावना के विषय में तनिक भी संकेत कर देता जो वास्तव में उसके दिल पर गुजर रही थी। बजारोव स्त्रियों का प्रशंसक था परन्तु प्रेम को उसके आदर्श रूप में जैसा कि वह कहता था, रूमानी भावना को, अक्षम्य भूल कह कर उसकी हंसी उड़ाता था। साहसपूर्ण भावों को वह एक प्रकार का राक्षसीपन या रोग समझता था और उसने अनेक बार यह कहा था कि तोगेनवर्ग अपने सहायकों तथा उन कवियों के साथ जो संगीतज्ञ भी थे, पागलखाने में क्यों नहीं बन्द किया गया। "अगर तुम किसी औरत को पसन्द करते हो," उसे कहने की आदत थी, "तो पीतल की कील से भिड़ जाओ, अगर वह बाहर नहीं निकलती है तो कोई चिन्ता मत करो, अपनी उंगलियों की फिक्र करो, उसके अलावा उसी प्रकार की अन्य अनेक और हैं।"

ओदिन्तसोवा ने उसकी रुचि परख ली थी। वे अफवाहें जो उसके विषय में उड़ रही थीं, उसके विचारों की वह आत्म निर्भरता और स्वतन्त्रता, बजारोव के प्रति उसका स्पष्ट पक्षपात, आदि बातें देखकर कोई भी सोचता कि ये सब उसकी चक्की के लिए एक कौर के समान थीं; परन्तु शीघ्र ही उसे इस बात का अनुभव हो गया कि उसके साथ वह "जूझ कर कील को नहीं उखाड़ सकता" और जहाँ तक अपनी उंगलियों की फिक्र करने का प्रश्न था उसे यह देख कर निराशा हुई कि वह इसके लिए असमर्थ है। उसके विचार मात्र से उसके हृदय की धड़कन बढ़ जाती थी। वह आसानी से अपनी इस धड़कन पर काबू पा सकता था परन्तु उसके साथ कुछ ऐसी बात हो चुकी थी, कुछ ऐसी बात जिसे वह कभी भी स्वीकार करने को राजी नहीं होता, जिसका उसने मजाक उड़ाया था और जिसके विरुद्ध उसका सम्पूर्ण गर्व विद्रोह कर उठता था। अन्ना सर्जीएव्ना से बातें करते समय वह पहले से

अधिक हर रूमानी बात का उपेक्षापूर्ण व्यंग्य के साथ मजाक उड़ाने लगा था परन्तु जब अकेला होता तो अपने हृदय की रूमानी भावना से, जिसका वह अनुभव करता था, उत्तेजित हो उठता था। ऐसे अवसरों पर वह जंगल की तरफ निकल जाता, उद्देश्यहीन इधर उधर घूमता, और जब टहनियों को तोड़ता हुआ आगे बढ़ता तो अपने को और उसे कोसता। या फूस के ढेर में घुस जाता और जबर्दस्ती अपनी आँखें बन्द कर, बलपूर्वक सोने का प्रयत्न करता जिसे करने में उसे हमेशा ही कामयाबी नहीं मिलती थी। एकाएक उसके सामने चित्र खड़ा हो जाता जिसमें उसकी गर्दन में दो सुन्दर, पवित्र भुजाएं पड़ी रहतीं, वे गर्वीले होठ उसके चुम्बनों का प्रत्युत्तर देते होते और वे अगाध नेत्र, अत्यन्त मधुरता पूर्वक हाँ, मधुरतापूर्वक, उसके नेत्रों में झाँकते होते, और उसका सिर चक्कर खाने लगता। वह क्षण भर के लिए अपने को भूल जाता और उस समय तक भूला रहता जब तक उसका असन्तोष उसे झकझोर कर चैतन्य न कर देता। वह अपने को अरुचिकर विचारों की जकड़ में बंधा हुआ पाता, मानो शैतान उसे परेशान कर रहा हो। कभी कभी उसे यह विश्वास होने लगता कि ओदिन्तसोवा में भी परिवर्तन आ रहा है। मानो कि उसके चेहरे के भावों में कुछ असाधारणता आ गई है, मानो जैसे शायद···यहाँ तक आते आते वह पैर पटकता, दाँत पीसता और मन ही मन अपने आप पर घूंसा तान कर रह जाता था।

और दरअसल, बजारोव की ही सारी गल्ती नहीं थी। उसने ओदिन्तसोवा को उद्दीप्त कर दिया था, उसने उसे आकर्षित किया था और वह उसके विषय में बहुत कुछ सोचा करती थी। उसकी अनुपस्थिति में उसे उदासी का अनुभव नहीं होता था और न वह उसके अभाव को ही अनुभव करती थी। लेकिन जैसे ही वह उसके सामने आता वह खिल उठती थी। वह अपनी इच्छा से उसके साथ अकेली रहती और रुचिपूर्वक उससे बातें करती थी, उस समय भी जब वह उसे नाराज कर देता या उसकी सुरुचि और सुसंकृत स्वभाव को चोट पहुँचाता। ऐसा प्रतीत होता था मानों वह उसे परखना और साथ ही स्वयं को भी आंकना चाहती थी।

एक बार ओदिन्तसोवा के साथ बाग में घूमते हुए उसने अचानक उदास शब्दों में इस बात की घोषणा की कि वह शीघ्र ही देहात में अपने बाप के पास जाना चाहता है। ...उसका चेहरा इस तरह पीला पड़ गया मानो उसके हृदय पर भयंकर आघात हुआ हो। यह अनुभूति इतनी तीव्र थी कि इससे उसे स्वयं आश्चर्य हुआ और बहुत दिनों बाद उसे उस बात को सोचकर बहुत अश्चर्य हुआ कि आखिर इसका अभिप्राय क्या था। बजारोव ने अपने जाने की घोषणा उसे परखने के लिए नहीं की थी और न इस विचार से कि इसका परिणाम क्या होगा। वह कभी धोखा नहीं देता था। उसी दिन सुबह अपने पिता के नौकर-टिमोफिच, से उसकी मुलाकात हुई थी जिसने बचपन में उसे पाला पोसा था। यह टिमोफिच स्वच्छ और पीले बालों वाला फुर्तीला वृद्ध पुरुष था जिसके चेहरे का रंग धूप के प्रभाव से सांवला पड़ गया था। उसकी धंसी हुई आँखों की कोरों में जल की छोटी बूँदें झलक रहीं थीं। वह अकस्मात ही भूरा, मल्लाहों का सा नीला, किसानों का कोट जो कमर पर पेटी से कसा हुआ था तथा पैरों में पुराने ऊँचे जूते पहने हुये उसके सामने आ खड़ा हुआ था।

"कहो, बड़े मियाँ, क्या हाल हैं?" बजारोव ने पूछा।

"गुड मार्निंग, मास्टर इवजिनी वैसीलिच," बुड्ढे ने जबाब दिया और अचानक उसका चेहरा झुर्रियों से भर गया तथा होठों पर प्रसन्न मुस्कराहट खिल उठी।

"तुम यहाँ कैसे आए? मेरा ख्याल है तुम मुझे बुलाने आए हो?"

"भगवान् आपको तरक्की दे, साहब, मैं इसलिये नहीं आया हूँ।" टिमोफिच बुदबुदाया (उसके दिमाग में मालिक की वह सख्त हिदायत ताजी थी जो उसे चलते समय दी गई थी)। मैं मालिक के काम से शहर जा रहा था जब मुझे आपका इस स्थान पर होने का समाचार मिला, इसलिये मैं रास्ते में रुक गया—केवल आपको एक

नजर देखने के लिए······लेकिन आपको परेशान करने का ख्याल तो मुझे कभी भी नहीं आ सकता था !"

"अच्छा यह बताओ," बजारोव ने टोकते हुए पूछा, "क्या यह जगह तुम्हारे शहर जाने वाले मार्ग पर है ?"

टिमोफिच एक पैर को दूसरे पैर की जगह रख कर चुपचाप खड़ा रहा।

"पिताजी अच्छी तरह है ?"

"हाँ, साहब, भगवान को धन्यवाद है।"

"और माँ ?"

"और एरीना व्लास्येव्ना भी, भगवान को धन्यवाद है।"

"वे लोग मेरा इन्तजार कर रहे हैं, मैं समझता हूँ ?"

बुड्ढे ने अपना छोटा सा सिर खुजाया।

"आह, इवजिनी वैसीलिच, भला तुम्हारी बाट वे क्यों नहीं देखेंगे। ईश्वर साक्षी है, तुम्हारे माता-पिता की हालत को देखकर हरेक का हृदय वेदना से भर उठता है।"

"अच्छा, ठीक है ! इस पर और ज्यादा रंग मत बांधो। उनसे कहना मैं बहुत जल्दी ही आऊँगा।"

"बहुत अच्छा, सरकार," टिमोफिच ने एक गहरी सांस लेते हुए जवाब दिया।

जैसे ही उसने घर छोड़ा दोनों हाथों से सिर पर टोपी जमा ली और एक पुरानी टूटी सी छोटी गाड़ी में जिसे वह फाटक पर छोड़ आया था, बैठा और चल दिया परन्तु शहर की तरफ नहीं गया

× × × ×

उसी दिन शाम को ओदिन्तसोवा बजारोव के साथ कमरे में बैठी हुई थी और आरकेडी कात्या का गाना सुनता हुआ बैठक में इधर से उधर टहल रहा था। राजकुमारी ऊपर चली गई थी। उसे हरेक महमान से दिली नफरत थी और इन लोगों से तो खास तौर पर जिन्हें वह "जंगली" कहा करती थी। सब के साथ बैठे रहने पर तो वह केवल मीनता ही दिखाती थी परन्तु अपने कमरे में, एकान्त पाकर, अपनी

नौकरानी के सामने वह कभी कभी अपने क्रोध को भयंकर रूप से प्रकट करने लगती थी जिससे उसके सिर पर रखी हुई टोपी इधर उधर नाचने सी लगती थी। ओदिन्तसोवा इस बात को जानती थी।

"आपके जाने की यह क्या बात है," उसने कहना शुरू किया, "और आपके वायदे का क्या हुआ?"

बजारोव चौंक उठा।

"कौन सा वायदा?"

"क्या आप भूल गए? आप मुझे रसायन-शास्त्र के विषय में कुछ बताना चाहते थे।"

"मुझे अफसोस है। मेरे पिता मेरा इन्तजार कर रहे हैं। मैं और अधिक देर नहीं कर सकता। लेकिन आप 'पेलस एंड फ्रेमी' कृत 'रसायन शास्त्र का साधारण परिचय' नामक पुस्तक पढ़ सकती हैं। यह अच्छी किताब है और बहुत सरल भाषा में लिखी गई है। आप जो कुछ भी जानना चाहती हैं उसमें मिल जायगा।"

"क्या आपको याद है कि आपने मुझसे कहा था कि कोई भी किताब इतनी अच्छी नहीं है जितनी कि······मुझे याद नहीं रहा कि आपने इसकी व्याख्या किस प्रकार की थी, परन्तु जो कुछ मैं कहना चाहती हूँ आप जानते हैं······आपको याद है?"

"मुझे अफसोस है!" बजारोव ने दुहराया।

"क्या जाओगे ही?" ओदिन्तसोवा ने स्वर को मन्द करते हुए पूछा।

उसने उसकी ओर देखा। ओदिन्तसोवा ने अपना सिर आराम कुर्सी की पीठ पर टिका दिया था और कुहनियों तक खुले हुए उसके दोनों हाथ मुड़े हुए छाती पर पड़े हुए थे। झिल्लीदार कागज के शेड से ढके हुए एकाकी लैम्प की रोशनी में उसका चेहरा अधिक पीला दिखाई दे रहा था। उसके ढीले सफेद गाऊन की मुलायम परतों में उसका पूरा शरीर लिपटा हुआ था। एक दूसरे पर रखे हुए पैरों का पंजा मुश्किल से दिखाई दे रहा था।

"मुझे किस लिए ठहरना चाहिए ?" बजारोव ने उत्तर दिया।

ओदिन्तसोवा ने धीरे से सिर घुमाया।

"इस 'किस लिए' से आपका क्या मतलब है ? क्या यहाँ आपको आनन्द नहीं मिल रहा ? या आप यह समझते हैं कि किसी को आपके जाने का दुख नहीं होगा ?"

"मुझे इसका पूर्ण विश्वास है !"

ओदिन्तसोवा कुछ देर तक खामोश रही।

"यही आपकी धारणा गलत है। और किसी भी दशा में मैं आपकी इस बात पर विश्वास नहीं कर सकती। आपने यह बात गम्भीरता पूर्वक नहीं कही है।" बजारोव स्थिर रहा। "इवजिनी वैसिलिच, आप कुछ कहते क्यों नहीं ?"

"परन्तु मैं आपसे क्या कह सकता हूँ ? मैं नहीं समझता कि मनुष्य इस योग्य होते हैं कि कोई उनकी अनुपस्थिति को अनुभव करे और विशेष रूप से मुझ जैसे की।"

"ऐसा क्यों ?"

"मैं बहुत ही गम्भीर और मनोरंजनहीन व्यक्ति हूँ। मुझे ठीक तरह से बोलना भी नहीं आता।"

"आप अपनी तारीफ करवाना चाह रहे हैं, इवजिनी वैसीलिच।"

"यह मेरी आदत नहीं है। आपको यह मालूम होना चाहिए कि जीवन की जिन सुरुचियों के प्रति आपके मन में अत्यधिक मोह है वे मुझ से परे हैं।"

ओदिन्तसोवा अपने रूमाल का कोना चबाने लगी।

"आप जो चाहें सोच सकते हैं, परन्तु आपके चले जाने पर मुझे बड़ा सूना-सूना सा लगेगा।"

"आरकेडी रहेगा," बजारोव ने कहा।

ओदिन्तसोवा असन्तोष से हिल उठी।

"मुझे बड़ा सूना लगेगा," उसने दुहराया।

"सचमुच ? फिर भी आपको बहुत दिनों तक सूना नहीं लगेगा।"

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं ?"

"आपने स्वयं मुझे बताया था कि जब आपके दैनिक नियमित जीवन में व्यवधान पड़ जाता है तब आप ऊब उठती हैं। आपने अपने जीवन को ऐसी अभेद्य नियमितता से आवेष्ठित कर रखा है कि उसमें ऊब, या दुखदायी भावनाओं के लिए गुंजायश ही नहीं रही है।"

"तो आप समझते हैं कि मैं अजेय हूँ······मेरा मतलब यह है कि मैंने अपने जीवन को इस प्रकार का बना रखा है ?"

"बिल्कुल यही बात है। देखिए, जैसे मिसाल के तौर पर, कुछ ही मिनटों के बाद दस बज जायेंगे और मैं यह बात पहले से ही जानता हूँ कि आप मुझे बाहर निकाल देंगी।"

"नहीं, मैं नहीं निकालूंगी, इवजिनी वैसीलिच। आप ठहर सकते हैं। उस खिड़की को खोल दीजिए···मुझे गर्मी लग रही है।"

बजारोव उठा और खिड़की पर धक्का दिया। यह शोर करती हुई तुरन्त ही खुल गई···उसने इसे इतनी आसानी से खोल देने की कल्पना नहीं की थी और साथ ही उसके हाथ कांप उठे थे। कोमल काली रात्रि अपने काले आसमान, मरमर ध्वनि करते हुए वृक्षों और शीतल सुगन्धित वायु के साथ कमरे में झांकने लगी।

"पर्दा खींच दो और बैठ जाओ," ओदिन्त्सोवा बोली, "मैं आपके जाने के पहले आपसे बातें करना चाहती हूँ। अपने बारे में कुछ बताओ, आप अपने स्वयं के बारे में कभी कुछ नहीं कहते।"

"मैं आपके साथ महत्वपूर्ण वस्तुओं के विषय में बातें करने का प्रयत्न करता हूँ।"

"आप बहुत नम्र हैं···परन्तु मैं आपके विषय में, आपके परिवार, आपके पिता आदि के विषय में कुछ जानना चाहती हूँ जिसकी खातिर आप हमें छोड़ कर भाग रहे हैं।"

"वह ये सब क्या कह रही है ?" बजारोव ने सोचा।

"यह बात बिल्कुल भी रुचिकर नहीं है," उसने जोर से कहा, "विशेष रूप से आपके लिए, हम मामूली आदमी हैं···।"

"क्या आप मुझे बहुत बड़ा रईस समझते हैं ?"

बजारोव ने ओदिन्तसोवा की ओर आँखें उठाईं।

"हाँ," उसने जोर देते हुए फूहड़पन के साथ कहा।

मुस्कराहट से उसके होठ मुड़ गए।

"मैं देखती हूँ कि आप मुझे पूरी तरह नहीं समझ पाए हैं, यद्यपि आप दावा इस बात कर करते हैं कि सब मनुष्य एक से होते हैं इसलिए उनको परखना या समझना व्यर्थ है। मैं किसी दिन अपने विषय में आपको बताऊँगी···परन्तु पहले आप अपने विषय में बताइए।"

"मैं आपको अच्छी तरह नहीं समझ सका हूँ," बजारोव ने दुहराया। "सम्भव है कि आप ठीक हों, यह भी सम्भव है कि हरेक व्यक्ति एक पहेली होता है। मिसाल के तौर पर आप अपने को ही ले लीजिए। आप समाज से दूर भागती हैं, समाज आपको पसन्द नहीं है फिर भी आप दो विद्यार्थियों को निमंत्रण देकर अपने यहाँ ठहरने के लिए बुलाती हैं। आपको अपनी इस बुद्धि और सौन्दर्य को लेकर इस देहात में क्यों रहना चाहिए।"

"क्या ? क्या कहा आपने ?" ओदिन्तसोवा ने शीघ्रतापूर्वक कहा, "अपने सौन्दर्य के साथ" बजारोव की भौंहों में बल पड़ गए।

"कोई बात नहीं," वह बोला, "मैं यह कहना चाहता हूँ कि मुझे आपके इस देहात में रहने का कोई कारण नहीं दिखाई देता।"

"आपका कहना है कि आप इस बात को नहीं समझ सकते····· परन्तु, मेरा ऐसा ख्याल है कि आपने स्वयं इस बात को स्पष्ट करने की कोशिश की है।"

"हाँ·····मेरा अनुमान है कि आप एक ही स्थान पर स्थायी रूप से इसलिये रहती हैं क्योंकि आप अपने को पूरी तरह से सन्तुष्ट करना चाहती हैं। आप सुख और भोग विलास की शौकीन हैं। इनके अतिरिक्त और सब वस्तुओं के प्रति आप विरक्त हैं।"

ओदिन्तसोवा पुनः मुस्काराई।

"आप इस बात का विश्वास करने से इन्कार करते हैं कि मैं इस

स्थिरता से डिग नहीं सकती । बजारोव ने भौहों के नीचे से उसे सूक्ष्म दृष्टि से देखा ।

"केवल उत्सुकता वश, शायद और कोई कारण नहीं हो सकता ।"

"सच ? अच्छा, अब मैं समझी कि हम और आप मित्र कैसे बन गये । आप मेरी ही तरह हैं, जानते हैं इस बात को ।"

"हम और आप मित्र बन गये······" बजारोव भर्राये स्वर में बुदबुदाया ।

"हाँ !···परन्तु मैं यह तो भूल ही गई कि आप जाना चाहते थे ।"

बजारोव खड़ा हो गया । उस अंधेरे, सुगन्ध से भरे हुए एकान्त कक्ष के मध्य लैम्प मन्द-मन्द जल रहा था । फरफराते हुए परदों से होकर रात्रि उस कक्ष के भीतर स्निग्ध स्फूर्ति और रहस्यमय सनसनाहट भर रही थी । ओदिन्तसोवा अनुद्विग्न भाव से स्थिर बैठी रही परन्तु धीरे २ एक गुप्त उत्तेजना उसे वशीभूत करती जा रही थी······ऐसे ही भाव से बजारोव भी अवश हो रहा था । अकस्मात् उसने अनुभव किया कि वह सुन्दर युवती के साथ अकेला है······

"आप कहाँ जा रहे हैं ?" उसने धीरे से पूछा ।

उसने कुछ भी जवाब नहीं दिया और फिर धम से अपनी कुर्सी पर बैठ गया ।

"तो आप मुझे तृपित, सन्तुष्ट और ठण्डी समझते हैं", वह खिड़की पर से बिना निगाह हटाये उसी स्वर में कहती गई, "परन्तु मैं कितनी दुःखी हूँ ।"

"आप और दुःखी ? क्यों ? क्या आप यह कहना चाहती हैं कि आप गन्दी अफवाहों को महत्व देती हैं ?" ओदिन्तसोवा की भौहों में बल पड़ गये । इस बात ने उसे व्यग्र कर दिया कि बजारोव ने उसके इन शब्दों का यह अर्थ लगाया ।

"नहीं, ऐसी अफवाहों से मुझे खुशी भी नहीं होती, इवजिनी वैसीलिच, और इसका मुझे अत्यधिक गर्व है कि इन बातों से मुझे परेशानी होती है । मैं दुःखी हूँ क्योंकि····· मुझे कोई इच्छा नहीं है,

आप मुझे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और सम्भवतः यह सोच रहे हैं कि यह दोलने वाली अमीर वर्ग की है जो शानदार पोशाक पहने हुए आरामकुर्सी पर बैठी है। मैं इससे इन्कार नहीं करती कि मैं उस बात को चाहती हूँ जिसे आप विलास और आराम कहते हैं और फिर भी मुझे जीवित रहने की बहुत कम इच्छा है। यदि आप कर सकें तो इन विषमताओं में सन्तुलन स्थापित करने का प्रयत्न करें। वैर आपकी दृष्टि में तो यह सब रूमानी भावना है।"

बजारोव ने अपना सिर हिलाया।

"आपका स्वास्थ्य अच्छा है, आप स्वतन्त्र और धनवान हैं; इससे अधिक और आपको और आपको क्या चाहिये ? आप क्या चाहती हैं ?"

"मैं क्या चाहती हूँ ?" ओदिन्तसोवा ने दुहराया और गहरी सांस ली। "मैं थक गई हूँ, मैं बुढ़िया हो गई हूँ। मुझे ऐसा लगता है मानो मैं बहुत समय से रहती आई हूँ। हाँ, मैं बुड्ढी हो गई हूँ", उसने आगे कहा, कोमलता से अपनी ओढ़नी के सिरों से अपनी नङ्गी बाहों को ढकते हुए। उसकी आँखें बजारोव की आँखों से मिलीं और वह लज्जा से लाल हो उठी। "मेरे गत जीवन की अनेक स्मृतियाँ हैं—सेन्ट पीटर्स बर्ग का जीवन, दौलत, फिर गरीबी, फिर मेरे पिता की मौत, मेरी शादी, फिर विदेश यात्रा, जैसी कि होनी चाहिये······अनेक स्मृतियाँ हैं, परन्तु याद करने लायक नहीं हैं और मेरे सामने एक लम्बा रास्ता पड़ा हुआ है। जिसका कोई अन्त नहीं·········उस रास्ते पर चलने की मुझ में उमङ्ग नहीं है।"

"आप इतनी हताश हो रही हैं ?" बजारोव ने पूछा।

"नहीं," ओदिन्तसोवा धीरे से बोली, "परन्तु मैं संतुष्ट नहीं हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि यदि मैं किसी से भी गहरा आत्मीय सम्बन्ध जोड़ लूँ······"

"आप प्रेम करना चाहती हैं," बजारोव बोला, "परन्तु आप प्रेम नहीं कर सकतीं—यही कारण है कि आप दुखी हैं।"

ओदिन्तसोवा ध्यान से अपनी ओढ़नी के छोर की ओर देखने लगी ।

"आपका ख्याल है कि मैं प्रेम करने योग्य नहीं हूँ ?" वह बड़बड़ाई ।

"कठिनता से । सिर्फ मुझे इस बात को तुम्ह नहीं कहना चाहिए था । इसके विपरीत, वह व्यक्ति जिसके जीवन में ऐसी घटनाएं घट चुकी हैं, रहम के काबिल है ।"

"कैसी घटनाएँ ?"

"प्रेम में पड़ने की !"

"आप इस बात को कैसे जानते हैं ?"

"दूसरों से सुन कर," बजारोव तरंगित होकर बोला ।

"तुम मजाक उड़ा रही हो," उसने सोचा, "तुम ऊब उठी हो इसलिये तुम मुझे परेशान कर रही हो कि मैं तुम्हारी और खुशामद करूँ, जब कि मैं······" सचमुच उसका हृदय फटा जा रहा था ।

"और तब मैं सोचता हूँ कि बहुत अधिक अन्याय पूर्ण मांग करने वाली हैं," वह अपने सम्पूर्ण शरीर को आगे झुकाए हुए और आराम कुर्सी की झालर से खेलते हुए बोला ।

"हो सकता है । मैं सब चीजों में विश्वास करती हूँ या किसी में भी नहीं । जीवन जीवन के लिए है । मेरा ले लो और अपना मुझे दे दो, परन्तु इसमें पीछे कोई पछताना न हो और न पीछे हटने की भावना । अन्यथा, न होना ही अच्छा है ।"

"अच्छा," बजारोव बोला, "यह अच्छी शर्तें हैं और मुझे आश्चर्य है कि आप अभी तक···जो कुछ चाहती हैं नहीं पा सकी हैं ।"

"क्या आप सोचते हैं कि स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित कर देना इतना आसान है ?"

"नहीं है अगर आप सोचना, और समय को आंकना और अपने विषय में अत्यधिक विचार करना छोड़ दें । मेरे कहने का अर्थ

यह है कि अगर आप अपना मूल्य समझें। लेकिन बिना सोचे समझे अपने आपको समर्पित कर देना बड़ा आसान है।"

"आप किसी भी व्यक्ति से यह आशा क्यों करते हैं कि वह अपना मूल्य न समझे? अगर मैं किसी योग्य नहीं हूँ तो किसी के प्रति मेरे प्रेम का क्या मूल्य रह जायगा?"

"यह मेरे सोचने की बात नहीं है, दूसरे को इस बात का फैसला करने दो कि मैं किसी योग्य हूँ अथवा नहीं। असली बात है आत्म समर्पण के योग्य होना।"

ओदिन्तसोवा कुर्सी में आगे खिसक कर बैठी।

"आप इस प्रकार बोल रहे हैं," उसने कहना आरम्भ किया, "मानो आप स्वयं इसका अनुभव कर चुके हों।"

"मैंने तो सिर्फ एक राय जाहिर की है, सर्जीएव्ना, यह सब, आप जानती हैं,मेरे क्षेत्र से बाहर है।"

"परन्तु क्या आप स्वयं को आत्म समर्पण करने के योग्य भी होंगे।"

"मैं नहीं जानता—मैं शेखी मारना पसन्द नहीं करता।"

ओदिन्तसोवा ने कोई जवाब नहीं दिया और बजारोव भी खामोश हो गया। बैठक से आती हुई पियानो की आवाज उन तक लहराती हुई पहुँच रही थी।

"क्या बात है, कात्या आज बहुत देर तक बजा रही है," ओदिन्तसोवा बोली।

बजारोव खड़ा हो गया।

"हाँ, बहुत देर हो गई है। यह आपके सोने का समय है।"

"एक मिनट ठहरिये, जल्दी क्या है? मुझे आपके सोने का समय है।"

"एक मिनट ठहरिये, जल्दी क्या है? मुझे आपसे कुछ कहना है।"

"क्या बात है?"

"थोड़ी देर ठहरिए।" ओदिन्तसोवा फुसफुसाई।

उसकी निगाहें बजारोव पर ठहर गईं; ऐसा लग रहा था मानो वह उसका सूक्ष्म अध्ययन कर रही हो।

उसने कमरे का एक चक्कर लगाया और फिर अचानक उसकी तरफ मुड़ा और शीघ्रतापूर्वक 'गुडबाई' की, उसका हाथ इतनी जोर से दबाया कि वह लगभग चीख उठी और बाहर चला गया। ओदिन्तसोवा ने अपनी मसली हुई उंगलियाँ ऊपर होठों तक उठाईं और उन्हें फूँका। किसी अकस्मात भावना के वशीभूत होकर वह आराम कुर्सी से उछली और तेजी से दरवाजे की तरफ दौड़ी मानो बजारोव को वापस बुलाना चाहती हो······एक नौकरानी चाँदी की तश्तरी पर शराब का ग्लास लिए हुए अन्दर आई। ओदिन्तसोवा ठिठक गई, नौकरानी को विदा किया और फिर अपने विचारों में डूबी हुई अपनी जगह लौट आई। उसकी गोटे से गुंथी हुई वेणी बिखर-कर उसके कन्धों पर नागिन की तरह लहराने लगी। अन्ना सर्जीएव्ना के कमरे वाला लैम्प बहुत देर तक जलता रहा और वह बहुत रात गए तक निश्चल बैठी रही। यदा कदा रात की ठंडी हवा से ठिठुरे हुए हाथों को सहला लेती थी।

× × × ×

दो घंटे बाद, बाल बिखेरे हुए, उदास, ओस से भीगे हुए बूट लिए बजारोव अपने सोने के कमरे में आया। उसने कोट के बटन गले तक लगाए आरकेडी को एक किताब हाथ में लिए लिखने की मेज पर बैठे हुए देखा।

"अभी तक तुम सोने नहीं गए?" उसने कुछ परेशान सा होकर कहा।

"आज रात तुम अन्ना सर्जीएव्ना के साथ बहुत देर तक बैठे रहे थे," आरकेडी ने उसके प्रश्न को अनसुना करते हुए कहा।

"हाँ, मैं उस पूरे समय तक उसके साथ था जब तुम और कात्या बाजा बजा रहे थे।"

"मैं नहीं बजा रहा था," आरकेडी ने कहना प्रारम्भ किया और फिर खामोश हो गया। उसने अनुभव किया कि उसकी आँखों में आँसू उमड़े आ रहे हैं परन्तु वह अपने कटुभाषी मित्र के सामने रोना नहीं चाहता था।

१८

दूसरे दिन जब ओदिन्तसोवा नाश्ते के लिए नीचे आई, बजारोव अपने प्याले को ध्यान से देखता हुआ कुछ देर बैठ रहा, फिर अचानक ओदिन्तसोवा की ओर देखा······वह उसकी तरफ घूमी मानो उसने उसे इशारा किया हो और बजारोव ने सोचा कि उसका चेहरा पहले से अधिक पीला दिखाई दे रहा है। वह तुरन्त ही अपने कमरे को लौट गए और खाने के समय तक नीचे नहीं आई। उस दिन सुबह से ही पानी पड़ रहा था इस लिए घूमने के लिए बाहर जाना असम्भव था। सब लोग बैठक में इकट्ठे हुए। आरकेडी के हाथ किसी पत्रिका का नवीन अंक लग गया और उसने जोर जोर से उसे पढ़ना शुरु कर दिया। राजकुमारी ने जिसकी कि आदत थी, पहले आश्चर्य प्रकट किया, मानो वह कोई अनुचित काम रहा हो, फिर उसकी तरफ उदासीना पूर्वक देखने लगी परन्तु आरकेडी ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

"इवजिनी वैसीलिच," अन्ना सर्जीएव्ना बोली, "मेरे कमरे में आइए······मैं आपसे पूछना चाहती थी······कल आप एक छोटी पुस्तक के बारे में कह रहे थे······"

वह उठी और दरवाजे की तरफ चली। राजकुमारी ने चारों तरफ इस प्रकार देखा मानो कहना चाहती हो,कि–"देखो मुझे कितना आश्चर्य हो रहा है!" और पुनः अपनी निगाहें आरकेडी पर जमा दीं परन्तु उसने सिर्फ अपनी आवाज और ऊँची कर दी और अपनी बगल में बैठी हुई कात्या की तरफ देखते हुए पढ़ता रहा।

× × × ×

ओदिन्तसोवा तेजी से अपने अध्ययन कक्ष की ओर चली। बजारोव ने बिना निगाह ऊपर उठाए उसका अनुसरण किया। केवल उसके कान अपने आगे जाती हुई ओदिन्तसोवा के रेशमी गाऊन की धीमी सरसराहट सुन रहे थे। ओदिन्तसोवा उसी आराम कुर्सी पर जाकर बैठ गई जिस पर वह पिछली रात बैठी हुई थी, बजारोव भी अपनी पुरानी जगह बैठ गया।

"उस किताब का क्या नाम था ?" उसने कुछ रुक कर पूछा।

"पेलस और फ्रेमी कृत 'रसायन शास्त्र का अर्थ'······" बजारोव ने जवाब दिया, "मैं चाहूँगा कि आप गेनोट कृत 'शारीरिक प्रयोगों की प्रवेशिका' भी पढ़ लें। इस पुस्तक में दी हुई तस्वीरें अधिक स्पष्ट हैं और पाठ्य पुस्तक के रूप में यह······।"

ओदिन्तसोवा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"माफ कीजिए, इवजिनी वैसीलिच, परन्तु मैंने आपको यहाँ पाठ्य पुस्तकों के ऊपर बातें करने के लिए नहीं बुलाया था। मैं उसी बात को पुनः उठाना चाहती हूँ जो हम लोग कल कर रहे थे। आप अचानक इतनी जल्दी चले गए···आप ऊब तो नहीं उठेंगे, क्यों ?"

"मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत हूँ, अन्ना सर्जीएव्ना। परन्तु वह क्या बात थी जिसके विषय में कल हम लोग बातें कर रहे थे ?"

ओदिन्तसोवा ने उसे कनखियों से देखा।

"मेरा ख्याल है कि हम लोग प्रसन्नता के विषय में बातें कर रहे थे। मैं आपको अपने विषय में बता रही थी। खैर, सुख के विषय में मैं यह पूछना चाहती हूँ कि ऐसा क्यों होता है कि जब हम आनन्द ले रहे होते हैं, जैसे कोई सुन्दर संगीत, या कोई सुन्दर वस्तु या अपनी पसन्द के व्यक्तियों के साथ वार्तालाप करना, यह सब कहीं किसी विस्तृत और असीम सुख की ओर संकेत करता हुआ अधिक प्रतीत होता है, सच्ची प्रसन्नता से अधिक, अर्थात् जिस प्रकार की प्रसन्नता हम अनुभव करते हैं, उससे भी अधिक ? ऐसा क्यों होता है ? या शायद आपने इस प्रकार का अनुभव ही नहीं किया है ?"

"आप इस कहावत को जानती हैं—"अपने पड़ोसी की फसल अपनी से अधिक अच्छी प्रतीत होती है," बजारोव ने जवाब दिया, "कल आपने स्वयं स्वीकार किया था कि आप असन्तुष्ट हैं। वास्तव में ऐसे विचार मेरे दिमाग में कभी नहीं उठते।"

"शायद आप इन्हें बेहूदा समझते हैं?"

"नहीं, वे सिर्फ मेरे दिमाग में कभी उठते ही नहीं।"

"सचमुच? आप जानते हैं कि मैं इस बात को जानना बहुत पसन्द करूँगी कि आप क्या सोचते हैं?"

"क्या कहा? मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

"तो सुनिए, मैं बहुत दिनों से आपसे बातें करना चाहती थी। आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है—आप इसे खुद जानते हैं—कि आप साधारण मनुष्यों में से नहीं हैं। आप अभी युवक हैं—आपके सामने आपकी पूरी जिन्दगी पड़ी हुई है। आप क्या करना चाहते हैं? भविष्य के गर्भ में आपके लिए क्या छिपा हुआ है? मेरे कहने का मतलब यह है कि आप किस लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं, आप किस मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं, आपके मन में क्या है? संक्षेप में यह कि आप कौन हैं और क्या हैं?"

"आपकी बातों से मुझे आश्चर्य हो रहा है, अन्ना सर्जीएव्ना। आप जानती हैं कि मैं प्रकृति विज्ञान का अध्ययन कर रहा हूँ, रही यह बात कि मैं कौन हूँ......"

"हाँ, आप कौन हैं?"

"मैं आपको बता चुका हूँ कि मेरा इरादा देहात में डाक्टरी करने का है।"

अन्ना सर्जीएव्ना अधीर हो उठी।

"आप ऐसी बात क्यों कहते हैं? आप स्वयं इसमें विश्वास नहीं करते। आरकेडी अगर यह बात कहता तो उसके लिए ठीक थी परन्तु आपके मुँह से नहीं।"

"आरकेडी किस तरह से......"

"छोड़िए इस बात को। क्या आप इस सीमित क्षेत्र से सन्तुष्ट हो सकेंगे ? और क्या आपने हमेशा यह बात नहीं कही है कि आप चिकित्सा विज्ञान में विश्वास नहीं करते ? आप,अपनी महत्वाकांक्षाओं से परिपूर्ण और एक देहाती चिकित्सक का पेशा ! आप इस तरह की बातें सिर्फ मुझे टालने के लिए कह रहे हैं क्योंकि आप मेरा विश्वास नहीं करते। आप जानते हैं, इवजिनी वैसीलिच, शायद मैं आपको समझने की ताकत रखती हूँ। पहले मैं भी गरीब और महत्वाकांक्षिणी थी जैसे कि आप हैं, सम्भवतः मुझे भी उन्हीं परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा है जिनसे कि आप गुजरे हैं।"

"यह सब ठीक है अन्ना सर्जीएव्ना, परन्तु आप मुझे माफ करेंगी ······मैं अपने मन के भार को हल्का करने का आदी नहीं हूँ, और फिर, आपमें और मुझमें उतना ही अन्तर है जितना कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव में······।"

"इतना अन्तर क्यों ? आप फिर मुझे यह बताने लगेंगे कि मैं उच्च वर्ग की हूँ। यह बहुत बुरी बात है, इवजिनी वैसीलिच, मुझे विश्वास है कि मैं आपके सामने यह साबित कर चुकी हूँ······।"

"और साथ ही," बजारोव ने टोका, "भविष्य के विषय में बातें करने और सोचने से क्या फायदा जो कि अधिकतर हम पर निर्भर नहीं है ? अगर कुछ करने का सुअवसर मिलता है तो बहुत ठीक है और अगर नहीं मिलता है तो आपको कम से कम इस बात का सन्तोष तो होता ही है कि आपने इस पर पहिले से ही सिर नहीं खपाया था।"

"आप मित्रतापूर्ण बातचीत को 'सिर खपाना' कहते हैं ··· या शायद आप मुझे-एक स्त्री होने के कारण, अपने विश्वास के अयोग्य समझते हैं ? आप हम सब औरतों को घृणा करते हैं, करते हैं न ?"

"आपको मैं घृणा नहीं करता अन्ना सर्जीएव्ना, और आप इसे जानती हैं।"

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम···लेकिन कोई परवाह नहीं : मैं आपके भविष्य के बारे में बात करने की आपकी अनिच्छा को समझती हूँ, परन्तु इस समय आपके हृदय में क्या द्वन्द चल रहा है···।"

"चल रहा है !" बजारोव ने दुहराया, "मानो मैं कोई राष्ट्र या समाज हूँ ! किसी भी हालत में यह रंच मात्रा भी रुचिकर नहीं है। साथ ही क्या कोई भी व्यक्ति उस बात को सदैव व्यक्त कर सकता है जो कुछ भी उसके हृदय में चल रहा है ?"

"मैं इसका कोई कारण नहीं देखती कि किसी को भी अपने विचारों को व्यक्त करने में क्या बाधा हो सकती है।"

"क्या आप ऐसा कर सकती हैं ?" बजारोव ने पूछा।

"हाँ," अन्ना सर्जीएव्ना ने तनिक हिचकिचाते हुए कहा।

बजारोव ने सिर झुका लिया।

"आप मुझसे अधिक सुखी हैं।"

अन्ना सर्जीएव्ना ने इसकी तरफ प्रश्नवाचक मुद्रा से देखा।

"जैसी आपकी मर्जी," उसने पुनः कहना प्रारम्भ किया, "परन्तु मैं यह सोचती हूँ कि हमारी यह मुलाकात आकस्मिक ही नहीं है, हम लोग अच्छे मित्र बन सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह—इसे कैसे कहूँ—आपका यह दुराव, यह चुप्पी अन्त में गायब हो जायगी।"

"तो आप इस बात को जान गई हैं कि मैं चुप हूँ और क्या आपने कहा कि······तनाव ?"

"हाँ।"

बजारोव उठ खड़ा हुआ और खिड़की के पास गया।

"और क्या आप इस चुप्पी का कारण जानना चाहेंगी, क्या आप जानना चाहेंगी कि मेरे भीतर क्या द्वन्द चल रहा है ?"

"हाँ।" ओदिन्तसोवा ने भय से अत्यधिक कातर होते हुए दुहराया।

"आप नाराज तो नहीं होंगी ?"

"नहीं।"

"नहीं।" बजारोव उसकी तरफ पीठ किए खड़ा हुआ था। "तो मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि मैं आपको मूर्ख की तरह, पागल के समान प्यार करता हूँ···अन्ततः आपने मालूम कर ही लिया।"

ओदिन्तसोवा ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ा दिए और बजारोव ने अपना मस्तक खिड़की के शीशे से दबाया। वह मुश्किल से सांस ले पा रहा था। उसका सारा शरीर स्पष्ट रूप से कांप रहा था। परन्तु यह कम्प यौवन की लज्जा का परिणाम नहीं था, और न प्रथम स्वीकृति का मधुर उद्वेग ही था जिसने उसे अभिभूत कर रखा था। यह वासना थी जो उत्ताल तरंगों में प्रबल रूप से उसमें उत्पन्न हो रही थी। एक ऐसी वासना जिसमें क्रोध भरा रहता है या उसी से मिलता जुलता कोई भाव था। ओदिन्तसोवा भयभीत और उसके लिए दुखी हो उठी।

"इवगिनी वैसीलिच," वह बुदबुदाई। उसकी वाणी में अनिच्छित कोमलता का समावेश था।

बजारोव पीछे को तेजी से घूमा, उसे निगलने वाली निगाहों से देखा और उसके दोनों हाथ पकड़ कर अचानक उसे अपनी भुजाओं में खींच लिया।

ओदिन्तसोवा ने तुरन्त ही उसके आलिंगन से अपने को मुक्त नहीं किया, फिर भी एक क्षण उपरान्त वह दूर एक कोने में खड़ी हुई बजारोव की तरफ देखने लगी। वह उसकी तरफ बढ़ा''।

"आप मुझे समझ नहीं पाए" वह शीघ्रतापूर्वक भय से आक्रान्त होकर बुदबुदाई। ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि वह उसकी तरफ एक कदम भी और बढ़ाता तो वह चीख उठती''बजारोव ने अपने होंठ चबाए और कमरे से बाहर निकल गया।

आठ घन्टे बाद नौकरानी बजारोव की एक चिट लेकर ओदिन्त-सोवा के पास आई। इसमें एक लाइन लिखी हुई थी—"मुझे आज ही चला जाना होगा या कल सुबह तक ठहर सकता हूँ ?" "तुम्हें आज ही चला जाना चाहिये ? मैं तुम्हें नहीं समझ पाई—तुम मुझे नहीं समझ पाये," ओदिन्तसोवा ने उत्तर दिया, जबकि वह सोच रही थी, "मैं स्वयं ही अपने को नहीं समझ सकी।"

वह भोजन के समय तक दिखाई नहीं दी। इस पूरे समय तक वह पीठ के पीछे हाथ बांधे हुए कमरे में चक्कर लगाती रही। कभी

शीशे के या खिड़की के सामने क्षण भर के लिए रुकती और धीरे से अपने रुमाल से गर्दन पोंछती मानो उस स्थान पर तीव्र जलन हो रही हो। उसने अपने आप से पूछा, किस भावना से प्रेरित होकर उसने बजारोव को अपना हृदय खोल देने के लिए उत्तेजित किया? क्या उसे कोई शक था? "यह मेरी गलती थी।" वह अपने आप बोली, "लेकिन मैं इस बात की कल्पना कैसे कर सकती थी," उसने पुनः उस सारी घटना को अपने दिमाग में दुहराया और बजारोव के उस वहशी चेहरे की याद कर शर्मा गई जब वह उसकी तरफ झपटा था।

"या फिर," अचानक अपने घुंघराले बालों की लट को उछालते हुए स्थिर खड़े होकर कहा। उसने शीशे में अपनी परछाईं देखी। पीछे झुकाए हुए सर के साथ अर्धनिमीलित नेत्रों की रहस्यपूर्ण मुस्कान और खुले हुए अधर उसे कुछ ऐसी बात बताते हुए प्रतीत हुए जिससे वह उद्विग्नता का अनुभव करने लगी।

"नहीं," अन्त में उसने निश्चय किया, "भगवान् ही जानता है कि इसका क्या परिणाम हुआ होता, यह मजाक में उड़ा देने की बात नहीं है। झंझटों और चिन्ताओं से मुक्त रहना ही संसार में मुख्य वस्तु है।"

उसकी शान्ति में व्याघात नहीं पड़ा, परन्तु वह उदास हो उठी और थोड़ी सी रोई भी, बिना उसका कारण जाने--परन्तु इसलिए नहीं कि उसने स्वयं को अपमानित अनुभव किया था। उसने व्यक्तिगत अपमान की भावना का अनुभव नहीं किया परन्तु वह अपनी त्रुटि के प्रति अधिक सजग थी। अनेक अस्पष्ट भावनाओं से उत्तेजित होकर उसने बीते हुये वर्षों की याद की, जिनमें नवीनता के प्रति एक लालसा थी जिनके लिए उसने स्वयं को एक सीमा तक छूट दे दी थी। उसने वहाँ जो कुछ देखा वह खाई न होकर केवल शून्यता थी······ या कुरूपता।

१६

अपने सम्पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ और द्वेष से सर्वथा स्वतन्त्र रहते हुये भी जब ओदिन्तसोवा भोजन के लिए कमरे में आई तो उसने कुछ व्याकुलता का अनुभव किया। फिर भी, भोजन पूर्ण सन्तोष के साथ समाप्त हुआ। पोरफिरी प्लेटोनिच आया और उसने अनेक घटनाओं और बातों के साथ बताया कि वह अभी शहर से लौटा है। उसने यह खबर सुनाई कि गवर्नर ने अपने कमिश्नरों को आज्ञा दी है कि जब वह उन्हें कहीं अचानक घोड़े पर जाने की आज्ञा दे तो वे अपने जूतों में घोड़े में एड़ लगाने वाला कांटा पहना करें। आरकेडी कात्या से धीमी आवाज में बातें कर रहा था और राजकुमारी की तरफ सूक्ष्म दृष्टि से देख लेता था। बजारोव ने कठोर और उदास मुद्रा बना रखी थी। ओदिन्तसोवा ने एक या दो बार उसके उदास और नीची निगाह किए हुए दुखी चेहरे की ओर, आँखें बचा कर नहीं, परन्तु निष्कपटता पूर्वक देखा। बजारोव के चेहरे की प्रत्येक रेखा से कठोर घृणा और विचार का भाव प्रकट हो रहा था। "नहीं ··· नहीं ··· नहीं ··· " भोजन के उपरान्त वह और सब के साथ बाग में चली गई और यह देख कर कि बजारोव उससे बात करना चाहता है वह एक तरफ हट कर खड़ी हो गई। वह उसके पास आया और अब भी अपनी आँखें नीची किए हुए भर्राई हुई आवाज में बोला—

"मुझे आपसे माफी मांगनी चाहिये अन्ना सर्जीएव्ना। आप मुझसे बहुत नाराज होंगी।"

"नहीं, मैं आपसे नाराज नहीं हूँ, इवजिनी वैसीलिच," ओदिन्त-सोवा ने जवाब दिया, "परन्तु मैं दुःखी हूँ।"

"यह और भी बुरी बात है। फिर भी मुझे काफी सजा मिल चुकी है। आप इसे स्वीकार करेंगी कि मेरी स्थिति बड़ी दयनीय हो उठी है। आपने मुझे लिखा था, "आपको जाना ही चाहिये।" मैं न तो ठहर ही सकता हूँ और न ठहरना चाहता हूँ। मैं कल चला जाऊँगा।"

"इवजिनी वैसीलिच, क्यों ?"

"मैं क्यों जा रहा हूँ ?"

"नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था।"

"बीते हुए को वापिस नहीं किया जा सकता, अन्ना सर्जीएव्ना··· और जल्दी या देर में यह होने को ही था। नतीजा यह है कि मुझे जाना ही पड़ेगा। मैं केवल एक ही शर्त पर यहाँ ठहर सकता हूँ परन्तु जो असम्भव है। आप मेरी उद्दण्डता को क्षमा करेंगी—परन्तु आप मुझे प्रेम नहीं करतीं, करती हैं ? और कभी भी नहीं करेंगी ?"

क्षणभर के लिये भौंहों के नीचे बजारोव के नेत्र चमक उठे।

अन्ना सर्जीएव्ना ने कोई जवाब नहीं दिया। "मैं इस व्यक्ति से भयभीत हूँ।" उसके दिमाग में यह विचार कौंध गया।

"गुड बाई, मैडम," बजारोव ने कहा, मानो उसके विचारों का अनुमान लगा रहा हो और घर की तरफ मुड़ा।

अन्ना सर्जीएव्ना धीरे-धीरे उसके पीछे आई और कात्या को बुला कर उसकी बांह पकड़ ली। उसने शाम तक उसे अपनी बगल में रखा। उसने ताश खेलने से इन्कार कर दिया और अधिकतर हँसती रही जो कि उसके पीले चेहरे और परेशान निगाहों से मेल नहीं खा रहा था। आरकेडी ने उसे देखा और आश्चर्य किया—उसी तरह जिस तरह युवक किया करते हैं। कहने का मतलब यह है कि वह अपने से पूछता रहा—"इस सब का मतलब क्या है ?" बजारोव ने स्वयं को अपने कमरे में बन्द कर रखा था। फिर भी वह चाय के लिये नीचे आया। अन्ना सर्जीएव्ना की इच्छा हुई कि उससे कुछ मधुर बातें करे, परन्तु वह इस बात को समझने में असमर्थ थी कि इस चुप्पी को कैसे तोड़ा जाय।

एक अप्रत्याशित घटना ने उसे इस पशोपेश से उबार लिया। खानसामे ने सितनीकोव के आगमन की घोषणा की।

वह प्रगतिशील विचारों वाला युवक जिस भयातुरता के साथ कमरे में घुसा वह अवर्णनीय है। अपनी स्वाभाविक धृष्टता के साथ

उसने उस स्त्री से मिलने का विचार किया जिससे उनका परिचय न कुछ के बराबर था और जिसने उसे कभी भी निमन्त्रित नहीं किया था. परन्तु जो, जैसी कि उसे सूचना मिली थी, उसके चतुर परिचितों का मनोरंजन कर रही थी। फिर भी वह तनिक भी नहीं शर्माया और क्षमा मांगने और बधाई जिन्हें कि उसने जबानी रट रखा था—देने के स्थान पर, उसने एक बहाना गढ़ लिया कि इवदोक्सिया, जिसे कुक्शिना भी कहा जाता था, ने उसे अन्ना सर्जीएव्ना का स्वास्थ्य समाचार पूछने के लिये भेजा है और यह कि आरकेडी निकोलायविच ने भी उसके विषय में अत्यन्त ऊँची राय प्रकट की थी। इतना कहते-कहते उसकी जबान लड़खड़ाने लगी और वह इतना परेशान हो उठा कि अपने ही टोप पर बैठ गया। लेकिन जब उसे किसी ने भी बाहर निकल जाने के लिये नहीं कहा और यहाँ तक कि अन्ना सर्जीएव्ना ने अपनी मौसी और बहन से उसका परिचय करा दिया, तो वह शीघ्र ही सम्हल गया और अपनी पूर्ण योग्यता के साथ चहकने लगा। कभी २ ओछे आदमियों के आगमन का भी जीवन में स्वागत किया जाता है। यह वातावरण के तनाव को कुछ कम कर देता है और आत्मविश्वासी या जिद्दी भावनाओं को उनकी सगोत्रता की याद दिला कर गम्भीर बना देता है। सितनीकोव के आगमन से, वातावरण, जैसा कि था और भी नीरस, अधिक छूछा और अपेक्षाकृत सरल हो गया। हरेक ने खूब पेट भर कर खाना खाया और सब लोग नियत समय से आधा घन्टा पहले ही सोने के लिये चले गये।

"अब मैं दुहरा सकता हूँ", आरकेडी ने अपने बिस्तर से बजारोव को सम्बोधन कर कहा जिसने भी सोने के लिये कपड़े उतार दिये थे, "कि एक दिन तुमने मुझसे क्या कहा था। तुम इतने उदास क्यों हो? मेरा ख्याल है कि तुमने कोई पवित्र कर्त्तव्य पूर्ण किया है?"

इन दोनों युवक मित्रों में पिछले कुछ दिनों से एक ऐसा अर्द्ध-परिहास पूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गया था, जिसकी तह में मौन अविश्वास और सुषुप्त ईर्षा होती है।

"मैं कल अपने पिता के पास जा रहा हूँ", बजारोव ने घोषणा की।

आरकेडी कुहनी के बल उठंग कर बैठ गया। उसे आश्चर्य हुआ और फिर भी वह कुछ सीमा तक प्रसन्न भी हुआ।

"आह!" वह बोला, "क्या इसी कारण तुम उदास हो?"

बजारोव ने जम्हाई ली।

"उत्सुकता ने बिल्ली की हत्या कर दी थी।"

"आशा सर्जीएव्ना का क्या होगा?" आरकेडी कहता गया।

"क्या, उसका क्या होगा?"

"मेरा मतलब यह है कि क्या वह तुम्हें जाने दे रही है?"

"मुझे उसकी आज्ञा नहीं लेनी है, लेनी है क्या?"

आरकेडी विचार में डूब गया। बजारोव बिस्तर पर गया और दीवाल की तरफ मुँह कर लिया। कुछ समय तक खामोशी रही।

"इवजिनी", आरकेडी ने पुकारा।

"क्या है?"

"मैं भी कल जा रहा हूँ।"

बजारोव कुछ भी नहीं बोला।

"मैं सिर्फ घर जाऊँगा", आरकेडी ने फिर कहा, "हम दोनों खोखलोव सेटिलमेन्ट तक साथ-साथ जायेंगे और वहाँ फैदोत तुम्हें घोड़े दे देगा। मैं तुम्हारे सम्बन्धियों से मिलना चाहता हूँ परन्तु मुझे डर है कि शायद मैं तुम्हारे घर वालों के बीच एक बाधा बन जाऊँ। तुम फिर हमारे यहाँ आओगे, आओगे न?"

"मैं अपना सामान तुम्हारे यहाँ छोड़ आया हूँ", बजारोव ने बिना मुँह मोड़े हुए ऐसे कहा जैसे सवाल का जवाब दे रहा हो।

"वह मुझसे यह क्यों नहीं पूछ रहा कि मैं क्यों जा रहा हूँ और उतना ही अकस्मात जितना कि वह खुद जा रहा है?" आरकेडी ने सोचा। "सोचो तो सही कि भला क्यों तो मैं जा रहा हूँ और क्यों वह जा रहा है", उसने अपने विचारों को आगे बढ़ाया। उसे अपने

प्रश्न का कोई भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला और उसका हृदय कड़वाहट से भर उठा। उसने यह अनुभव किया कि उसके लिये इस जीवन को छोड़ना, जिसका कि वह इतना अभ्यस्त हो गया है, अत्यन्त दुःखदाई होगा, लेकिन अपने आप रहना भी मद्दा लगेगा। "इन दोनों के बीच कोई घटना अवश्य घटी है," उसने अपने आपसे कहा। "उसके जाने के बाद मैं ही यहाँ क्यों मड़राता रहूँ? मैं सिर्फ उसे परेशान ही करूंगा और उसे खो बैठूंगा," उसने अन्ना सर्जीएव्ना की कल्पना करते हुए सोचा; फिर उस युवती विधवा के सुन्दर चित्र के साथ ही साथ एक दूसरा चित्र भी धीरे-धीरे उभरने लगा।

"मैं कात्या से भी बिछुड़ जाऊँगा," आरकेडी ने अपने तकिए पर सिर रखे हुए, जिस पर उसकी एक आँसू की बूंद टपक पड़ी थी, धीरे धीरे फुसफुसाते हुए कहा। ···उसने अचानक अपने बाल पीछे किए और जोर से बोला।

"आखिर वह गधे का बच्चा सितनीकोव यहाँ आ धमका?"

बजारोव बिस्तर पर कुछ कुनमुनाया और फिर बोला—

"मेरे प्यारे दोस्त, मैं देख रहा हूँ कि तुम अब भी बिल्कुल भोले हो। इस संसार में सितनीकोव जैसे प्राणी आवश्यक हैं। क्या तुम नहीं देखते कि मुझे ऐसे गधों की आवश्यकता रहती है। दरअसल तुम देवताओं से यह आशा नहीं कर सकते कि वे ईंटें पकाएंगे!···"

"हूँ," आरकेडी ने अपने आप सोचा और एक झटके के साथ उसके नेत्रों के सम्मुख बजारोव के अहंकार की अतल गहराई का चित्र खिंच गया। "तो हम और तुम देवता हैं? या सम्भवतः तुम देवता हो और मैं बेवकूफ हूँ?"

"हाँ," बजारोव ने सनक में आकर कहा, "तुम अब भी बेवकूफ हो।"

ओदिन्तसोवा ने कोई विशेष आश्चर्य प्रकट नहीं किया जब दूसरे दिन आरकेडी ने उसे बताया कि वह बजारोव के साथ ही जारहा है। वह बेचैन और थकी हुई लग रही थी। कात्या ने आरकेडी की तरफ

गम्भीरता पूर्वक और चुपचाप देखा। आरकेडी यह देखे बिना न रह सका कि राजकुमारी अपने शाल के नीचे तेजी से कुनमुनाई। और जहाँ तक सितनीकोव का सम्बन्ध था, वह यह सुन कर मूर्तिवत् बैठा रह गया। वह अभी एक नया सुन्दर सूट पहन कर खाना खाने आया था जो इस बार पान-स्लावी फैशन का नहीं था। गत रात्रि उसने अपने साथ लाई हुई तड़क भड़क की विभिन्न शानदार चीजों का प्रदर्शन कर अपनी सेवा करने वाले नौकर को भौंचक्का बना दिया था। और अब उसके साथी उसे छोड़ कर भागे जा रहे थे। उसने कुछ बनकर वालें की ओर फिर जंगल के किनारे घिरे हुए खरगोश के समान इधर उधर दौड़ने सा लगा और फिर अचानक, लगभग पागल की तरह उन्मत्त होकर चीखते हुए उसने घोषणा की कि वह भी जा रहा है। ओदिन्तसोवा ने उसे नहीं रोका।

"मेरी गाड़ी बड़ी आरामदेह है," इस अभागे नवयुवक ने आरकेडी को सम्बोधन करते हुए कहा—"मैं तुम्हें अपने साथ ले जा सकता हूँ। इवजिनी वैसीलिच तुम्हारी गाड़ी में चला जायगा। यह व्यवस्था बहुत अच्छी रहेगी।"

"परन्तु यह तुम्हारे रास्ते से तो बिल्कुल अलग है और यहाँ से मेरा घर भी बहुत दूर है।"

"कोई बात नहीं। मेरे पास बहुत समय है। साथ ही मुझे वहाँ कुछ काम भी है।"

"जमीन के पट्टे का काम शायद," आरकेडी ने तिरस्कार पूर्ण स्वर में कहा।

परन्तु सितनीकोव पूरा चिकना घड़ा था। उसने अपनी सदा की आदत के अनुसार खीस निपोर दी।

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी गाड़ी बड़ी आरामदेह है," वह बड़बड़ाया, "और उसमें सबके लिए काफी जगह है।"

"इन्कार करके महाशय सितनीकोव को निराश मत कीजिए," अन्ना सर्गीएव्ना बीच में बोल उठीं।

आरकेडी ने उसकी तरफ अर्थपूर्ण दृष्टि डाल कर स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

खाने के उपरान्त मेहमान विदा हुए। बजारोव को विदा करते हुए ओदिन्तसोवा ने अपना हाथ यह कहते हुए उसके हाथ में दिया—

"हम लोग पुनः एक दूसरे से मिलेंगे, मिलेंगे न ?"

"जैसी आपकी मर्जी।" बजारोव ने जवाब में कहा।

"तो फिर हम अवश्य मिलेंगे।"

आरकेडी बरामदे की सीढ़ियों पर सबसे पहले आया और सितनीकोव की गाड़ी में बैठ गया। खानसामे ने आदरपूर्वक उसे सहारा देकर चढ़ा दिया। उसकी मनोदशा ऐसी हो रही थी मानो उसकी सारी खुशी नष्ट हो गई है और वह रोने रोने को हो रहा हो।

बजारोव टमटम में बैठ गया। ओखजोव सेटिलमेन्ट पहुँच कर आरकेडी ने तब तक इन्तजार किया जब तक कि फेदोत, जो सरायवाला था, ने घोड़े नहीं जोते और तब टमटम के पास जाकर अपनी उसी अभ्यस्त मुस्कान के साथ बजारोव से बोला—

"इविजनी, मुझे अपने साथ ले चलो, मैं तुम्हारे घर जाना चाहता हूँ।"

"आओ, बैठ जाओ," बजारोव फुसफुसाता हुआ सा बोला।

सितनीकोव जो प्रसन्नतापूर्वक सीटी बजाता हुआ अपनी गाड़ी के चारों ओर चक्कर काट रहा था, यह खबर सुनकर मुँह फाड़े रह गया, जबकि आरकेडी ने पूर्ण शान्ति से अपना सामान उठवाकर दूसरी गाड़ी में रखवाया और फिर स्वयं बजारोव के बराबर बैठने के बाद अपने पुराने साथी के प्रति नम्रतापूर्वक झुक कर जोर से चीखा। "आगे बढ़ो, कोचवान !" टमटम आगे बढ़ी और थोड़ी ही देर में आँखों से ओझल हो गई। आश्चर्य से भौंचक बने हुए सितनीकोव ने अपने कोचवान की तरफ चोरी से देखा लेकिन वह अपनी चाबुक से बाहरी घोड़े की पूंछ सहला रहा था जिसे देखकर सितनीकोव कूद कर अपनी गाड़ी में चढ़ा और बराबर से गुजरते हुए दो किसानों

को देखकर चीख उठा—"अरे मूर्खों, अपने टोप पहनो।" इतना कह कर वह शहर की तरफ चल दिया जहाँ वह दोपहर के बाद पहुँचा। वहाँ पहुँच कर दूसरे दिन उसने कुक्शिना को बताया कि वह उन दोनों घृणित, असभ्य और बेहूदे छोकरों के विषय में क्या सोचता है।

टमटम में बजारोव के बराबर बैठने के बाद आरकेडी ने जोर से उसका हाथ दबाया और बहुत देर तक खामोश बैठा रहा। बजारोव ने, ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके हाथ दबाने और मौन को समझा और पसन्द किया। वह पिछली रात एक सैकिन्ड को भी नहीं सो पाया था और न उसने पाइप ही पीया था। पिछले कई दिनों से उसने न के बराबर खाना खाया था। आँखों तक नीचे झुकाई हुई छायादार टोपी के नीचे उसका चेहरा बड़ा दुबला और कुरूप दिखाई दे रहा था।

"अच्छा, दोस्त," अन्त में उसने उस चुप्पी को भंग किया, "आओ चुरुट पीएं·· देखना मेरी जीभ पीली तो नहीं पड़ रही है?"

"हाँ, है तो," आरकेडी ने जबाव दिया।

"तो यह बात है······यह चुरुट भी फीकी लग रही है। हाजमा कमजोर हो गया है।

"सचमुच तुम इन पिछले कुछ दिनों से बड़े उदास दिखाई दे रहे थे," आरकेडी ने कहा—

"कोई बात नहीं। सब ठीक हो जायगा। परन्तु मामला कुछ परेशानी का है क्योंकि मेरी माँ का हृदय अत्यन्त कोमल है। जब तक कि तुम्हारी तोंद न बढ़ जाय और तुम दिन में दस बार न खाओ तो वह बुरी तरह परेशान हो उठती है। मेरे पिता भी बुरे स्वभाव के नहीं हैं। वे विभिन्न स्थानों में भ्रमण कर चुके हैं और अनेक चीजें देखी हैं। नहीं, चुरुट पीने में मजा नहीं आ रहा," चुरुट को धूल से भरी हुई सड़क पर फेंकते हुए वह बोला।

"यहाँ से तुम्हारी जमींदारी पच्चीस वरर्ट दूर है, है न?" आरकेडी ने पूछा।

"हाँ! मगर उस बुड्ढे से पूछो।

उसने बक्स पर बैठे हुए फेदोत के आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा।

उस बुड्ढे ने कहा "कौन जाने–यहाँ कभी वस्टौं से दूरी नापी ही नहीं गई है," और एक सांस में ही बाहरी घोड़े को तिकनिकाने लगे क्योंकि वह अपने सिर को झटका दे रहा था।

"हाँ, हाँ," बजारोव ने कहना शुरू किया, "यह तुम्हारे लिए एक सबक है, एक सीख देने वाला सबक, मेरे दोस्त। ओफ, क्या मुसीबत है! हर मनुष्य का भाग्य एक धागे से लटका हुआ है। किसी भी क्षण उसके पैरों के नीचे एक गहरी दरार फट सकती है और वह दुनियाँ भर की मुसीबतों को अपने सिर उठाता हुआ चलता रहता है, अपने जीवन को नरक बना लेता है।"

"तुम्हारा संकेत किस बात की तरफ है?" आरकेडी ने पूछा।

"मैं किसी खास बात की ओर संकेत नहीं कर रहा हूँ। मैं तो तुमसे एक सीधी और स्पष्ट बात कह रहा हूँ—हम दोनों ही बेवकूफों का सा काम कर रहे थे। उसकी बात करने से क्या लाभ? परन्तु मैंने अस्पताल में इस बात को देखा था कि जो आदमी अपनी पीड़ा से बुरी तरह कष्ट भोगता है अन्त में विजय उसी की होती है।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा," आरकेडी बोला, "तुम्हारे पास कोई शिकायत करने का तो कोई कारण नहीं दिखाई देता।"

"अच्छा, जब तुम मेरा मतलब नहीं समझे तो लो मैं समझाए देता हूँ। मेरी अपनी राय में सड़क के किनारे बैठ कर गिट्टी तोड़ना किसी भी औरत को अपनी छोटी उंगली पकड़ने देने की अपेक्षा ज्यादा अच्छा है। यह सब···" बजारोव अपना प्रिय शब्द 'रोमान्टिसिज्म' का उच्चारण करने जा ही रहा था कि उसने अपने को संयत कर लिया और बोला," वाहीयात है। तुम मेरा अभी विश्वास नहीं करोगे, परन्तु मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि तुम और मैं दोनों स्त्री की सोहबत में रह कर आए हैं और उसका आनन्द उठाया है, परन्तु उस

तरह की सोसायटी छोड़ना ऐसा ही है जैसा कि गर्मी के दिन शीतल फव्वारे की फुहार में नहाना। किसी भी आदमी के पास इन मामूली बातों में बर्बाद करने के लिये समय नहीं होता। एक पुरानी स्पेनी कहावत है कि मनुष्य को हमेशा बिना लगाम के आजाद रहना चाहिए। इधर देखो, "बक्स पर बैठे हुए किसान की ओर मुड़कर उसने कहा, "ए चतुर आदमी, तुम्हारे बीबी है ?"

उस देहाती ने अपने चौड़े और पनीली आँखों वाले चेहरे को हमारे मित्रों की तरफ मोड़ा।

"बीबी, आपने कहा ? हाँ है तो।"

"तुम उसे मारते हो ?"

"अपनी बीबी को मारता हूँ ? कभी-कभी मौके पर। बिना बात उसे कभी नहीं मारता।"

"शाबाश। क्यों, क्या वह तुम्हें मारती है ?"

उसने लगाम को झटका दिया।

"आप कैसी बात करते हैं, साहब। आप जरूर दिल्लगी कर रहे हैं।" यह स्पष्ट था कि उसने अपने को अपमानित अनुभव किया था।

"सुना तुमने आरकेडी निकोलायविच ! तुम्हें और हमें छिपने का एक बहाना मिल गया है···। शिक्षित होने का यही विशेष लाभ है।"

आरकेडी बरबस हंस पड़ा और बजारोव ने दूसरी तरफ मुँह मोड़ लिया। यात्रा के अन्त तक फिर उसने अपना मुँह नहीं खोला।

वे पच्चीस वर्स्ट आरकेडी को अच्छे खासे पचास के लगभग जान पड़े। अन्त में, पहाड़ी की एक ढलान पर एक गाँव दिखाई पड़ा। यहाँ बजारोव के माँ-बाप रहते थे। पास ही भोजपत्र के छोटे-छोटे पेड़ों की झुरमुट में फूस के छप्पर की छत वाली एक छोटी सी कोठी थी। टोपी पहने हुए दो किसान पहली झोपड़ी के पास खड़े हुए गाली-गलौज कर रहे थे। "तू सुअर हो," एक दूसरे से कह रहा था, "और छोटे बच्चे से भी गया बीता वर्ताव कर रहा।" "और तेरी औरत चुड़ैल है," दूसरे ने जवाब में कहा।

"आप सुख और विलास के अभ्यस्त हैं, मैं जानता हूँ, फिर भी इस संसार के बड़े से बड़े लोग भी एक कुटिया के नीचे समय व्यतीत करने से घृणा नहीं करते।"

"हे भगवान्," आरकेडी व्यग्र होकर बोला, "मेरी गिनती संसार के बड़े व्यक्तियों में कब से होने लगी? और मैं सुख और आराम का भी तो अभ्यस्त नहीं हूँ।"

"मुझे यह सब मत बताइए," वासिली इवानिच ने प्रेम से दाँत निकालते हुए कहा, "सम्भव है मैं अब जमाने की रफ्तार से पिछड़ गया हूँ परन्तु मैंने संसार का थोड़ा बहुत अनुभव अवश्य किया है। मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ। मैं अपनी तरह का थोड़ा बहुत मनोविज्ञान का भी ज्ञान रखता हूँ, और ज्योतिष का भी। अगर मुझ में ये विशेषताएं—जैसा कि मैं इन्हें कहने का साहस करता हूँ—न होतीं तो मैं कब का मिट्टी में मिल गया होता। क्योंकि मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को कुचले जाकर नष्ट होने में कुछ भी समय न लगता। मैं आपसे स्पष्ट कह दूँ कि आपकी और अपने पुत्र की मित्रता को देखकर मुझे हार्दिक आनन्द प्राप्त होता है। मैंने अभी उसे देखा था। वह हमेशा की तरह ही बहुत जल्दी उठ बैठा था—सम्भव है आप उसके इस नियम से परिचित होंगे—और बाहर घूमने निकल गया है। मेरी उत्सुकता के लिए माफ कीजिए लेकिन क्या इवजिनी को आप बहुत दिनों से जानते हैं?"

"पिछली सर्दियों से।"

"ठीक। क्या मैं यह भी पूछ सकता हूँ—लेकिन बैठ कर बातें क्यों न की जांय? पिता की हैसियत से क्या मैं पूछ सकता हूँ—बिल्कुल स्पष्टता पूर्वक—कि मेरे इवजिनी के बारे में आपकी क्या धारणा है?"

"जितने व्यक्तियों से मैं अब तक मिला हूँ उनमें से आपका पुत्र सबसे निराला है," आरकेडी उत्साहित होकर बोला।

वासिली इवानिच की आँखें विस्फारित हो उठीं और गालों पर हल्की लाली दौड़ गई। उसके हाथ से फावड़ा नीचे गिर पड़ा।

"और आप, विश्वास करते हैं···" उसने कहना प्रारम्भ किया।

"मुझे पूर्ण विश्वास है," आरकेडी ने जल्दी जल्दी कहना शुरू किया—"कि आपके पुत्र का भविष्य महान है और वह आपका नाम अमर कर देगा। मुझे उसी क्षण से इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया था जब हमारी पहली मुलाकात हुई थी।"

"कैसे···यह कैसे हुआ?" वासिली इवानिच ने हकलाते हुए बड़ी मुश्किल से सांस लेकर कहा। उसके खुले मुख पर प्रसन्नता पूर्ण मुस्कान खेल उठी जो बहुत देर तक स्थिर रही।

"तो आप यह जानना चाहते हैं कि हम लोगों की मुलाकात कैसे हुई थी?"

"हाँ···और आमतौर से······"

आरकेडी ने बजारोव के विषय में उस उत्साह और लगन से भी अधिक उत्साहित होकर कहना शुरू किया जिससे उसने उस सुहावनी संध्या को ओदिन्तसोवा के साथ नाचते हुए कहा था।

वासिली इवानिच बैठा हुआ तल्लीनता पूर्वक सुनता रहा और साथ ही उसने नाक साफ की, अपनी हथेलियों के बीच रूमाल का गोला सा बनाया, खांसा, बालों पर हाथ फेरा और अन्त में अपने को रोकने में नितान्त असमर्थ होकर उसने झुककर आरकेडी के कन्धे को चूम लिया।

"मैं आपको बता नहीं सकता कि आपकी बातों से मुझे कितनी प्रसन्नता प्राप्त हुई है," उसने बराबर मुस्कराते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप यह जान लें कि मैं······अपने बेटे की पूजा करता हूँ। मैं अपनी वृद्धा पत्नी के लिए कुछ भी नहीं कह सकता—वह माँ है—और यह शब्द ही सब कुछ स्वयं कह देता है। परन्तु मैं उसके सामने अपने भावों को व्यक्त नहीं कर सकता। वह इसे पसन्द नहीं करता। उसे हर प्रकार के भावावेश पूर्ण प्रेम प्रदर्शन से सख्त चिढ़ है। बहुत से आदमी

उसकी इस कठोरता को पसन्द नहीं करते जिसे वे घमन्ड या नासमझी समझते हैं, परन्तु उस जैसे व्यक्ति का मूल्य साधारण रायों से नहीं नापा जा सकता। इस बारे में आपका क्या ख्याल है? जैसे मिसाल के तौर पर देखिए। उसकी स्थिति में दूसरा कोई भी आदमी अपने माँ बाप के गले का बोझ बन जाता, परन्तु उसने, आप विश्वास करें या न करें, कभी भी एक पाई अतिरिक्त खर्च के लिए नहीं मांगी। मैं इस बात की कसम उठा सकता हूँ।"

"वह एक ईमानदार और निस्वार्थी व्यक्ति है," आरकेडी ने राय जाहिर की।

"निस्वार्थी—बिल्कुल यही बात है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, आरकेडी निकोलाइच, मैं केवल उसकी पूजा ही नहीं करता, मुझे उसके ऊपर गर्व है। और मेरी एकमात्र आकांक्षा यह देखने की है कि एक दिन वह आए जब उसके आत्म चरित में निम्नांकित पंक्तियाँ लिखी जांय।

"एक साधारण फौजी डाक्टर का पुत्र, जिसने प्रारम्भ में ही उसके महान् भविष्य को देख लिया था और उसकी शिक्षा के लिए कोई कसर नहीं उठा रखी थी।"······

वृद्ध की आवाज लड़खड़ा उठी।

आरकेडी ने अपने हाथ रगड़े।

"आपका क्या विचार है," थोड़ी देर की खामोशी के बाद वासिलि इवानिच ने पूछा, "क्या चिकित्सा का क्षेत्र उसे इतना प्रख्यात बना सकेगा या नहीं जिसकी कि आप भविष्यवाणी कर रहे हैं?"

"निश्चित रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में नहीं, यद्यपि इसमें भी वह एक असाधारण सम्मान प्राप्त करने में समर्थ होगा।"

"आप फिर किस क्षेत्र में समझते हैं आरकेडी निकोलाइच?"

"यह कहना अभी कठिन है परन्तु वह प्रसिद्ध अवश्य होगा।"

"वह प्रसिद्ध होगा!" वृद्ध ने दुहराया और अपने विचारों में खो गया।

"एरीना व्लासीएव्ना आप लोगों को नाश्ते के लिए बुला रही

हैं," पकी हुई रसभरियों की एक बड़ी प्लेट ले जाते हुए अनफिशुश्का कहती गई।

वासिली इवानिच चौंका।

"रसभरियों के साथ ठण्डी मलाई भी होगी ?"

"जी हाँ।"

"देखिये, फिर भी वह ठण्डी जरूर है! तकल्लुफ मत कीजिए आरकेडी निकोलाइच, शुरू कीजिए। इतनी देर से इवजिनी कहाँ है ?"

"मैं यह रहा," बजारोव आरकेडी के कमरे से बोला।

वासिली इवानिच जल्दी से पीछे की तरफ घूमा!

"आहा! तुमने सोचा था कि अपने दोस्त से मिलोगे परन्तु तुम्हें बहुत देर हो गई। हम लोग बहुत देर से गपशप कर रहे हैं। अब चल कर नाश्ता करना चाहिए—माँ हम लोगों को बुला रही हैं। मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।"

"किस बाबत ?"

"यहाँ एक किसान है जिसे कमलवायु हो गया है।"

"वह तो पीलिया कहलाता है ?"

"हाँ, बहुत पुराना मर्ज है और असाध्य सा।

"मैंने उसे सेनटोरी और सेन्ट जौन का मिक्श्चर पीने को तथा खाने के लिए गाजर और साथ में थोड़ा सा सोडा बताया है। परन्तु ये चीजें तो केवल रोग को कुछ समय के लिए हल्का करने वाली हैं। उसे तो कुछ ज्यादा तेज और प्रभावकारी चीज देनी पड़ेगी। यद्यपि तुम दवाइयों का मजाक उड़ाते हो परन्तु मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे कोई अच्छी सलाह दोगे। परन्तु इस बारे में हम फिर बात करेंगे। अब तो चल कर नाश्ता करना चाहिए।"

वासिली इवानिच फुर्ती से उछल कर खड़ा हो गया और रोबर्ट ले डाइबल का एक पद मस्त होकर गाने लगा:—

"जीवन पथ के लिए नियत अति उच्च यह—
पाए सुख सर्वदा और उसे छोड़ें नहीं।"

"अद्‌भुत, वे अब भी कितने उत्साही हैं! खिड़की से हटते हुए बजारोव बोला।

× × ×

दोपहर का समय था। सूरज हल्की सफेदी लिए हुए बादलों की झीनी चादर में से झाँक रहा था। चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता थी। गाँव में केवल मुर्गे पंख ऊँचे कर बाँग दे रहे थे जिससे अजीब सुस्ती-उदासी की भावना उत्पन्न हो रही थी और कहीं ऊँचे पेड़ों की चोटी पर बाज का बच्चा निरन्तर विलाप के से स्वर में चीखे जा रहा था। आरकेडी और बजारोव एक छोटे से घास के ढेर की छाया में लेटे हुए थे। उन्होंने अपने नीचे एक या दो बोझ घास के उठाकर बिछा लिए थे जो अब भी हरी और सुगन्धित थी।

"वह आसपिन का पेड़", बजारोव ने कहना शुरू किया, "मुझे अपने बचपन की याद दिलाता था। यह एक गढ़े के किनारे पर खड़ा हुआ है जहाँ ईंटों का एक भट्टा था और उस समय मुझे इस बात का विश्वास था कि उस गढ़े और उस पेड़ में कोई जादू है। मैं उनके पास रह कर कभी भी नहीं उकताता था। उस समय मैं यह नहीं समझता था कि बालक होने की वजह से ही मैं नहीं उकताता था। और अब जब कि मैं बड़ा हो गया हूँ उस जादू का कोई असर नहीं पड़ता।"

"कुल मिलाकर तुम यहाँ कितने दिनों तक रहे हो?" आरकेडी ने पूछा।

"लगातार दो साल तक। उसके बाद हम यहाँ कभी-कभी आते रहते थे। हमारी जिन्दगी अजीब खानाबदोशों की सी जिन्दगी थी जिसमें अधिकतर हम एक शहर से दूसरे शहर में मारे-मारे फिरते थे।"

"और क्या यह मकान भी पुराना है?"

"हाँ, बहुत पुराना। यह नाना के समय बनवाया गया था—मेरी माँ के पिता के समय में।"

"तुम्हारे नाना कौन थे?"

"कौन जाने क्या थे। शायद मेजर थे। उन्होंने सवोरोव* की सेना में काम किया था और आल्प्स पर्वत को सेना द्वारा पार किए जाने की कहानियाँ सुनाया करते थे। बिल्कुल झूँठी कहानियाँ।"

"यही कारण है कि आपके कमरे में सवोरोव का चित्र लटक रहा है। मगर मुझे तुम्हारे जैसे छोटे घर पसन्द हैं—पुराने, आरामदेह और एक विशेष प्रकार की महक से भरे हुए।"

"मिट्टी के तेल के लैम्प और मैलीलोट† की गन्ध", बजारोव जम्हाई लेते हुए बोला, "और इन छोटे खुशनुमा घरों में मक्खियाँ जो बहुत होती हैं सो......।"

"मैं यह पूछता हूँ", कुछ देर रुक कर आरकेडी बोला—"क्या बचपन में तुम पर कड़ा नियंत्रण रखा गया था?"

"तुमने देख ही लिया है कि मेरे माँ बाप कैसे हैं? उन्हें सख्त नहीं कहा जा सकता, क्यों कह सकते हो?"

"तुम उन्हें प्यार करते हो, इवजिनी?"

"करता हूँ, आरकेडी।"

"वे तुम्हें कितना प्यार करते हैं।"

बजारोव खामोश हो गया।

"तुम जानते हो कि मैं क्या सोच रहा हूँ", उसने सिर के पीछे दोनों हाथ बांधते हुए थोड़ी देर बाद पूछा।

"नहीं, क्या सोच रहे हो?"

"मैं सोच रहा था कि मेरे परिवार वाले इस संसार में सुखद जीवन बिता रहे हैं। मेरे पिता लगभग साठ वर्ष के होते हुए भी क्षणिक आराम पहुँचाने वाली दवाइयों के बारे में बातें करते हैं, बीमारों का

*अलेग्जैण्डर वैसिलीविच सवोरोव [१७२९–१८०० ई०] एक महान रूसी सेनापति था जिसने नैपोलियन को हराने के बाद कौरसाकोव की मदद के लिए आल्प्स पर्वत को पार किया था।

†एक दुर्गन्धित घास का पौधा।

इलाज करते हैं, किसानों के साथ उदारता का व्यवहार करते हैं और साधारणतया उनका जीवन मौज में बीत रहा है। माँ भी खुश हैं। उनका पूरा दिन विभिन्न घरेलू धन्धों में बीतता और उसी में सुख और दुःख की इतनी बातें शामिल हैं कि उन्हें रुक कर सोचने की फुर्सत ही नहीं मिल पाती जब कि मैं····· ”

“क्यों, तुम्हें क्या हुआ ?”

“मैं सोच रहा हूँ कि मैं यहाँ घास के ढेर के नीचे लेटा हुआ हूँ·· मैंने यहाँ थोड़ी सी जगह घेर रखी है वह चतुर्दिक विस्तार को देखते हुए कुछ भी नहीं है जहाँ मैं नहीं हूँ, जहाँ बाल बराबर भी कोई मेरी चिन्ता नहीं करता और मेरी जिन्दगी का छोटा सा दायरा इस अनन्तता में एक बिन्दु के समान है जहाँ न तो मैं जा सका हूँ और न जा सकूँगा। फिर भी इसी परमाणु और इसी गणित के अङ्क में, रक्त का संचालन होता है, दिमाग काम करता है, इच्छायें उत्पन्न होती हैं ·····कितना अद्भुत ! कितना असङ्गत।”

“तुम ठीक कहते हो”, बजारोव बोला, “जो कुछ मैं कहना चाहता था यह है कि यहाँ वे लोग हैं, मेरा मतलब अपने माँ बाप से है, बराबर व्यस्त रहते हैं और अपनी तुच्छता के प्रति कभी नहीं सोचते—यह भावना उन्हें कभी नहीं कचोटती······जब कि मैं······मैं परेशान और भयानक हो उठा हूँ।”

“भयानक ? मगर भयानक क्यों ?”

“क्यों ? तुम पूछते हो क्यों ? क्या तुम भूल गये ?”

“मैं कुछ भी नहीं भूला हूँ परन्तु फिर भी मैं यह नहीं सोच पाता कि तुम्हें नाराज होने का क्या अधिकार है। मैं मानता हूँ कि तुम दुःखी हो मगर······”

“ओह, यह बात है आरकेडी निकोलाइच, प्रेम के बारे में तुम्हारे विचार भी आधुनिक युवकों से मिलते जुलते हैं। तुम छोटी मुर्गी को आकर्षित करते हो और जैसे ही वह तुम्हारी पुकार का समर्पण पूर्ण उत्तर देती है तुम जल्दी से पीछे हट जाते हो। मैं उस तरह का नहीं हूँ।

लेकिन छोड़ो इन बातों को, बहुत हो लीं। जिसका कोई समाधान नहीं उसे बातों से नहीं सुधारा जा सकता।" उसने करवट ले ली, "आहा! देखो एक छोटी सी चींटी एक अधमरी मक्खी को लिये जा रही है। खींचे चलो, नन्हें प्राणी, खींचे चलो। उनकी लाल फटकारने की चिन्ता मत करो। एक पशु होने के कारण करुणा की किसी भी भावना की अवहेलना कर अपने अधिकार का पूर्ण उपयोग करो—अपने आप हताश बने हुए प्राणियों की तरह नहीं।"

"तुम्हें तो यह कहते हुए तनिक भी शोभा नहीं देता इवजिनी! जब कि तुम हताश हो चुके हो!"

बजारोव ने सिर ऊपर उठाया।

"सिर्फ इसी बात का तो मुझे गर्व है। मैंने अपने को कभी नहीं टूटने दिया है और औरत तो मुझे कभी भी नहीं झुका सकती। आमीन! यह सब समाप्त हो चुका है। तुम मुझसे इस बारे में एक भी शब्द नहीं सुनोगे।"

वे दोनों कुछ देर तक चुपचाप लेटे रहे।

"हाँ," बजारोव ने कहना शुरू किया, "मनुष्य एक अद्भुत जानवर है। जब तुम हमारे पूर्वजों के उस एकान्त जीवन को, जो उन्होंने यहाँ बिताया है, दूर से देखते हो तो तुम्हें आश्चर्य होता है—कोई भी आदमी इससे ज्यादा और क्या चाह सकता है? खाओ, पीओ और यह समझो कि तुम्हारा हरेक काम उचित और बुद्धिमत्ता पूर्ण है। परन्तु नहीं, तुम निरुत्साहित हो उठते हो। तुम मनुष्यों पर हावी होना चाहते हो, केवल उन्हें झिड़कने के ही लिये सही—हाँ, उन पर हावी होना।"

"जीवन इस तरह बिताना चाहिये कि उसका प्रत्येक क्षण महत्व-पूर्ण बन जाय", आरकेडी गम्भीरता पूर्वक बोला।

"बिलकुल यही बात है। वह महत्व, यद्यपि जो कभी-कभी झूठा होता है, मधुर होता है और कोई व्यक्ति तुच्छता के साथ भी रह सकता है··· ··परन्तु यह छोटे मोटे संघर्ष हैं, तुच्छ···यही तो मुसीबत है।"

छोटे मोटे संघर्षों की तरफ अगर कोई ध्यान ही नहीं दे तो उनका अस्तित्व ही नहीं रह जाता।"

"हूँ···जो कुछ तुमने कहा वह साधारण विरोधात्मक बात है।"

"उँह? इस वाक्य से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"बिल्कुल यही, जैसे कि मिसाल के तौर पर यह कहना कि शिक्षा लाभदायक है, यह अनर्थक बात है, परन्तु यह कहना कि शिक्षा घातक है, यह साधारण विरोधात्मकता है। यह सुनने में तो अच्छा लगता है परन्तु वास्तव में इसका अर्थ वही होता है।"

"परन्तु सत्य किसमें है?"

"किसमें? मैं प्रतिध्वनि की तरह उत्तर दूँगा-किसमें?"

"आज तुम चिन्तित हो, इवजिनी।"

"सचमुच? शायद धूप की वजह से और साथ ही ज्यादा रसभरी खाना भी बहुत बुरा है।"

"ऐसी हालत में थोड़ा झपकी ले लेने के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?" आरकेडी ने पूछा।

"अच्छी बात है, परन्तु मेरी तरफ मत देखो···आमतौर से कोई आदमी जब ऊँघता होता है तो बेवकूफ दिखाई देता है।"

"क्या तुम इस बात की चिन्ता करते हो कि दूसरे तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं?"

"मैं नहीं जानता कि क्या कहूँ। एक सच्चे आदमी को चिन्ता नहीं करनी चाहिए। एक सच्चा आदमी वह है जिसके बारे में दूसरे सोचते ही नहीं। या तो उसकी आज्ञा का पालन होना चाहिए या उसे घृणा की जानी चाहिए।"

"अद्भुत! मैं किसी से भी घृणा नहीं करता," कुछ देर सोच कर आरकेडी ने कहा।

"और मैं बहुतों से घृणा करता हूँ। तुम एक कोमल हृदय, मीठे स्वभाव के व्यक्ति हो। तुम किसी से भी घृणा नहीं कर सके हो!··· तुम बहुत संकोची हो, तुममें पूर्ण आत्मविश्वास की कमी है।"

"और तुम," आरकेडी ने टोका, "पूर्ण आत्म विश्वासी हो, क्यों ? तुम अपने बारे में बड़ी ऊँची राय रखते हो, क्यों रखते हो न ?"

बजारोव ने तुरन्त ही जवाब नहीं दिया।

"जब मेरी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से होती है जो मेरे विरोध में अपने को स्थिर रख सके," उसने धीरे से कहा, "मैं अपने बारे में अपनी राय बदल दूँगा। घृणा ! क्यों मिसाल के तौर पर आज जब हम अपने सहकारी अमीन फिलिप की झोंपड़ी के सामने से गुजर रहे थे-यह बड़ी सुन्दर झोंपड़ी है—वहाँ तुमने कहा था उस समय रूस एक समृद्ध देश होगा जब यहां के प्रत्येक किसान के पास रहने के लिए ऐसा ही घर होगा और हम में से हरेक को उस समय को लाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए···परन्तु मैं उन तुच्छ नीच किसानों से नफरत करता हूँ—उस फिलिप और सीदोर और उन जैसे सभी से जिनके लिए मुझसे यह आशा की जाती है कि मैं मेहनत करूँ, अपने को थका डालूँ बिना धन्यवाद का एक शब्द प्राप्त किए ही···और फिर मुझे उसके धन्यवाद की जरूरत ही किस लिए है। ठीक है, क्या हो अगर वह एक सफेद झोंपड़ी में रहे जब कि मैं केंचुओं को चुगाता फिरूँ—तब क्या होगा ?"

"ओह, होश की बातें करो इवजिनी···तुम्हारी आज की बातें सुनकर कोई भी उन लोगों से सहमत हो सकता है जो हमारे ऊपर यह आरोप लगाते हैं कि हमारे पास सिद्धान्त नहीं हैं।"

"तुम अपने चाचा की तरह बातें करते हो। साधारणतः कहा जाय तो सिद्धान्त हैं ही नहीं—बड़ा ताज्जुब है कि तुम अभी तक इस बात को नहीं समझ पाए हो !—केवल चेतन भावनाएं होती हैं। सब कुछ उन्हीं पर निर्भर करता है।"

"तुम इस निष्कर्ष पर कैसे पहुँचे ?"

"बिल्कुल साधारण सी बात है। मिसाल के लिए मुझे ही ले लो मेरी प्रवृत्ति नकारात्मक है-बिल्कुल चेतन भावनाएं। मैं नकारात्मकता को स्वीकार करता हूँ। मेरे मस्तिष्क का निर्माण ही इस प्रकार है। मुझे

रसायनिक शास्त्र क्यों पसन्द है ? तुम सेब क्यों पसन्द करते हो ? यह सब भावना पर निर्भर करता है। यह सब एक ही है। इससे और अधिक गहराई में मनुष्य कभी नहीं जा सकेगा। हरेक व्यक्ति तुम्हें यह नहीं बताएगा और मैं भी तुम्हें यह बताने की गलती दुबारा नहीं करूँगा।"

"अच्छा, तो ईमानदारी भी एक भावना है ?"

"बिल्कुल !"

"इवजिनी !" आरकेडी क्रुद्ध हो उठा।

"यह ? क्या है ? तुम्हें यह पसन्द नहीं ?" बजारोव ने टोकते हुए कहा। "नहीं, साहब ! अगर एक बार तुमने हर बात का विरोध ही करने का निर्णय कर लिया है तो उसके लिए पूर्ण ताकत लगानी पड़ेगी। लेकिन यह सब दर्शन की बातें होंगी। पुश्किन ने कहा था कि प्रकृति निद्रा की शान्ति का दान करती है।"

"उसने इस प्रकार की बात कभी नहीं कही थी।" आरकेडी ने विरोध किया।

"अच्छा, अगर उसने नहीं कही थी तो एक कवि होने के नाते कह सकता था और कहना चाहिए था। शायद, उसने फौज में नौकरी की थी।"

"पुश्किन कभी भी सैनिक नहीं रहा था।"

"मगर, प्यारे दोस्त, लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर उसने लिखा है—'युद्ध में चलो, रूस की सम्मान रक्षा के लिए,।"

"तुम तो मजाक कर रहे हो। दरअसल, यह बदनाम करने का विषय नहीं है।"

"बदनामी ? तुम मुझे इस शब्द से भयभीत करने की कोशिश मत करो ! चाहे जितना भी हम किसी को बदनाम करें, वह दरअसल उससे बीस गुना अधिक इसका पात्र होता है।"

"अच्छा हो कि हम लोग अब सोने चलें !" आरकेडी ने क्षुब्ध होकर कहा।

"बहुत खुशी के साथ," बजारोव ने कटुता से उत्तर दिया।

मगर दोनों में से कोई भी नहीं सो सका। दोनों युवकों के हृदय में एक ऐसी भावना भर रही थी जो घृणा से मिलती जुलती होती है। पाँच मिनट बाद उन्होंने आँखें खोली और चुपचाप एक दूसरे को देखा।

"देखो," आरकेडी ने अचानक कहा, "मैपल वृक्ष की एक सूखी पत्ती जमीन पर लड़खड़ाती हुई गिर रही है। इसकी गति बिल्कुल तितली के उड़ने की सी है। यह आश्चर्य की बात नहीं? एक चीज जो इतनी निर्जीव और उदासी से भरी हुई है एक ऐसी चीज के समान प्रतीत होती है जो जीवित और प्रसन्न है।"

"ओह, मेरे दोस्त आरकेडी निकोलाइच!" बजारोव बोला, "मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ–अलंकारिक भाषा में मत बोलो।"

"मैं जितनी अच्छी तरह बोल सकता हूँ, बोलता हूँ ...यह पूरी निरंकुशता है, अगर तुम जानना ही चाहते हो। अगर मेरे दिमाग में कोई विचार उठा तो मैं उसे व्यक्त क्यों न करूँ?"

"अच्छी बात है, लेकिन मैं अपने विचारों को व्यक्त क्यों न करूँ। मेरा यह विश्वास है कि अलंकारिक भाषा में बात करना अनुचित और अशोभनीय है।"

"तो शोभनीय क्या है? कसम खाना?"

"आह! मैं देखता हूँ कि तुमने अपने चाचा के कदमों पर चलने का निश्चय कर लिया है। वह बेवकूफ इस बात को सुन कर कितना खुश होगा।"

"तुमने पावेल पेट्रोविच के लिए किस शब्द का प्रयोग किया?"

"मैंने उसके लिए ठीक शब्द का प्रयोग किया है–एक बेवकूफ।"

"लेकिन यह बर्दाश्त के काबिल नहीं।" आरकेडी ने जोर से कहा।

"आहा! खून का जोश आ गया न," बजारोव शान्ति पूर्वक बोला। "मैंने यह देखा है कि आदमियों में यह भावना बड़ी प्रबल होती है। मनुष्य हर चीज का त्याग करने और प्रत्येक पूर्वाग्रह को छोड़ने को तैयार हो जाता है। परन्तु यह स्वीकार करना कि—मिसाल

के तौर पर—उसका भाई, जो दूसरों का रूमाल चुराता है, एक चोर है, उसकी सहन शक्ति से परे है। सचमुच, मेरा भाई, मेरा है—वह प्रतिभाशाली नहीं है? यह कैसे हो सकता है?"

"यह साधारण सी न्याय की बात थी जिसने मुझे कहने को मजबूर किया। इसमें रक्त-सम्बन्ध की भावना कहीं भी नहीं है।" आरकेडी ने झुंझला कर जवाब दिया। "लेकिन जब तुम उसे समझ ही नहीं पाते क्योंकि तुममें अनुभूति है ही नहीं, तुम इसका न्याय नहीं कर सकते।"

"दूसरे शब्दों में—आरकेडी किरसानोव इतने प्रखर मस्तिष्क वाला है कि मैं उसे समझ नही पाता। मैं तुम्हारे सामने घुटने झुकाता हूँ और अब कुछ भी नहीं कहूंगा।"

"छोड़ो इवजिनी, हम लोग झगड़ा करके इसे समाप्त करेंगे।"

"मेरा कहना यह है आरकेडी कि एक बार हम लोगों में अच्छी तरह झगड़ा हो ले—हमें इसके लिए पूरी तरह लड़ना चाहिए, भले ही जान क्यों न चली जाय।"

"हम इसका फैसला······"

"हाथापाई द्वारा करेंगे?" बजारोव उत्सुक होकर बोल उठा, "क्यों क्या इरादा है? यहीं, इस घास पर, इस सुन्दर वातावरण में, दुनियाँ से दूर और मनुष्यों की निगाह से परे—बुरा ख्याल तो नहीं मालूम होता। परन्तु तुम्हारा मेरा कोई मुकाबला नहीं। मैं तुम्हारी गर्दन पकड़ कर······"

बजारोव ने अपनी लम्बी तीखी उँगलियाँ फैलाईं··· आरकेडी मुड़ा और आत्मरक्षा की भावना से खड़ा हो गया—जैसे मजाक हो··· परन्तु उसे अपने मित्र का चेहरा बड़ा भयानक लगा। उसके होंठ घृणा से सिकुड़े हुए थे और उसकी चमकती आँखों में ऐसी कटुता भर रही थी कि आरकेडी भय से संकुचित हो उठा······

"आह! अच्छा तो तुम यहाँ छिपे हुए हो!" उसी क्षण वासिली इवानिच की आवाज सुनाई पड़ी और बूढ़ा फौजी डाक्टर घर की बुनी

हुई जाकेट और उसी तरह घर का बना हुआ फूस का टोप पहने हुए उन दोनों युवकों के सामने आ खड़ा हुआ। "और मैं तुम्हें चारों ओर ढूंढ़ता फिर रहा था······तुमने बहुत सुन्दर जगह छाँटी है और वैसा ही अच्छा काम। 'जमीन' पर लेट कर 'आसमान' की ओर देखना···तुम जानते हो इसमें कोई विशेषता है ?"

"मैं आसमान की तरफ सिर्फ उस वक्त देखता हूँ जब मुझे छींकना होता है", बजारोव घुर्राया, और आरकेडी की तरफ मुड़ते हुए धीमी आवाज में बोला, "बड़ा दुःख है कि इन्होंने आकर बाधा डाल दी।"

"तुम आगे बढ़ो", आरकेडी फुसफुसाया और उसने चोरी से अपने दोस्त का हाथ दबाया, "परन्तु इस तरह के झगड़ों से दोस्ती ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रह सकती।"

"जब मैं तुम दोनों युवक मित्रों को देखता हूँ", वासिली इवानिच कहता गया। वह अपना सिर हिलाते हुए और एक तुर्क के सिर वाली स्वनिर्मित, होश्यारी से बनाई हुई चक्करदार छड़ी की मूठ पर अपने दोनों हाथ रखे हुए बोला, "इससे मेरे दिल को बड़ी तसल्ली मिलती है। तुम लोगों में कैसा उत्साह है, कैसी योग्यता है, कैसी प्रतिभा है !—जवानी पूरे जोश पर है ! बिल्कुल—केस्टर और पोलक्स !"

"सुनो तो जरा–यह पौराणिक गाथाओं की फुलझड़ी !" बजारोव बोला, "कोई भी आदमी फौरन ही बता सकता है कि अपने समय में तुम लैटिन के बड़े अच्छे विद्वान थे ! मुझे यकीन है कि तुम्हें कविता के लिए मैडिल मिला होगा, क्यों मिला था न ?"

"डिआस्क्यूरी, डिआस्क्यूरी !" वासिली इवानिच ने दुहराया।

"बस कीजिए पिताजी, बहुत गुटरगूँ हो ली।"

"ऐसी चाँदनी में एक बार ऐसा करना बुरा नहीं होता", वृद्ध बुदबुदाया, "परन्तु महाशयो मैं तुम लोगों को ढूँढ़ता फिर रहा था, तुम्हारी तारीफ करने के लिए परन्तु यह सूचना देने के लिए जिसमें से पहली तो यह है कि हम लोग जल्दी ही खाना खायेंगे और दूसरी यह कि मैं तुम्हें आगाह कर देना चाहता था, इवजिनी······तुम एक चतुर

मनुष्य हो, तुम आदमियों को परखना जानते हो और औरतों को भी और इसलिए तुम्हें सहनशीलता का रुख अपनाना चाहिये······तुम्हारी माँ तुम्हारे घर लौटने की खुशी में प्रार्थना करना चाहती थी। यह मत सोचना कि मैं तुम्हें भी उस प्रार्थना में शामिल होने के लिए कह रहा हूँ। वह तो हो भी गई परन्तु फादर अलेक्सी···"

"वह पादरी ?"

"हाँ, वह पादरी; वह··· हम लोगों के साथ खाना खाने आ रहा है···मुझे इस बात का पता नहीं था और असलियत तो यह है कि मैं इसके खिलाफ था···मगर फिर भी किसी तरह यह हो ही गया···वह मेरा मतलब नहीं समझ सका·· खैर एरीना व्लासीएव्ना···फिर भी वह एक अच्छा और समझदार आदमी है।"

"वह खाने के समय मेरा हिस्सा तो नहीं खा जायगा, इसका विश्वास है न ?" बजारोव ने पूछा।

वासिली इवानिच खिलखिला कर हँस उठा।

"हे भगवान्! अब तुम इससे आगे और क्या कहने जा रहे हो।"

"तब मेरे लिए इतना ठीक है। मैं खाने की मेज पर किसी के भी साथ बैठ जाऊँगा।"

वासिली इवानिच ने अपना टोप ठीक किया।

"मुझे विश्वास था कि तुम सम्पूर्ण दुराग्रहों से बहुत ऊपर हो। मुझे देखो, मैं एक बुड्ढा आदमी हूँ—लगभग बासठ वर्ष का और मेरे मन में कोई दुराग्रह या हठ नहीं है। (वासिली इवानिच में इस बात को स्वीकार करने का साहस नहीं था कि वह यह प्रार्थना स्वयं करना चाहता था। वह भी अपनी स्त्री से कम धार्मिक नहीं था।)" और फादर अलेक्सी तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। तुम देखना कि तुम्हें वह पसन्द आएगा। वह ताश खेलने का विरोधी नहीं है और—यह बात हम तुम तक ही रहे···वह पाइप भी पीता है।"

"अच्छी बात है। हम लोग खाना खाने के बाद ताश खेलेंगे और उसमें मैं उसे हराऊँगा।"

"ही-ही-ही, हम देखेंगे ! अपने मेजबान के बिना ही फैसला मत कर डालो।"

"क्यों ? अपनी जवानी की याद आ रही है ?" बजारोव ने अद्भुत रूप से बल देते हुए पूछा।

वासिली इवानिच के धूप से सांवले पड़े हुए चेहरे पर हल्की लाली दौड़ गई !

"शर्म करो इवजिनी···बीती बातों को भूल जाओ। परन्तु मैं इन महाशय के सामने यह स्वीकार करने को तैयार हूँ कि अपनी जवानी में मेरे मन में उसके प्रति आकर्षण के भाव थे—हाँ, थे और उसका नतीजा भी भोगना पड़ा। परन्तु गर्मी ज्यादा नहीं है। मुझे अपने पास बैठने दो। मैं कोई बाधा तो नहीं डाल रहा, क्यों ?"

"कतई नहीं।" आरकेडी ने जवाब दिया।

वासिली इवानिच थोड़ा सा कराहता हुआ घास पर बैठ गया।

"महाशयो, तुम्हारा यह गद्दा", उसने कहना शुरू किया, "मुझे अपनी सेना के पड़ाव के दिनों की याद दिलाता है जब कि इसी तरह घास के ढेर के पास अस्पताल के तम्बू लगा करते थे और हम इसे अपना सौभाग्य समझते थे।" उसने गहरी सांस खींची। "हाँ, मैंने अपने समय में बहुत अनुभव किये हैं। मिसाल के तौर पर वह अद्भुत घटना घटी थी जब देसाराबिया में प्लेग फैली थी, अगर तुम पसन्द करो तो सुनाऊँ।"

"जिसके लिये आपको सन्त व्लाडीमीर का पदक मिला था ?" बजारोव बोल उठा। "हमने वह सुनी है·····अच्छा यह बताइये आप उसे लगाते क्यों नहीं ?"

"मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि मेरे मन में कोई दुराग्रह नहीं है", वासिली इवानिच बुदबुदाया—उसने कल ही अपने कोट से उस लाल फीते को हटा देने की आज्ञा दी थी—और प्लेग वाली घटना सुनाने को तैयार हो गया। "वह तो सो गया", उसने एकाएक मजाकिया ढङ्ग से आँखें नचाते हुए बजारोव की तरफ इशारा कर आरकेडी से फुसफुसाते हुए कहा। "इवजिनी ! उठो !" उसने आगे जोर से बोलते हुए कहा। "चलो खाना खाने चलें·· ···"

'इनके इस उच्छृंखल व्यवहार को देखते हुए" बजारोव ने आरकेडी को बताते हुए कहा, "और इनकी बातचीत के ढङ्ग से तुम यह बता सकते हो कि मेरे पिता के किसान अधिक दबे हुए नहीं हैं। वह देखो, वे खुद मकान की सीढ़ियों पर उतर कर आ रहे हैं। उन्होंने घंटियों की आवाज सुनी होगी। ये वही हैं—मैं उनके डील डौल को पहचानता हूँ। च'''च'''च उनके बाल ज्यादा सफेद हो गए हैं, बेचारे बुड्ढे आदमी।"

२०

बजारोव टमटम से बाहर झुका और आरकेडी ने अपने मित्र के पीठ पीछे से ऊँची गर्दन उठा कर झांकते हुए एक लम्बे आदमी को देखा—एक दुबले पतले, बिखरे हुए बालों और गरुड़ की सी सुन्दर नाक वाले आदमी को! वह एक पुराना फौजी कोट पहने हुए था जिसके बटन खुले हुए थे। वह अपनी टांगों को चौड़ाए मकान की बरसाती की सीढ़ियों पर खड़ा हुआ एक लम्बा पाइप पी रहा था और सूरज की चमक से बचने के लिए आंखें मिचमिचा रहा था।

घोड़े रुक गए।

"तुम आ ही गए आखिर," पाइप पीते हुए बजारोव के पिता ने कहा, यद्यपि ऐसा करते समय पाइप उनकी अंगुलियों के बीच खूब हिल रहा था।

"अच्छा, उतरो, उतर आओ, तुम्हें प्यार तो कर लूँ।"

उसने अपने पुत्र को आलिंगन में भर लिया।

"इवजिनी, प्यारे इवजिनी," एक स्त्री की कांपती हुई आवाज आई। दरवाजा पूरा खोल कर चमकीले रंगों की जाकेट और सफेद टोपी पहने हुए एक छोटी सी मोटी स्त्री चौखट पर आ खड़ी हुई। वह जोर से चीखी, लड़खड़ाई और सम्भवतः गिर पड़ती यदि बजारोव उसे सहारा न देता। उसकी मोटी छोटी सी बाहें तुरन्त उसकी गर्दन के चारों ओर लिपट गईं। उसका सिर बजारोव की छाती पर चिपका हुआ

था और चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता छा रही थी । केवल उसकी रह रह कर उठने वाली सिसकियाँ सुनाई पड़ रही थीं।

बजारोव का पिता बड़ी मुश्किल से गहरी सांसें लेता हुआ आँखों को जल्दी जल्दी सिकोड़ रहा था।

"बस, बस, आरिशा ! इतना काफी है," उसने आरकेडी की ओर देखते हुए कहा, जो गाड़ी के पास चुपचाप स्तब्ध खड़ा हुआ था। कोचवक्स पर बैठे हुए आदमी ने भी अपनी निगाहें फेर लीं, "दरअसल यह बिल्कुल बेकार है ! महरबानी करके इसे बन्द करो।"

"आह, वासिली इवानिच," बुढ़िया हकलाई, "देखो तो, कितनी मुद्दत बाद मैंने अपने प्यारे को देखा है–अपने प्यारे बच्चे को······" और बिना अपनी बाहें हटाए उसने आँसुओं से भरा हुआ, झुरीदार, लाल चेहरा पीछे हटा कर अपनी प्रसन्न और हँसती हुई सी आँखों से बेटे को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर उसकी गर्दन से चिपट गई।

"अच्छा, हाँ, वास्तव में, यह सब अत्यन्त स्वाभाविक है," वासिली इवानिच ने कहा, "परन्तु अच्छा हो कि हम लोग भीतर चलें। इवजिनी अपने साथ एक मेहमान को लाया है । माफ कीजिए," आरकेडी की ओर जरा सा घूम कर उसने कहा, "आप जानते ही हैं, यह औरतों की कमजोरी है, और वह भी माँ की······"

अब भी उसके अपने होठ और भौंहें सिकुड़ी हुई थीं तथा ठुड्डी कांप रही थी······स्पष्टतः वह अपनी भावनाओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था और इन बातों से पूर्णतः निरपेक्ष दिखा रहा था। आरकेडी उसके प्रति सम्मानपूर्वक झुका।

"चलो माँ, अन्दर चलें," बजारोव ने कहा और भावावेश से कांपती हुई वृद्धा को घर के भीतर ले चला। उसे एक आराम कुर्सी में बैठा कर, उसने एक बार पुनः अपने पिता का जल्दी से आलिङ्गन किया और आरकेडी का परिचय कराया।

"आपसे परिचय प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई", वासिली इवानिच बोला, "जो कुछ हमारे पास है आपके स्वागत के लिये प्रस्तुत है। हम

सादा जीवन बिताते हैं—सिपाहियों की तरह । एरीना व्लासीयेव्ना, अपने को शान्त करो; तुम्हें इतना भावुक नहीं होना चाहिये । यह महाशय तुम्हारे बारे में क्या सोचेंगे ।

"प्रिय महोदय," आँसुओं से भरे मुख से हकलाते हुए बुढ़िया ने कहा—"मुझे आपका नाम जानने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हो सका है···"

"आरकेडी निकोलायच," वासिली इवानिच ने तुरन्त ही धीमी आवाज में गम्भीरता पूर्वक कहा ।

"क्षमा कीजिये, मैं भी कैसी मूर्ख हूँ", बुढ़िया ने नाक साफ की और अपना सिर पहले एक तरफ फिर दूसरी तरफ झुकाते हुए सावधानी पूर्वक बारी-बारी से अपने आँसू पोंछ लिये । "महरबानी करके माफ कीजिये । सचमुच, मैंने तो यह सोचा था कि अपने प्यारे बेटे को देखे बिना मैं मर जाऊँगी ।"

"खैर, अब तो तुम्हें तुम्हारा बेटा मिल गया," वासिली इवानिच बोला । "तान्या", नंगे पैरों, लाल रंग की एक सूती फ्राक पहने, एक तेरह वर्ष की लड़की को, जो सहमी हुई सी दरवाजे के पीछे से झाँक रही थी, पुकार कर कहा, "अपनी मालकिन के लिये एक ग्लास पानी लाओ—ट्रे पर रख कर, समझी ? और महाशयो, आप लोग", उसने बुजुर्गाना मसखरेपन से आगे कहा, "कृपा करके एक अवकाश प्राप्त वृद्ध के अध्ययन कक्ष में पधारिये ।"

प्यारे इवजिनी, मुझे बस एक चुम्बन और दो", एरीना व्लासएव्ना बुदबुदाई । बजारोव उसके ऊपर झुक गया, "ओह, तुम बढ़ कर कितने सुन्दर हो गये हो !"

"अच्छा, सुन्दर है या नहीं", वासिली इवानिच ने राय प्रकट की, "परन्तु वह आदमी है, जैसी कि कहावत है—'एक मर्द का बच्चा' । और अब, एरीना व्लासएव्ना, मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे मातृ हृदय को अब जब कि पूरी तृप्ति हो गई होगी, तुम उनका पेट भरने का प्रयत्न करोगी, क्योंकि तुम जानती हो मीठी बातों से पेट नहीं भरा करता ।"

बुढ़िया अपनी आरामकुर्सी छोड़ कर उठ खड़ी हुई । "अभी लीजिये, वासिली इवानिच—अभी मेज तैयार हुई जाती है। मैं खुद रसोई में जाकर इन्तजाम करती हूँ और फौरन समोवार तैयार होता है। मैं सब चीज का इन्तजाम करूँगी। तीन साल बाद आज मैंने उसे देखा है और उसकी जरूरतों की तरफ ध्यान दिया है, तुम कल्पना कर सकते हो?"

"शाबाश, शाबाश, मेरी प्यारी मेजबान, जल्दी इन्तजाम करो परन्तु इस बात का ध्यान रखना कि हमें शर्मिन्दा न होना पड़े। और आप महाशयो, मेरे साथ आइये। आह, देखो, टिमोफिच तुम्हें सलाम करने आया है, इवजिनी। देखो वह खुशी से फटा पड़ रहा है, बेचारा बुड्ढा। क्यों, बुड्ढ़ऊ, खुश नहीं हो क्या? महरबानी कर इधर आओ।"

और वासिली इवानिच अपनी पुरानी चप्पलों को फटफटाता हुआ आगे बढ़ा।

× × ×

उसके पूरे घर में छः छोटे-छोटे कमरे थे। वह, जिसमें वह अपने मेहमानों को लाया, अध्ययन कक्ष कहलाता था।

एक भारी पायों वाली मेज, जिस पर कागज बिखरे पड़े थे और जो मुद्दतों से पड़ती चली आई धूल की वजह से बिल्कुल काली सी हो रही थी, दो खिड़कियों की बीच वाली जगह में दीवाल की पूरी लम्बाई के साथ लगी हुई थी। दीवालों पर तुर्की हथियार, घुड़सवारी के चाबुक, एक तलवार, दो नक्शे, कुछ चीर फाड़ सम्बन्धी चार्ट, हूफलैन्ड का एक चित्र, काले चौखटे में जड़ा हुआ, बालों की मदद से बुना गया एक मोनोग्राम (अनेक अक्षरों के मेल से बना हुआ एक अक्षर), शीशे में जड़ा हुआ एक डिप्लोमा, चमड़े से मढ़ा हुआ एक सोफा जो जगह-जगह से फटा हुआ था, और कैरोलिना में उत्पन्न होने वाले भोजपत्र वृक्षों की लकड़ी से बने हुए दो बड़ी किताबें रखने वाले रैक जिनके खानों में किताबें, छोटे-छोटे डिब्बे, भूसा भरी हुई चिड़ियायें, अमृतवान और काँच का सामान भरा हुआ था, रखे हुए थे। एक कोने में एक टूटी हुई बिजली की मशीन रखी हुई थी।

"मेरे प्यारे मेहमानो, मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था", वासिली इवानिच ने कहना शुरू किया, "कि हम यहाँ, कहना चाहिये कि—उसी तरह रहते हैं जैसे कि किसी पड़ाव में रहा जाता है······"

"मेहरबानी करके चुप रहें। आप क्षमा किस बात के लिये मांग रहे हैं?" बजारोव टोकते हुए बोला, "किरसानोव अच्छी तरह जानता है कि हम पैसे वाले नहीं हैं और यह कि आपका मकान महल नहीं है। अब सवाल यह है कि इन्हें ठहराया कहाँ जायगा?"

"क्यों, इवजिनी, बगल के हिस्से में एक छोटा सा सुन्दर कमरा है, तुम्हारा मित्र उसमें आराम से रहेगा।"

"तो आपने एक नया हिस्सा और बनवा लिया है?"

"हाँ, साहब, जहाँ पर स्नान घर है, वहाँ", टिमोफिच बोला।

"मतलब यह कि स्नान घर के बगल में", वासिली इवानिच जल्दी से बोला, "अब गर्मियाँ आ गई हैं ···· मैं जल्दी जाकर उसे ठीक कराये देता हूँ,और तुम टिमोफिच,तब तक इन लोगों का सामान ले आओ। इवजिनी, तुम मेरे अध्ययन कक्ष में रहोगे। चलो, जल्दी करो।"

"यह बात है! देखा आरकेडी, ये कैसे सीधे आदमी हैं", जैसे ही वासिली इवानिच ने कमरा छोड़ा, बजारोव बोला। ये भी तुम्हारे पिता की तरह थोड़े से झक्की और मौजी स्वभाव के हैं परन्तु दूसरी तरह के। ये बहुत बातूनी भी हैं।"

"और मैं सोचता हूँ कि तुम्हारी माँ बड़ी अद्भुत स्त्री हैं", आरकेडी ने कहा।

"हाँ, वे बड़ी सीधी और निष्कपट हैं। तुम देखोगे कि वे हमारे लिये कितना अच्छा खाना बनाती हैं।"

"हम लोग आज आपके आने की आशा नहीं करते थे, साहब और इसीलिये गोश्त नहीं मंगाया गया", टिमोफिच बोला जो अभी बजारोव का सूटकेस लेकर आया था।

"हम बिना गोश्त के काम चला लेंगे। नहीं है तो न सही। कहावत है कि गरीबी अपराध नहीं है।"

"तुम्हारे पिता के कितने काश्तकार हैं ?" अचानक आरकेडी पूछ बैठा।

"यह जायदाद उनकी नहीं है, माँ की है। जहाँ तक मेरा अनुमान है पन्द्रह काश्तकार हैं।"

"जी नहीं, कुल मिला कर बाईस हैं", नाराज होते हुए टिमोफिच बोल उठा।

चप्पलों की फटफटाहट सुनाई दी और वासिली इवानिच पुनः दिखाई दिया।

"आपका कमरा कुछ ही देर में ठीक हो जायगा," उसने गंभीरता पूर्वक कहा। "आरकेडी निकोलाइच ?—क्यों मेरा उच्चारण ठीक है न ? और यह आपका नौकर है," उसने एक लड़के की तरफ इशारा करते हुए कहा जिसके सिर के बाल बहुत छोटे थे और जो कुहनियों पर से फटी हुई एक नीली कमीज और किसी दूसरे के बूट पहने हुए था। "इसका नाम फेदुया है। मुझे यह कहने की दुबारा इजाजत दीजिए—यद्यपि मेरा बेटा इसे पसन्द नहीं करेगा-कि हम इससे अच्छा इन्तजाम नहीं कर सकते। यह पाइप भी भर देगा। आप तम्बाकू पीते हैं, क्यो पीते हैं न ?"

"मैं ज्यादातर सिगार पीता हूँ," आरकेडी ने जवाब दिया।

"यह बहुत अच्छा है। मुझे भी सिगार ही ज्यादा अच्छी लगती है, परन्तु शहर से दूर इन इलाकों में इसका मिलना बहुत मुश्किल होता है।"

"अच्छा, अब अपनी गरीबी का रोना बन्द कीजिये," बजारोव ने एक बार फिर टोका। "अच्छा हो कि आप इस सोफा पर बैठ जांय जिससे हम लोग आपको अच्छी तरह देख सकें।"

वासिली इवानिच ने मुँह बनाया और बैठ गया। उसकी आकृति अपने बेटे से आश्चर्यजनक ढङ्ग से मिलती थी। अन्तर केवल इतना ही था कि उसका माथा इतना ऊँचा और चौड़ा नहीं था। उसके

चेहरा अधिक उदार लगता था और वह बराबर इस तरह बेचैन सा होकर हिल डोल रहा था जैसे उसके कपड़े बगल में बहुत तंग हों। साथ ही उसने आँखें मिचकाईं, गला साफ किया और उङ्गलियाँ मरोड़ीं जब कि बजारोव एक विरक्ति पूर्ण स्थिरता धारण किए हुए था।

"गरीबी का रोना रोना!" वासिली इवनिच ने दुहराया। "यह मत सोचो, इवजनी कि मैं अपने मेहमान को प्रभावित करना चाहता हूँ, कहना चाहिए कि दया दिखाने के लिए उत्तेजित करना चाहता हूँ कि हम लोग कैसे दैव द्वारा उपेक्षित स्थान पर रहते हैं। इसके विपरीत, मेरी तो यह राय है कि एक क्रियाशील व्यक्ति के लिए कोई भी स्थान दैव द्वारा उपेक्षित नहीं है। हर हालत में मैं इस बात का प्रयत्न करता हूँ कि निष्क्रिय न बनूँ और समय से हमेशा आगे रहूँ।"

वासिली इवानिच ने अपनी जेब से एक नारङ्गी के रङ्ग का नया रूमाल निकाला, जिसे वह आरकेडी के कमरे में आते समय उठा लाया था, और बैठा बैठा उसे हिलाता रहा।

"मैं इस तथ्य के विषय में कुछ भी नहीं कहूँगा, मिसाल के लिए, जैसे मैंने अपनी बहुत हानि सह कर भी अपने किसानों को जमीन आध बटाई पर दे रखी है। मैं इसे अपना कर्त्तव्य समझता हूँ और बहुत ही न्याय संगत कर्त्तव्य यद्यपि दूसरे जमीदार इसका स्वप्न भी नहीं देखते। मैं विज्ञान और शिक्षा का पक्षपाती हूँ।"

"हाँ, मैं देखता हूँ कि आपके पास सन् १८५५ में प्रकाशित 'स्वास्थ्य बन्धु' की प्रति मौजूद है।" बजारोव ने कहा।

"मेरा एक दोस्त पुरानी दोस्ती के ख्याल से इसे मेरे पास भेज देता है," वासिली इवनिच जल्दी से बोल उठा; "परन्तु हमारे अपने भी कुछ विचार हैं, मिसाल के लिए, मस्तिष्क विज्ञान के विषय में" उसने आगे कहा। यह बात वह विशेष रूप से आरकेडी के लाभार्थ कह रहा था और एक आल्मारी के ऊपर रखे हुए एक मस्तिष्क के ढाँचे की ओर इशारा कर रहा था जिस पर चतुष्कोण चित्रित कर उन पर अङ्क

लगाये गये थे। "हम लोग शैनलीन* या राडमेशर+ से भी अपरिचित नहीं हैं।"

"क्या इस प्रान्त में अब भी राडमेशर के सिद्धान्तों में विश्वास किया जाता है?" बजारोव ने पूछा।

वासिली इवानिच ने खाँसा।

"ऐं—इस प्रान्त में...दरअसल, तुम लोग ज्यादा जानते हो, तुम लोग हम लोगों से बहुत आगे हो। आखिरकार हमारे उत्तराधिकारी जो ठहरे। हमारे जमाने में हौफमैन जैसे निदान शास्त्री या जीवनी-शक्ति के तत्व वेत्ता ब्राऊन जैसे व्यक्ति वाहियात समझे जाते थे। फिर भी कोई युग था जब इन लोगों ने एक नई हलचल पैदा कर दी थी। तुम लोगों ने एक नए व्यक्ति को प्रामाणिक मान लिया है जिसने राडमेशर को अपदस्थ कर रखा है और तुम उसे सम्मान देते हो, परन्तु बीस साल बाद, सम्भव है, वह भी वाहियात लगने लगे।"

"आपकी तसल्ली के लिए आपको एक खबर सुनाता हूँ," बजारोव बोला, "कि आमतौर पर हम लोग दवाइयों को वाहियात समझते हैं और किसी के प्रति भी श्रद्धा नहीं रखते।"

"तुम्हारा मतलब क्या है? परन्तु तुम तो एक डाक्टर बनने जा रहे हो न?"

"हाँ, लेकिन उससे कोई अर्थ तो नहीं निकलता।"

वासिली इवानिच ने अपनी बीच की उंगली द्वारा अपने पाइप की गरम राख दबाई।

"अच्छा, हो सकता है, हो सकता है, मैं बहस नहीं करूँगा। आखिर मैं हूँ ही क्या? एक पेंशन याफ्ता फौजी डाक्टर और अब खेती करने लगा हूँ। मैंने आपके बाबा की फौजी टुकड़ी में नौकरी की थी," उसने एक बार फिर आरकेडी को सम्बोधन करते हुए कहा।

* जान लुका शैनलीन (१७९३-१८६४ ई०) एक प्रसिद्ध जर्मन चिकित्सक।

+ राडमेशर एक प्रसिद्ध जर्मन चिकित्सा शास्त्री।

"हाँ, साहब, मैंने अपने समय में थोड़ा बहुत देखा है। हर समाज में रहा हूँ और हर तरह के आदमियों को जाना है। इस आदमी को जिसे आप अपने सामने देख रहे हैं—हाँ मैंने, प्रिंस विटगेन्स्टीन और कवि जुकोवस्की जैसे व्यक्तियों की नब्ज देखी है। जहाँ तक दक्षिणी फौज के आदमियों का सवाल है, जो तुम जानते हो चौदह दिसम्बर की घटनाओं में शामिल थे" (इस स्थान पर वासिली इवानिच ने विशेष भाव से अपने होंठ चाटे)—"मैं उनमें से हरेक को जानता हूँ। हालांकि इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था। मेरा काम तो सिर्फ चीरफाड़ करने का था। इससे अधिक नहीं। मगर तुम्हारे बाबा बहुत ही इज्जतदार आदमी थे, एक सच्चे सिपाही।"

"अच्छा, आप इस बात को स्वीकार करिए कि वे एक बेवकूफ आदमी थे," बजारोव उदासीनता पूर्वक बोला।

"हे भगवान, इवजिनी तुम कैसी भाषा का प्रयोग कर रहे हो। सचमुच······दरअसल, जनरल किरसानोव ऐसे लोगों में से नहीं थे जो······"

"जाने भी दीजिये इस बात को," बजारोव बोल उठा, "यहाँ आते हुए मुझे यह देख कर बहुत सन्तोष हुआ था कि आपका भोजपत्र के पेड़ों का झुंड कैसा बढ़ रहा है।"

वासिली इवानिच प्रसन्न हो उठा।

"और तुम देखोगे कि अब मेरे पास कितना सुन्दर बाग है। हरेक पेड़ मैंने अपने हाथों से लगाया है। उसमें फल, बेर और हर तरह की जड़ी बूटियाँ हैं। तुम युवक लोग जो चाहो सो कह सकते हो परन्तु पैरासिल्सस ने पवित्र सत्य का उच्चारण किया था, जब उसने कहा था: जड़ी बूटी और पत्थर में भी गुण होते हैं। मैंने अपनी प्रेक्टिस छोड़ दी है जैसा कि तुम जानते हो परन्तु हफ्ते में एक या दो बार उसका स्तैमाल करना ही पड़ता है। लोग सलाह पूछने के लिए आते हैं और उस समय तुम उन्हें दुत्कार नहीं सकते। कभी-कभी कोई भिखारी आ टपकता है और अपना इलाज करने की प्रार्थना

करता है। यहाँ आसपास कोई भी डाक्टर नहीं है। तुम यकीन करोगे कि हमारा एक पड़ोसी, जो फौज का रिटायर्ड मेजर है, भी डाक्टरी करता है। मैंने एक बार किसी से पूछा था कि क्या उसने कभी डाक्टरी पढ़ी है। नहीं, उन लोगों ने कहा, उसने नहीं पढ़ी है, वह तो यह काम केवल खैरात के लिए करता है······हां! हां! खैरात के लिए? उहुँ? कैसी बढ़िया बात है? हा हा! हा हा!"

"फेदूया, मेरा पाइप भरो," बजारोव ने तीखी आवाज में कहा।

"या एक और डाक्टर की बात सुनिए जो इन हिस्सों में मरीज देखने आता है," वासिली इवानिच हताश सा होकर जल्दी से बोला, "और उसे पता चलता है कि वह मरीज अपने पुरखों के पास चला गया है। नौकर उसे भीतर भी नहीं घुसने देता-यह कहते हुए कि अब उसकी कोई जरूरत नहीं है। डाक्टर को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य होता है। इस बात की आशा न करते हुए वह पूछता है: 'मुझे यह बताओ कि मरने से पहले तुम्हारे मालिक ने हिचकी ली थी?'—'हाँ, साहब।'—'और क्या उसने अधिक हिचकियाँ ली थीं?'—'बहुत अधिक।'—'ओह, खूब, यह अच्छी बात है।' और चला गया। हा-हा-हा!"

बुड्ढा अकेला ही हंसा। आरकेडी ने मुँह पर मुस्कान लाने का प्रयत्न किया। बजारोव ने सिर्फ अपने पाइप का जोर से कश खींचा। एक घन्टे तक इस तरह बातें होती रहीं। इसी बीच आरकेडी अपने कमरे में जा चुका था जो स्नानघर के ही बगल का एक कमरा साबित हुआ परन्तु था साफ और आरामदेह। अन्त में तान्या भीतर आई और खाना तैयार होने की सूचना दी।

पहले वासिली इवानिच उठा।

"चलिए महाशयो! अगर मैंने आप लोगों को परेशान किया हो तो उसके लिए क्षमा चाहता हूँ। शायद मालकिन अच्छा स्वागत करेंगी।"

भोजन यद्यपि जल्दी में बनाया गया था तो भी बहुत स्वादिष्ट बना था और अनेक प्रकार का भी था। केवल शराब अच्छी और काफी नहीं थी। वह स्पेन की बनी हुई सफेद शराब थी जिसका रंग लगभग काला पड़ चुका था तथा जिसे टिमोफिच ने शहर के अपनी जान-पहचान के एक शराब बेचने वाले से खरीदा था। इसमें ताँबे या राल की सी तीव्र गन्ध आ रही थी और मक्खियाँ भी बहुत परेशान कर रही थीं। आमतौर पर मक्खियाँ उड़ाने का काम एक लड़का किया करता था जो एक बड़ी हरी डाल हिला हिला कर उन्हें उड़ाता रहता था परन्तु आज वासिली इवानिच ने इस भय से कि कहीं यह नई पीढ़ी निन्दा न करने लगे उसे हटा दिया था। एरीना व्लासीएव्ना ने इसी बीच में अपने को सजा लिया था। वह रेशमी फीते की साधारण सी टोपी पहने हुई थी और आसमानी रङ्ग का एक कढ़ा हुआ शाल ओढ़ रखा था। वह अपने प्यारे इवजिनी को देख कर एक बार फिर थोड़ी सी रोई परन्तु अपने पति द्वारा झिड़के जाने के पहले ही उसने जल्दी से अपने आँसू पोछ लिए जिससे उसका शाल गीला न हो जाय। युवकों ने अकेले ही खाना खाया क्योंकि मेजमान लोग पहले ही खा चुके थे। फेद्या उनकी सेवा कर रहा था जिसके बड़े बूट उसे बेहद परेशान कर रहे थे। एनफिशुश्का नाम की एक औरत जिसका चेहरा मर्दाना एवं एक आँख गायब थी, उसकी मदद कर रही थी। यह औरत अकेली ही घर गृहस्थी का काम सम्हालती, मुर्गियों की देखभाल करती और कपड़े धोती थी। जब तक वे लोग खाना खाते रहे वासिली इवानिच निरन्तर कमरे में इधर से उधर चहलकदमी करता रहा। वह आज अद्भुत रूप से प्रसन्न दिखाई पड़ रहा था और नेपोलियन की नीति और इटली की अराजकता के विषय में अपने गम्भीर सन्देहों को व्यक्त कर रहा था। एरीना व्लासीएव्ना ने आरकेडी की मौजूदगी पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसका सम्मान भी नहीं किया। वह अपनी छोटी कलाई अपने गोल चेहरे पर रखे हुए बैठी रही जिस पर फूली हुई चेरी के से रङ्ग के होंठ और उसके गालों और भौंहों के ऊपर

वाले तिलों से एक दयालुता का भाव प्रकट हो रहा था। उसने एक क्षण के लिए भी अपने बेटे पर से अपनी निगाह नहीं हटाई और बराबर गहरी सांसें लेती रही। वह यह जानने के लिए मरी जा रही थी कि वह यहाँ कितने दिन तक ठहरेगा पर उससे पूछते हुए डरती थी। "कहीं वह यह न कह दे कि दो दिन," उसने डूबते हुए मन से सोचा। कबाब पर से जाने के बाद वासिली इवानिच थोड़ी देर के लिये गायब हो गया और डाट खुली हुई शेम्पेन की आधी बोतल लिए हुए लौटा। "देखो," उसने ऊँची आवाज में कहा, "हालांकि हम सुदूर देहात में रहते हैं फिर भी त्यौहारों के मौकों पर आनन्द मनाने के लिए कुछ न कुछ रखते ही हैं।" उसने तीन टोंटीदार ग्लासों एवं एक शराब के ग्लास में शराब डाली और अपने आदरणीय मेहमानों का स्वास्थ्यपान करते हुए फौजी ढङ्ग से एक ही घूंट में अपना ग्लास खाली कर दिया और एरीना व्लासीएव्ना को अपने ग्लास की आखिरी बूँद तक पीने के लिए मजबूर कर दिया। जब सूखे फलों का नम्बर आया तो आरकेडी ने, जिसे मीठी चीजों से विशेष रुचि नहीं थी, केवल चार प्रकार की मिठाईयों तक ही अपने को सीमित रखा जो ताजी पकाई गईं थीं। विशेषकर जब कि बजारोव ने उन्हें खाने से एकदम इन्कार कर दिया था और एक चुरुट जलाई। फिर मलाई, मक्खन और केक के साथ चाय आई जिसे पीने के बाद वासिली इवानिच ने सन्ध्या के सौन्दर्य का आनन्द उठाने के लिये सब को बाग में बुलाया। जब वे एक बेंच के पास होकर गुजर रहे थे उसने आरकेडी से फुसफुसाते हुए कहा— "इस स्थान पर अस्त होते हुए सूर्य को देख कर मेरे मन में दार्शनिक भावनायें उठती हैं जो मुझ जैसे एकान्तवासी व्यक्ति के लिये बिल्कुल उचित कार्य है। और वहाँ, इससे आगे मैंने कुछ होरेस के प्रिय वृक्ष लगाये हैं।"

"किस तरह के पेड़?" बजारोव ने पूछा जो बैठा हुआ सुन रहा था।

"क्यों, यही बबूल के।"

बजारोव जम्हाई लेने लगा।

"मैं आशा करता हूँ कि अब हमारे यात्री निद्रादेवी की गोद में जाना चाहेंगे," वासिली इवानिच ने कहा।

"दूसरे शब्दों में, भीतर जाने का समय हो गया!" बजारोव बीच में ही बोल उठा " अच्छा इरादा है। वास्तव में अब समय हो गया।"

उसने रात्रि का नमस्कार करने के लिए माँ को माथे पर चूमा जबकि माँ ने उसका आलिंगन किया और चुपचाप उसके पीठ मोड़ते ही 'क्रास'का निशान बनाते हुए उसे आशीर्वाद दिया। वासिली इवानिच आरकेडी को उसके कमरे तक छोड़ने गया और कामना प्रकट की कि "तुम्हें ऐसी ही नींद आवे जैसी कि मैं सोया करता था जबकि मेरी उमर तुम्हारी ही तरह सुखद थी।" वास्तव में आरकेडी अपने स्नानघर से लगे हुए कमरे में गहरी नींद सोया। वह स्थान पुदीने की सुगन्ध से भर रहा था और अंगीठी के पीछे दो टिड्डे नींद लाने वाली झंकार उत्पन्न कर रहे थे। वासिली इवानिच लौट कर अपने अध्ययन-कक्ष में आया जहाँ अपने बेटे के पैरों के पास उससे बातचीत करने के इरादे से सोफे पर बैठ गया। परन्तु बजारोव ने फौरन ही उसे चले जाने को कहा क्योंकि वह सोना चाहता था यद्यपि वह असलियत में दिन निकलने तक जगता ही रहा। वह गुस्से से पूरी आँखें खोले अन्धेरे में ताकता रहा। बाल्यकाल की स्मृतियों के प्रति उसे कोई आकर्षण नहीं था और साथ ही वह अभी अपने ताजे अनुभवों की दुखद स्मृति से छुटकारा नहीं पा सका था। एरीना ब्लासीएव्ना पूर्ण हृदय से प्रार्थना करने के उपरान्त अनीफशुश्का के साथ बहुत देर तक बातें करती रही जिसने एक मूर्ति की तरह अपनी मालकिन के सामने खड़ी हुई, अपनी एकाकी आँख से उसकी तरफ गौर से देखते हुए रहस्यपूर्ण फुसफुसाहट में उसे इवजिनो वासिलीएविच के बारे में अपने सारे विचार और रुचियों का वर्णन सुनाया। खुशी, शराब और सिगार के धुएं से बुढ़िया का सिर भन्ना उठा। उसके स्वामी ने उससे बात करने की कोशिश की परन्तु असम्भव समझ कर चुप हो रहा।

एरीना व्लासीएव्ना पुराने जमाने की रूसी औरतों की सच्ची प्रतीक थी। उसे तो दो सौ वर्ष पहले पैदा होना चाहिए था-जिस समय मास्कोवाइट राजवंश का बोलबाला था। वह अत्यन्त पवित्र और शीघ्र ही प्रभावित हो जाने वाली महिला थी जो सब तरह के अन्ध विश्वासों भविष्य वाणियों, जादू टोनों और स्वप्न-विचारों में आस्था रखती थी। इसके अतिरिक्त मूर्खता से भरे हुए उत्साह पूर्ण कार्यों,घरेलू भूत पिशाचों, अपशकुनों, अशुभ प्रभावों, देहाती दवाइयों, बृहस्पति के दिन मंत्र से अभिषिक्त नमक के प्रयोग और इस सृष्टि के शीघ्र ही विलय हो जाने में विश्वास रखती थी। इसके अतिरिक्त उसका यह भी विश्वास था कि अगर ईस्टर के इतवार को गिरजे में जलने वाली मोमबत्ती नहीं बुझेगी तो मोठी की बड़ी अच्छी फसल होगी और यह कि अगर मनुष्य की दृष्टि पड़ जायगी तो कुक्कुरमुत्ता का उगना बन्द हो जायगा। उसका यह भी विश्वास था जलाशयों पर शैतान का फेरा लगता है और यह कि प्रत्येक यहूदी के सीने पर खून का दाग होता है। उसे चूहों, घास के साँपों, मेंढ़कों, चिड़ियों, जोंकों, बिजली, ठंडा पानी, पाला, घोड़ों, बकरियों, लाल सिर वाले मनुष्यों और काली बिल्लियों से बड़ा डर लगता था। वह टिड्डों और कुत्तों को गन्दा प्राणी मानती थी। वह न तो बछड़े का मांस खाती थी और न कबूतर का। इनके अतिरिक्त वह केंकड़ा, जंगली सेब, पनीर, अगस्त्य, चुकन्दर, खरगोश, तरबूज आदि भी नहीं खाती थी क्योंकि कटा हुआ तरबूज उसे बैपटिष्ट जौन के कटे हुए सिर की याद दिलाता था। घोंघों की बात तो वह बिना फुरफुरी लिये कर ही नहीं सकती थी। वह अच्छे खाने की शौकीन थी और त्यौहारों को बड़ी कट्टरता पूर्वक मनाती थी। वह प्रतिदिन दस घन्टे सोती थी और अगर वासिली इवानिच के सिर में दर्द होता तो उसकी नींद हराम हो जाती थी। उसने 'अलेक्सिस' या 'ए केबिन इन दी वुडस' के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं पढ़ा था। साल में एक या अधिक से अधिक दो खत लिखती। घर- गृहस्थी के मामलों, दवा-दारू करने, अचार डालने और उनकी देख-भाल करने में वह सिद्ध-

हस्त थी यद्यपि उसने अपने हाथ से कभी भी कोई काम नहीं किया था और प्रायः अपने शरीर को कष्ट देने के विचार मात्र से सिहर उठती थी। एरीना व्लासीएव्ना बड़ी कोमल हृदय की थी और अपनी समझ के अनुसार उसमें मूर्खता का लवलेश भी नहीं था। वह जानती थी कि इस संसार में शासक वर्ग के लोग हैं जिनका काम शासन करना है और साधारण मनुष्य हैं जिनका काम आज्ञा पालन करना है इसलिए वह चापलूसी और सम्मान-प्रदर्शन को विना किसी हिचक के स्वीकार कर लेती थी। वह दयालु और उदार थी विशेष रूप से अपने आश्रितों के प्रति। उसने बिना भीख दिए किसी भी भिखारी को नहीं लौटाया था और न कभी लोगों की बातचीत पर बन्धन लगाया था हालांकि कभी कभी गप सप करने की वह भी शौकीन थी। अपनी युवावस्था में वह अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक थी। वीणा बजाती थी और थोड़ी बहुत 'फ्रेंच' बोल लेती थी परन्तु अपने पति के साथ विदेश यात्रा में व्यतीत किए हुए वर्षों में, जिसके साथ उसे अपनी मर्जी के खिलाफ शादी करनी पड़ी थी, वह मोटी होचली थी और फ्रेंच और संगीत दोनों ही भूल गई थी। वह अपने बेटे को इतना प्यार करती, और उससे इतनी डरती थी कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जायदाद की देख भाल उसने वासिली इवानिच पर छोड़ रखी थी और उस मामले में कभी भी अपना सिर नहीं खपाती थी। जब कभी उसका बुड्ढा स्वामी उसके सामने होने वाले सुधारों और अपने कार्य-क्रम की बात चलाता तो वह केवल दुख से कराह उठती और रूमाल हिलाकर उसे बोलने से रोकने की कोशिश करती। काल्पनिक भयों से वह सदैव पीड़ित रहती। हमेशा किसी बड़े संकट को आशंका करती रहती। और किसी भी बुरी बात को सुनकर फौरन आँसू बहाने लगती··· आजकल ऐसी औरतें बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। भगवान ही जानता है कि इस बात से हमें खुश होना चाहिये या दुःखी।

२१

बिस्तर से उठ कर आरकेडी ने खिड़की खोली और जिस पर उसकी पहली नजर पड़ी वह वासिली इवानिच था। वह बुखारा फैशन का ड्रेसिंग गाउन पहने हुए जिस पर उसने एक बड़े रूमाल से कमर पेटी बांध रखी थी, बाग में बागवानी कर रहा था। अपने युवक अभ्यागत को देखकर अपने फावड़े का सहारा लेकर खड़े होते हुए वह जोर से चिल्लाया।

"गुड मॉर्निंग, साहब, अच्छी नींद आई?"

"खूब," आरकेडी ने जवाब दिया।

"अच्छा, और मैं यहाँ हूँ, जैसा कि आप देख रहे हैं। भूत की तरह काम करते हुए। मैं शलजम के लिए एक टुकड़ा साफ कर रहा हूँ। अब ऐसा समय आ गया है—और मैं तो इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ जबकि हरेक व्यक्ति को अपने हाथों से अपनी जीविका पैदा करनी चाहिये। दूसरों पर निर्भर रहने से कोई लाभ नहीं। मनुष्य को स्वयं ही कार्य करना चाहिये। और इसीलिए जीन जेकस रूसो ने ठीक ही कहा था-ऐसा प्रतीत होता है। आधा घन्टे पहले महाशय,—आप मुझे एक नितान्त भिन्न स्थिति में देखते। एक किसान स्त्री जो पेचिश की शिकायत लेकर आई थी—जिसे कि हम संग्रहणी कहते हैं,—मैं इसे अच्छी तरह कैसे कहूँ—अफीम का इंजेक्शन लगाया था और मैंने एक दूसरी औरत का दाँत उखाड़ा था। मैंने दूसरी औरत से दवा लगवाने के लिए कहा परन्तु उसने इन्कार कर दिया। यह सब मैं मुफ्त में ही करता हूँ—शौकिया तौर पर। मेरे लिए यह नई बात नहीं है क्योंकि मैं सामान्य व्यक्ति हूँ। अपनी स्त्री की तरह मैं कुलीन घराने का तो हूँ नहीं। क्या आप यहाँ आकर नाश्ते से पहले, छाया में बैठ कर ताजी हवा का सेवन पसन्द नहीं करेंगे?"

आरकेडी उसके पास बाहर चला गया।

"एक बार पुनः स्वागत", वासिली इवानिच ने तेल से चीकट बनी हुई अपनी पुरानी टोपी को फौजी ढङ्ग से छूते हुए नमस्कार किया।

फादर अलेक्सी एक सुगठित शरीर वाला आकर्षक व्यक्ति था जिसके घने बाल अच्छी तरह संवारे हुए थे और बैंगनी रङ्ग के रेशमी लबादे पर कढ़ा हुआ कमरबन्द बंधा हुआ था। वह बड़ा चतुर और हाजिरजवाब मालूम पड़ता था। उसने पहले जल्दी से आरकेडी और बजारोव से हाथ मिलाया मानो उसे इस बात का पहले ही से आभास था कि उन्हें उसके आशीर्वाद की जरूरत नहीं है फिर भी उसने अपने को सम्हाल लिया। वह गम्भीर बना रहा और किसी भी बात का बुरा नहीं माना। वह स्कूली लैटिन की बात पर खूब प्रसन्नता से हँसा और बड़े पादरी की स्वास्थ्य कामना के लिए उठ खड़ा हुआ। उसने शराब के दो ग्लास पिए और तीसरा पीने से इन्कार कर दिया। आरकेडी की दी हुई एक सिगार स्वीकार कर ली परन्तु यह कहते हुए सुलगाई नहीं कि वह इसे घर ले जायगा। उसकी सबसे खराब आदत यह थी कि उन मक्खियों को पकड़ने के लिए, जो उसके मुँह पर आ बैठती थीं, धीरे से हाथ उठाता था और कभी कभी उन्हें मसल देता था। वह हरी सतह वाली मेज पर अत्यन्त विनम्रता पूर्ण प्रसन्नता के साथ बैठा और बजारोव से दो रूबल और पचास कोपेक के नोट जीत कर हटा। एरीना व्लासीएव्ना के घर में कोई भी चांदी के सिक्के गिनना नहीं जानता था। माँ हमेशा की तरह अपने बेटे की बगल में बैठी थी (वह ताश नहीं खेलती थी।) उसका मुँह हथेली पर टिका हुआ था। वह सिर्फ कोई नई खाने की चीज लाने की आज्ञा देने के लिए ही उठती थी। वह बजारोव के सिर पर हाथ फेरने में डर रही थी और बजारोव ने भी उसे इसके लिए उत्साहित नहीं किया और न इसका मौका दिया। इसके अतिरिक्त वासिली इवानिच ने उसे बजारोव को तंग न करने की चेतावनी दे रखी थी। "नौजवान इसे पसन्द नहीं करते," उसने कहा था (उस दिन दी गई दावत का विवरण देने की कोई जरूरत नहीं है। टिमोफिच दिन निकलते ही एक विशेष प्रकार का गोश्त लेने के लिए घोड़े पर शहर दौड़ गया था। और अमीन दूसरी तरफ केंकड़े और मछली लेने गया था। कुक्कुरमुत्तों के लिये केवल बेचने वाली किसान स्त्रियों को ही तांबे